गौरवशाली
अग्रवाल समाज

ऐतिहासिक परिदृश्य

अशोक कुमार गुप्ता

गौरवशाली अग्रवाल समाज

ऐतिहासिक परिदृश्य

लेखक

अशोक कुमार गुप्ता

एम.कॉम, एम. ए.(हिंदी), बी. एड.

पूर्व अध्यापक व वरिष्ठ अनुवादक

प्रकाशक -

अशोक कुमार गुप्ता एवं

अग्रवाल समाज, प्रताप नगर, जोधपुर

गौरवशाली अग्रवाल समाज

ऐतिहासिक परिदृश्य

लेखक : अशोक कुमार गुप्ता

E-mail:agupta.shant@gmail.com

सर्वाधिकार : अशोक कुमार गुप्ता

प्रथम संस्करण : सितम्बर 2016

सहयोग राशि : 200/- रूपये मात्र

प्रकाशक :

अशोककुमार गुप्ता एवं

अग्रवाल समाज, प्रताप नगर, जोधपुर

प्राप्ति स्थान :

2-ब-15, प्रतापनगर, जोधपुर, (राजस्थान) 342003

मोबाइल : 094606 49764

मुद्रक :

आशी डिजाइनर्स, जोधपुर

फोन 0291-2620382

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
प्रस्तावना	08
प्राक्कथन	12
लेखक की कलम से	14
संपादकीय	16
स्वर्ण लिखा इतिहास है	18
शुभकामना संदेश	19
अग्रवाल समाज के पितामह, पितृभूमि व समाज पर आधारित संक्षिप्त जानकारी	21
अग्रोहा	23
अग्रोहा में दर्शनीय स्थल	25
अग्रवाल	27
ये इतिहास है अग्रवालों का	29
महाराज बहादुर	30
राजा बहादुर	30
रायबहादुर	33
राय साहब की पदवी से सम्मानित अग्रवाल विभूतियां	43
सर (नाइट हुड)	46
केसरे हिंद	48
धार्मिक जगत की अग्र विभूतियां	49
आर्य समाजी अग्र विभूतियां	61
अन्य धार्मिक विभूतियां और धर्म प्रचारक	64
अग्र कथा वाक व नाटककार	69

विषय	पृष्ठ सं.
भजन गायक	69
अगवाल समाज द्वारा स्थापित पुरस्कार	72
कला संग्रहालय	82
चित्रकला के क्षेत्र में योगदान	85
अग्रवाल इतिहास के गौरवपूर्ण निर्माता	90
फिल्म अभिनेत्री–अभिनेता एवं टी.वी. कलाकार	102
निर्माता, निर्देशक, कहानीकार, संगीतकार	113
गायक कलाकार	123
अर्जुन पुरस्कार–द्रोणाचार्य आदि पुरस्कृत अग्र विभूतियां	127
भारतीय खेलों में अग्रणी व्यक्ति	142
गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स	145
गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स	150
लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में अग्रबंधु	150
इंडियन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस् में अग्रबंधु	160
अग्र बंधुओं द्वारा अर्जित अन्य उपलब्धियां	166
भारत में बैंकिंग व्यवसाय की स्थापना में अग्रबंधुओं का योगदान	172
संविधान सभा के अग्रबंधु सदस्य	174
विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति व कुलपति अग्रबंधु	175
अग्रबंधु : मुख्य मंत्री एवं राज्यपाल	178
अग्रवाल गौरव – बाबू मुकुन्दास गुप्त प्रभाकर, ऋषि लाल अग्रवाल, लाला श्रीनिवास दास, बाबू गोपाल चंद्र, काका हाथरसी, आचार्य डा. रघुवीर, श्री रामरिख	

विषय	पृष्ठ सं.
मनहर	181
कुछ बात है – हस्ती मिटती नहीं हमारी	191
अग्रवाल समाज की विभूतियों पर भारत सरकार द्वारा प्रकाशित डाक टिकट	197
अगवाल समाज की अलंकृत विभूतियां	200
कुछ अन्य राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त अग्रबंधु	206
राज्य सभा सांसद – अग्रबंधु	211
लोक सभा सांसद – अग्रबंधु	215
अग्रसेन – अग्रोहा – अग्रवाल पर प्रकाशित साहित्य	219
काव्य रूप में अग्रसेन–अग्रोहा–अग्रवाल महिमा गान	229
प्रेरणा स्रोत अग्र विभूतियां	233
विविध... अन्य विधाओं में लिखी गईं पुस्तकें	236
विशेष जानकारी	239
भ्रांति निवारण हेतु महत्वपूर्ण जानकारी	241
लेखक परिचय	246

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक विद्वान लेखक श्री अशोक कुमार गुप्ता द्वारा लिखित एक विशद **शोध ग्रंथ** है। इस ग्रंथ की रचना के लिए उन्होंने निरंतर एवं अथक श्रम किया है। उनकी वर्षों की साधना का प्रत्यक्ष अमृत–फल है यह ग्रंथ। **अमृत-फल** इसलिए कि यह ग्रंथ समाज के अपने अस्तित्व का **अमृत पान** कराने का उसमें जागृति लाने का तथा उसे उसके वास्तविक गौरव का भान करा उसे संगठित एवं सक्रिय रहने हेतु प्रेरित कर पाएगा। ऐसा मेरा विचार अथवा सोच मात्र नहीं अपितु दृढ़ विश्वास है। लेखक ने अग्रवालों के पितामह महाराजा अग्रसेन से वर्तमान काल तक के समाज का लेखा–जोखा संकलित कर प्रस्तुत ग्रंथ में संजोने का अत्यंत श्रम साध्य कार्य किया है जो प्रशंसनीय ही नहीं अपितु स्तुत्य है।

महालक्ष्मी व्रत कथा के आधार पर अग्रवंश के प्रथम पुरूष महाराज अग्र थे जो त्रेता युग में राजा हरिशचंद्र से पूर्व कालीन थे किंतु महालक्ष्मी व्रत कथा के आधे अधूरे ग्रंथ के अतिरिक्त अन्य कोई पुख्ता प्रमाण उपलब्ध नहीं होने से इसकी प्रमाणिकता सिद्ध कर पाने में कठिनाईयां आ रही हैं किंतु '' अग्रोपाख्यानम् '' हस्तलिखित पुरा ग्रंथ उपलब्ध हो जाने के पश्चात् महाराज अग्रसेन की प्रमाणिकता स्वंय ही सिद्ध हो चुकी है। वैसे भी यह सत्य है कि इतिहास तो तथ्यों के आधार पर लिखा जाता है। कल्पनाओं के लिए इतिहास व तथ्यात्मक लेखन में कोई स्थान नहीं है। श्री अशोक जी ने अग्रोहा, अग्रसेन, अग्रवंश तथा समाज व सामाजिक उपलब्धियों का तथ्यात्मक लेखा–जोखा अपने ग्रंथ में प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत ग्रंथ में लेखक का ध्येय केवल इतिहास को प्रस्तुत करना नहीं है इसलिए उन्होंने ग्रंथ के प्रारंभ में ही प्रथम अध्याय में पितामह, पितृभूमि व समाज पर आधारित संक्षिप्त जानकारी भर देकर

कर यह कार्य इतिहासविदों के लिये ही छोड़ दिया है। उन्होंने संपूर्ण ध्यान आधुनिक युग में अग्रवंश द्वारा अर्जित उपलब्धियों पर केंद्रित रखा है। **केवल इतिहास एवं पुरास्मृतियों के सहारे ही जीवन व्यतीत तो किया जा सकता है किंतु जिया नहीं जा सकता। इसके लिए सतत् संघर्ष, प्रयास एवं पुरुषार्थ की महती आवश्यकता होती है, जो कर्मशील जीवन में संभव हो सकती है, अकर्मयण्ता तो अंत है जीवन का।** अग्रवंश का यही सत्य प्रतिपादित करने का प्रयास किया है विद्वान लेखक ने अपने प्रस्तुत सत्य–तथ्य परक अनुसंधान ग्रंथ में। अपने इस सार्थक प्रयास में वे सफल रहे हैं ऐसा मेरा मानना है और इसे पढ़ने के उपरांत पाठकगण भी इसे स्वीकार करेंगे कि अग्रवंश की इसी सनातन परंपरा को उन्होंने जीवंत रखा है।

कितने–कितने आयाम हैं मानव जीवन के। उन सबको संजोना सहज नहीं होता। अशोक जी ने उन्हें संजोने का साहसिक प्रयास किया है। पुरातत्व, इतिहास, धर्म, समाज, खेल, कला, वाणिज्य नीति–राजनीति, राष्ट्रीय– अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन–प्रस्तुतियां, उपलब्धियां सबका ही हिसाब रखने, सबको सहेजने–समेटने का अद्भुत सराहनीय एवं श्लाघनीय कार्य किया तो एक नव कीर्तिमान स्थापित कर दिखाया है लेखक ने। शासन–प्रशासन से उद्योग–व्यवसाय, साहित्य सृजन, शिक्षण–प्रशिक्षण, समस्त क्षेत्रों पर अपनी पारखी दृष्टि ''काक् चेष्ट, बक ध्यायी'' की भांति केंद्रित कर बीन–बीन कर माणिक्य–मुक्ताओं का संग्रह किया है।

स्पर्धाएं–प्रतियोगिताएं तो पुरातन युगों में होती ही रही होंगी किंतु हमारे देश में इनके संकलन–विवरणात्मक संकलन की परंपरा कदाचित नहीं रही होगी फलतः प्राचीन काल के ऐसे अभिलेखात्मक विवरण उपलब्ध नहीं होते हैं। अंग्रेजों के भारतवर्ष में आगमन के पश्चात् ऐसे अभिलेख रखने की परंपरा बनी होगी जो यत्र–तत्र उपलब्ध हो रही है। ऐसी उपलब्धियों के अभिलेखों के आधार पर लेखक ने अपने इस ग्रंथ में अग्रवालों की उपलब्धियों का कीर्तिमान

स्थापित किया है। इस प्रकार की अगणित उपलब्धियां अग्रवंशियों के खाते में तत् समय से आज तक अंकित होती रही हैं जो गिनाया जा सकना संभव तो नहीं है फिर भी लेखक ने इस असंभव को संभव कर सकने का साहस किया है। अंग्रेजों के जमाने से दी जाने वाली उपाधियों से लेकर आज के युग में भारत सरकार, राज्य सरकारों, विभिन्न संस्थाओं, संगठनों द्वारा दी जाने वाली उपाधियों, अलंकरणों तथा राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय एवं विश्व कीर्तिमानों का वर्णन, संविधान सभा, राज्य सभा आदि में भागीदारी सहित अग्रवंशियों के योगदान के संबंध में तथयपूर्ण जानकारी एकत्रित कर एक–एक मनके की भांति पिरोकर माला गूंथना कितना दुष्कर कार्य रहा होगा, इस कल्पनातीत असाध्य को साधकर साकार स्वरूप में प्रस्तुत कर दिखाया है इन्होंने।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। ऐसे ही उत्साही कर्मठ और ऊर्जावान अग्रबंधु ही हैं जो अतीत से आज तक समाज की इस सदाबहार हस्ती को साधे हुए हैं तथा भविष्य में भी अनंत काल तक साधे रखेंगे। लेखक ने ऐसे ही अनेक गौरवान्वित बंधुओं का परिचय समाज को कराया है। आज की पीढ़ी के लोग इनके नाम से भी परिचित कदाचित् नहीं होंगे आने वाली पीढ़ी से तो अपेक्षा ही क्या हो सकती है। लेखक ने उनके लिए एक सुलभ गौरव पथ तैयार किया है। भारत सरकार द्वारा किसी व्यक्ति विशेष पर डाक टिकट जारी करने के अपने मानक हैं जो बहुत ही गहन विश्लेषण के उपरांत तय किये जाते हैं। अग्रवंश के 28 व्यक्तियों के नाम पर अब तक डाक टिकट जारी किये गये हैं जो किसी कीर्तिमान से कम नहीं हैं। इन सब के संबंध में विवरण संकलित ग्रंथ में दिया गया है जो अग्रवालों को अपने गौरव को जानने–समझने का अवसर प्रदान करेगा।

सामान्यतः यह भावना सर्वत्र व्याप्त है कि अग्रवंश के संबंध में प्रमाणिक जानकारी परक साहित्य का अभाव है। यही कारण है कि अग्रवंश के आदि काल एवं उसके जनक या यों कहें प्रथम पुरूष के संबंध में भ्रांति व्याप्त है। इसके पीछे अग्रवंशियों की स्वंय की

अनभिज्ञता ही मूल कारण है। उन्हें इस तथ्य से अवगत कराने के लिए प्रस्तुत ग्रंथ में अब तक प्रकाशित अग्र साहित्य की लंबी सूची दी गई है साथ ही उनके प्रकाशन तथा उपलब्धियों के स्थान की सूचना दी गई है जहां से उन्हें प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा करके लेखक ने समस्त अग्रवंशियों को स्वंय अपने संबंध में जानने–समझने का अनुपम अवसर सुलभ कराया है।

अंततः मैं यह कहने में तनिक भी संकोच अथवा अतिश्योक्ति नहीं समझता कि श्री अशोक जी ने अपनी श्रम, लगन एवं निष्ठा से अपनी सर्वस्व क्षमता का उपयोग कर यह अनमोल ग्रंथ तैयार किया है जो समाज के लिए एक सनातन धरोहर है। यह ग्रंथ प्रत्येक अग्रवंशी के लिए मार्गदर्शी प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य करेगा। लेखक ने तो अपना कार्य कर दिया। आपके लिए लिख दिया, आपको दे दिया और कह दिया कि इसमें मेरा कुछ नहीं है।

उन्होंने कह दिया, हमने सुन लिया-पढ़ लिया। अब मानें भी। इसलिए बंधुओं! अपनी विरासत जानिये, वैश्य अग्रवाल जाति के इतिहास को पढ़िये और समाज की उन्नति के लिये अपने सिर को गर्व से ऊंचा करके चलिये। कोई भी व्यक्ति जो पूर्ण विश्व को जानने का दावा करता है, भले ही वह परमात्मा को जानने का दावा करता है किंतु जब तक वह ''अपना इतिहास नहीं जानता वह अंधकार में रहता है।'' इसलिए है अग्रबंधुओं ! उठो। जागो। स्वयं अपने बारे में जानों। अपने इतिहास के बारे में जानों और अंधकार का परित्याग कर प्रकाश की ओर चलो - ''तमसो मा ज्योतिर्गमय।''

जय श्री अग्र। जय श्री अग्रसेन।

ओम प्रकाश गर्ग 'मधुप'
वरिष्ठ अग्रविद्वान एवं प्रसिद्ध साहित्यकार
बाड़मेर (राजस्थान)

प्राक्कथन...

भवन निर्माण और साहित्य की रचना दो कार्य हैं। इनमें कौनसा आसान और महत्वपूर्ण है ? वैश्य अग्रवाल समाज की अनेक संस्थाएं और संगठन हैं। वे परोपकार के लिए धर्मशाला, विद्यालय, वृद्धाश्रम, अस्पताल आदि स्थापित करते हैं, ये निर्माण कहलाते हैं। इस जनहित कार्य में समाज के व्यक्तियों से सहयोग मिलता है। ऐसी अनेक संस्थाएं चल रही हैं। दूसरी और साहित्य सृजन का काम है। वैश्य अग्रवाल समाज करोड़ों परिवारों वाला है। ऐसे समाज में **अग्र-साहित्य** नहीं के बराबर ही है । इसी कारण से नई पुस्तकों का प्रकाशन नगण्य है। साहित्य किसी देश, प्रदेश और समाज का बहुमूल्य खजाना होता है। यह उसमें रहने वालों का पथ प्रदर्शक और प्रेरणा का स्त्रोत होता है। इसी कारण शत्रु पक्ष के लोग विजित देश के पुस्तकालय को आग लगा देते थे अथवा साथ ले जाते थे।

हीरा और मोती दो बहुमूल्य वस्तुएं हैं ये सोने के बने आभूषणों में क्रांति बढ़ाते हैं परंतु इन दोनों को प्राप्त करने की प्रक्रिया बड़ी ही श्रम साध्य और जटिल होती है। हीरा पत्थरों से मिलता है, कितने ही टनों पत्थरों को तोड़ा जाता है। बहुत समय लग जाता है तब जाकर कभी हीरा प्राप्त होता है। पत्थर तोड़ने वाले कैसे–कैसे वातावरण को सहन करते हैं और किस प्रकार अपनी भूख मिटाते हैं, यह कल्पना का विषय है। मोती समुद्र में पाई जाने वाली सीपियों से प्राप्त होता है। गोताखोर कितनी ही बार समुद्र के तल तक जाता है पीठ पर सीपियां लादकर लाता है। जब उन सीपियों में कुछ भी प्राप्त नहीं होता है तब उसको कितनी निराशा होती है उसका अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है।

श्री अशोक कुमार गुप्ता द्वारा रचित पुस्तक आपके हाथों में है। ऊपर दी हुई परिस्थितियों का इस पुस्तक के लेखक ने अवश्य सामना

किया है। वैश्य अग्रवाल समाज के परिवार देश के प्रत्येक क्षेत्र में रह रहे हैं । उनका प्रमुख काम धंधा व्यापार और उद्योग है। इनके साथ इसी समाज के अनेक व्यक्तियों ने विज्ञान, शिक्षा, शासन, राजनीति, चिकित्सा, कृषि, कला, पुरातत्व, मुद्रा विशेषज्ञ, मिडिया, खेल, फिल्मों आदि के क्षेत्र में भी निपुणता प्राप्त की है परंतु उनके बारे में समाज के व्यक्तियों को जानकारियां नहीं है। एक समय के बाद उनका कौशल और विशेषता अंधकार के गर्त में समा जाते हैं।

इन व्यक्तियों की खोज करना और पुस्तक में स्थान देने का कार्य हीरा और मोती की भांति प्राप्त करने में किये गये श्रम के समान है।

श्री अशोक कुमार गुप्ता ने उस क्षेत्र में कार्य किया है जिसमें वैश्य अग्रवाल समाज के व्यक्ति कोई प्रयास भी नहीं करते जैसे कि ऊपर पहले पैरे में बताया गया है। समय अवश्य करवट लेता है। इस युग के किए कोष निर्माण करना एक पवित्र कार्य है और समय की आवश्यकता भी है। **कभी कोई विद्यार्थी वैश्य अग्रवाल समाज पर शोध का कार्य हाथ में लेगा तो यह पुस्तक उसके लिए प्रथम सोपान सिद्ध होगी**। श्री गुप्ता ने इस प्रकार बहुमूल्य कार्य किया है। यह पुस्तक अभी तक प्रकाशित अग्रसाहित्य में अपना विशेष स्थान लेगी इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है।

श्री अशोक कुमार गुप्ता का यह लेखन प्रशंसनीय है। यह भावी पीढ़ी के लिए अवश्यक उपयोगी होगा। इसकी सफलता के लिए लेखक को शुभकामनाएं व बधाई देता हूं।

सूबेसिंह गुप्ता
संपादक व प्रकाशक
पंचमधाम मासिक पत्रिका
एवं वरिष्ठ अग्र साहित्यकार व लेखक
सेठ द्वारका प्रसाद सर्राफ पुरस्कार से सम्मानित

लेखक की कलम से...

जो व्यक्ति व समाज अपना इतिहास नहीं जानता वह अंधकार में रहता है। गौरवशाली इतिहास सकारात्मक प्रेरणा एवं आदर्श का स्त्रोत होता है। यह सत्य है कि अग्रवाल समाज का इतिहास वीरता, त्याग और बलिदान से भरा हुआ है। इस जाति का इतिहास स्वर्णिम है। भारत के इतिहास के किसी भी काल को देखें तो वहां वैश्य सदा आगे की पंक्ति में ही मिलेगा। इस समाज के व्यक्तियों को राजाओं – महाराजाओं से भी पहला स्थान मिला। धर्मशालाएं, अनाथालय, विद्यालय, मंदिर, गौशालाएं, प्राकृतिक आपदा में सहयोग, निशुल्क भोजन व्यवस्था आदि सभी इस जाति की दानशीलता एवं परोपकारिता की कहानी कहते हुए नहीं थकते। हमारा अतीत गौरवमयी रहा है। हमारे पूर्वजों के बलिदान व उनके कार्य अमर हैं। हमारे लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए भी ये प्रेरणादायक हैं। **प्रतिभाएं दुर्लभ होती हैं और उनके योगदान को विशेष रुप से याद किया जाना चाहिए**।

बधुओं, अपनी विरासत जानिए, वैश्य अग्रवाल जाति के इतिहास को पढ़िये और समाज की उन्नति के लिए अपने सिर को गर्व से ऊंचा करके चलिए। मेरी तो यह काफी महीनों की मेहनत है। 30–35 वर्षों से अग्रवाल समाज पर सामग्री एकत्र करने और उसे संजोकर रखने में काफी मेहनत करनी पड़ी। अनेक बार पत्राचार के माध्यम से और संपर्क करने के प्रतिफल स्वरूप यह सामग्री एकत्रित की गई। कठिनाईयां भी आईं। गौरवमयी अग्रवाल समाज का इतिहास अत्यधिक व्यापक है और इसे सीमित पृष्ठों में समाहित करना व एक पुस्तक का आकर देना अत्यंत कठिन है।

इसमें मेरा कुछ नहीं है केवल रात दिन की मेहनत और लेखन कार्य है। इस गौरवपूर्ण सामग्री को अनेक पुरानी व नवीन पत्र – पत्रिकाओं, नेट व कुछ पुस्तकों से एकत्रित कर समाज तक पहुंचाने का

प्रयास किया गया है ताकि इसे पढ़कर गर्व महसूस हो और समाज का कार्य करने, उसे उन्नतिशील बनाने व एकता स्थापित करने में यह सहायक हो।

मेरे प्रेरणास्त्रोत अग्रसाहित्यकार डा. चंपालाल जी गुप्त का मैं हृदय से स्मरण कर आभार प्रकट करता हूं कि आपकी प्रेरणा ने मुझे इस मार्ग पर चलने और समाज सेवा करने में अग्रसर किया। आपने साहित्य के माध्यम से जो सेवा समाज के लिए की है वे अमर हैं। अनेक अग्रसाहित्यकारों के मैंने दर्शन किए हैं, यह मेरा सौभाग्य रहा। मैं सभी अग्रसाहित्यकारों को नमन करते हुए उनका आभार व्यक्त करता हूं।

जीवन की यादों को ताजा करते हुए इस पुस्तक को मैं मेरे पिताजी स्व. श्री रामकुमार जी गुप्ता, व बहन स्व. श्रीमती विजय सिंघल को समर्पित करता हूं। समाज सेवा में हमेशा साथ निभाने वाली पत्नी **श्रीमती वीना गुप्ता** का हृदय से आभार कि उन्होंने हमेशा समाज सेवा में मेरा साथ दिया। **कलम चलाना** मेरा पेशा नहीं रहा। अतः कमी को पाठक सहज भाव से लेंगे, त्रुटि के लिए क्षमा। यह प्रयास अपने समाज की बिखरी हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने और जागृति लाने का द्योतक माना जा सकता है। वैसे अग्रोहा के तीर्थ रूप में विकसित होने पर समाज में अब साहित्य को जानने में रूचि बढ़ी है। पुस्तक प्रत्येक अग्रवाल परिवार में पहुंचे यह कामना है। पुस्तक प्रकाशन में अग्रवाल समाज – प्रताप नगर, जोधपुर व अन्य अग्र बंधुओं का योगदान मिला इसके लिए हृदय से आभार। पुस्तक को तैयार करवाने और उसके संपादन में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले भाई मोईनुद्दीन चिश्ती का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता। आपके सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

जय अग्रसेन-जय अग्रोहाधाम।

अशोक कुमार गुप्ता
लेखक, जोधपुर

संपादकीय

'**गौरवशाली अग्रवाल समाज - ऐतिहासिक परिदृश्य**' नामक पुस्तक को संपादन के पश्चात् आप सभी सुधि पाठकों को सौंपते हुए अत्यंत प्रसन्नता अनुभव हो रही है। पिछले एक साल से अशोकजी गुप्ता मुझसे इस पुस्तक को प्रकाशित करने और इसमें मेरा संपादकीय सहयोग लेने की बात करते आ रहे हैं। हम दोनों की कई व्यस्तताएं रहीं जिसके कारण यह पुस्तक पहले प्रकाशित नहीं हो पाई। अब यह पुस्तक छपकर आप सबके हाथों में हैं। अशोकजी ने अपनी वर्षों की मेहनत से यह सामग्री संकलन कर सहेजी है। उनकी जिज्ञासा और संग्रहण की प्रवृत्ति को आप नकार नहीं सकते। आपको उनके इस योगदान का लोहा तो मानना ही पड़ेगा।

दुनियाभर में फैले अग्रवाल बंधुओं के बारे में ए टू जेड जानकारियां रोचकता के साथ प्रस्तुत की गई हैं। उम्मीद है आपको पढ़कर अच्छा लगेगा। अग्रवाल समाज को देश की आर्थिक रीढ़ कहा जाता है, परंतु आपको यहां इस पुस्तक में अग्रवाल समाज की छोटी से छोटी हस्तियों से लेकर बड़ी से बड़ी और विराट हस्तियों के बारे में भी अनोखे फैक्ट्स एण्ड फिगर जानने को मिलेंगे।

मेरा और जोधपुर अग्रवाल समाज का रिश्ता यही कोई 12 से 15 साल पुराना है। जोधपुर की अग्रसेन रिलीफ सोसायटी के महेशजी गोयल से सर्वप्रथम जुड़ना हुआ। महेशजी ने ही कोई 10 साल पहले गुप्ताजी से परिचय करवाया। फिर महेशजी ने ही पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन के प्रांतीय महामंत्री महेन्द्र जालानी से मिलवाया। जालानीजी द्वारा प्रकाशित 'अग्र वंदन' नामक पत्रिका का मैंने सितम्बर

2012 से अप्रेल 2014 तक संपादन किया। समूचे अग्रवाल समाज ने इस पत्रिका के प्रस्तुतिकरण को मुक्त कंठ से सराहा।

भाई अशोकजी की पुस्तक में समाहित मेहनत को आप सराहेंगे, आपके सकारात्मक सहयोग से ही वह समाज को फिर से अपना कलमी योगदान देने के लिए ऊर्जा जुटा सकेंगे।

पुस्तक में गुप्ताजी के वर्षों के अनुसंधान के पश्चात् कई प्रकार की रोचक जानकारियां सम्मिलित की गई हैं, जिसे रोचकता के साथ प्रस्तुत करने की पूरी–पूरी कोशिश की गई है। फिर भी किसी प्रकार की त्रुटि अथवा भूल रह जाने पर अग्रिम क्षमायाचना। इस पुस्तक के प्रकाशन में गुप्ताजी के अलावा कई बंधुओं का सहयोग एवं मार्गदर्शन मिला। भविष्य में भी यह स्नेह इसी प्रकार बना रहेगा, इसी आशा के साथ आप सभी का अभिनंदन करता हूं, प्रणाम करता हूं।

Moinuddin Chishty

(मोईनुद्दीन चिश्ती)
संपादक

स्वर्ण लिखा इतिहास है....

अग्रवाल कहलाता हूं मैं, स्वर्ण लिखा इतिहास है ।
मेरी जाति के पुरखों ने , जग में किया प्रकाश है।।
जय जय अग्रसेन, जय जय अग्रसेन
अग्रसेन से राजा जिनसे देवराज तक कांपा था,
सत्रह बार सिकंदर को जिसके भुजबल ने नापा था,
जिसके कुल में मां लक्ष्मी का आठों पहर प्रकाश है ।।
मेरी जाति के पुरखों ने , जग में किया प्रकाश है।
देश भक्त पंजाब केसरी, लाला लाजपत राय जहाँ,
कवियों में सिरमौर हमारे, भारतेंदू सम और कहाँ ?
गंगाराम कर गये अपना लाखों का विश्वास है ।।
मेरी जाति के पुरखों ने , जग में किया प्रकाश है।
भारत रत्न भगवानदास को हम सब शीश झुकाते हैं,
शादीलाल सरीखे न्यायाधीशों के गुण गाते हैं,
कंवरसेन ने बाँध बनाकर झुका दिया आकाश है ।।
मेरी जाति के पुरखों ने , जग में किया प्रकाश है।
झुंनझनु वाला शिवचंद देखो, कॉटन किंग कहाता है,
गूजरमल जी सेठ हमारा, मोदी नगर बसाता है ,
जमनालाल बजाज जाति को जिससे कितनी आस है ।।
मेरी जाति के पुरखों ने , जग में किया प्रकाश है।
प्रागनारायण, नंदलाल को कोई कैसे भूलेगा,
राजा ललितप्रसाद याद कर ये समाज नित फूलेगा,
ऐसे ऐसे नर नाहर के हम चरणों के दास हैं ।।
मेरी जाति के पुरखों ने , जग में किया प्रकाश है।

स्व. त्रिलोक जी गोयल '' जीजा'', अजमेर

शुभकामना - संदेश

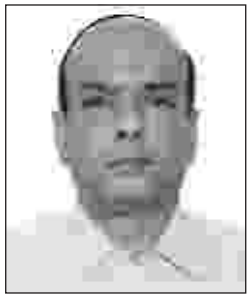

महाराजा अग्रसेन की संतानों की गौरवशाली यात्रा के स्वर्णिम पृष्ठों को बताने वाली इस पुस्तक के प्रकाशन पर कोटि–कोटि बधाई एवं शुभकामनाएं।

भारत को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए वैश्य अग्रवाल समाज का बहुत बड़ा योगदान है। इस जाति ने अनेक महान् विभूतियों को जन्म दिया है। स्वतंत्रता के आंदोलन में अग्रवाल जाति के अनेक अग्रबंधुओं ने अपना बलिदान दिया। मित्रों मेरा मानना है कि – **जो व्यक्ति अपने देश व समाज का इतिहास नहीं जानता, वह अंधकार में रहता है। इतिहास सकारात्मक प्रेरणा देता है। निःसंदेह अपने आप को जानने व इतिहास को जानने के लिए यह ग्रंथ काफी उपयोगी सिद्ध होगा ।**

समाज सेवी **श्री अशोक कुमार गुप्ता** लंबे समय से अग्रवाल समाज की निःस्वार्थ भावना से सेवा कर रहे हैं। इन्होंने काफी कुछ लिखा है । अनेक संस्थाओं ने इनका समय–समय पर सम्मान भी किया है। काफी मेहनत से लिखी गई यह इनकी पहली पुस्तक है। **बंधुओं - यह पुस्तक जीवन के क्षणों में मार्ग दर्शन करेगी और अवकाश के क्षणों में ज्ञानवर्धन। समाज की युवा पीढ़ी के लिए भी यह पुस्तक उनकी सफलता के मार्ग में उपयोगी सिद्ध होगी।**

पुनः अग्रवाल समाज के बंधुओं के लिए सर्वथा उपयोगी पुस्तक के प्रकाशन पर मेरी ओर से लेखक को व पाठकों को बधाई।

जय अग्रसेन–जय अग्रोहाधाम ।।

रमेश अग्रवाल (पेपर वाले)
वरिष्ठ समाज सेवी, जोधपुर

अग्रवाल समाज - प्रताप नगर, जोधपुर

शुभकामना संदेश

श्री अशोक कुमार गुप्ता की पुस्तक 'गौरवशाली अग्रवाल समाज - ऐतिहासिक परिदृश्य' के विमोचन पर कार्यकारिणी के सभी सदस्यों की ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं। हम इनकी दीर्घायु की कामना करते हैं।

-: शुभेच्छु :-

शिवरतन गुप्ता **संस्थापक-संरक्षक**	**परमेश्वर लाल गोयल** **संरक्षक**	**वी.सी.अग्रवाल** **अध्यक्ष**
राकेश बंसल **सचिव**	**राजकुमार गोयल** **वरिष्ठ उपाध्यक्ष**	**ओमप्रकाश गुप्ता** **उपाध्यक्ष**
राजेश अग्रवाल **कोषाध्यक्ष**	**विरेन्द्र सिंघल** **सलाहकार**	**अनिल कुमार अग्रवाल** **सह सचिव**
शेखर गोयल **सह सचिव**	**रामधन अग्रवाल** **संगठन मंत्री**	**रविन्द्र अग्रवाल** **प्रचार मंत्री**

-: सदस्य :-

भगवती प्रसाद अग्रवाल, सुशील कुमार गुप्ता, अमित अग्रवाल,
चमन अग्रवाल, मदन शाह, अशोक कुमार अग्रवाल,
रमेश अग्रवाल, लोकेश गुप्ता, राकेश सिंघल

अग्रवाल समाज के पितामह, पितृभूमि व समाज पर आधारित संक्षिप्त जानकारी

महाराजा अग्रसेन : अग्रवाल समाज के संस्थापक व समाजवाद के प्रवर्तक। संसार को अहिंसा का संदेश देने वाले, प्रताप नगर के सूर्यवंशी महाराजा वल्लभ के पुत्र। आपने अपने राज्य को 18 कुलों में बांटा तथा उनके निर्वाचित प्रतिनिधियों की सहायता से शासन का संचालन किया। महाराजा अग्रसेन ने स्वंय छत्र और चंवर धारण किया तथा अपनी प्रजा को भी यह अधिकार दिया कि विवाह के समय दूल्हा छत्र और चंवर धारण कर अग्रवंशीय परंपरा का पालन कर गौरव का अनुभव करे। राजा और प्रजा में समानता लाने का यह अद्‌भुत दृष्टिकोण था।

महारानी माधवी : महाराजा अग्रसेन की महारानी व नागलोक के राजा कुमुद की पुत्री।

अग्रसेन जयंती : प्रत्येक वर्ष आसोद सुदी एकम (पहला नवरात्रा) को मनाई जाती है।

महाराजा अग्रसेन के सिद्धांत : सर्वेभवंतु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया ।

महाराजा अग्रसेन का आदर्श : जीओ और जीने दो।

महाराजा अग्रसेन ने **18 यज्ञ** किए व यज्ञ में पशु बलि को बंद किया।

महाराजा अग्रसेन ने बड़े पुत्र **विभु** को राजगद्दी सौंपी।

महाराजा अग्रसेन जलपोत : का अनावरण 14 मार्च 1995 को हुआ।

महाराजा अग्रसेन सुपर नेशनल हाइवे : दिल्ली से कन्याकुमारी तक।

महाराजा अग्रसेन : पर डाक टिकट 24 सितंबर 1976 को भारत सरकार ने जारी किया ।

महाराजा अग्रसेन जी पर दिनांक 29.8.1997 को फिल्म बनी।

महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज व अस्पताल का अग्रोहा में उद्‌घाटन 7 अगस्त 1994 को हुआ।

महाराजा अग्रसेन बावड़ी : दिल्ली के कनाट प्लेस क्षेत्र में स्थित, पुरातत्व विभाग के अनुसार इसका निर्माण 700–800 वर्ष पूर्व हुआ।

अग्रवालों की बावड़ी : सन् 1458 का एक शिलालेख राजस्थान के अलवर जिले के मोचड़ी नामक गांव में स्थित एक बावड़ी पर लगा है जो अग्रवालों की बावड़ी कहलाती है।

अग्रोहा

इतिहास के आइने में : फ्रैंच यात्री बर्नियर ने अपनी भारत यात्रा संबंधित पुस्तक में अग्रोहा का उल्लेख किया है, महाभारत में कर्ण दिग्विजय प्रसंग में आग्रेयगण का वर्णन है जो अग्रोहा की उपस्थिति बताता है, यह महाभारत के युद्ध से पहले की घटना है। पाणिनी रचित व्याकरण ग्रंथ अष्टाधायी में भी आग्रेय गणराज्य का उल्लेख है, आदिकाल से भाटों द्वारा गाये जाने वाले गीतों में अग्रसेन द्वारा स्थापित अग्रोहा नगर का वर्णन है, भविष्य पुराण में महाराज अग्रसेन से संबंधित अनेक कथाएं हैं जिन्होंने अग्रोहा बसाया, चीनी यात्री ची युंग ने अग्रोहा की स्थिति का वर्णन किया था, सिकंदर का प्रमाणिक इतिहास लिखने वाले यूनानियों के विवरणों में भी अग्रोहा से संबंधित भूखंड का विवरण है, 18वीं सदी में रेनेल ने उस वक्त के भारत का एक नक्शा दिया है जिसमें अग्रोहा का भी उल्लेख है। इस प्रकार और भी अनेक प्रमाण अग्रोहा के बारे में मिलते हैं।

देश के ही नहीं विश्वभर में फैले करोड़ों अग्रवाल बंधुओं को जोड़ने का सशक्त माध्यम है – अग्रोहा । यह वह स्थान है जहां से अग्रवाल समाज का प्रादुर्भाव हुआ। यह वह गौरवपूर्ण स्थान है जहां से महाराजा अग्रसेन ने समाजवाद की नींव रखी। कहते हैं कि इस नगर का विस्तार 12 योजन लंबा और 4 योजन चौड़ा था। अग्रोहा के अवशेषों की सन् 1889 में पहली बार खुदाई हुई तत्पतश्चात् 1939, 1979, 1980, 1981 व 1983 में। पुरातत्व विभाग, निदेशालय हरियाणा ने रिपोर्ट में लिखा कि – यह स्थान महाभारत में वर्णित आग्रेय गणतंत्र की राजधानी था। ऐसा विश्वास है कि इसे अग्रवाल समुदाय के महाराजा अग्रसेन ने बसाया था। अग्रोहा में मित्तल गौत्रीय लगभग 100

व्यक्तियों के 15 परिवार आज भी रहते हैं। 1976 में यहां गांव के सरपंच श्री रामलाल अग्रवाल थे।

अग्रोहा पर बार–बार आक्रमण हुए तथा वह अनेक बार बसा और फिर उजड़ा। अग्रोहा के पुनःउद्धार के अनेक बार प्रयास हुए जैसे – सन् 1919 मे अग्रवाल सभा का अधिवेशन अग्रोहा में हुआ, जिसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प लिया गया। 1952 में श्री कमल नयन बजाज की अध्यक्षता में अग्रवाल सभा का पुनः अधिवेशन हुआ, लाला लाजपतराय के भतीजे श्री चंपतराय एडवोकेट की अध्यक्षता में भी एक अधिवेशन अग्रोहा को बसाने के लिए हुआ किंतु कोई प्रगति नहीं हुई। 1965 में दिल्ली के मास्टर लक्ष्मीनारायण जी अग्रवाल ने महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना हेतु महाराजा अग्रसेन इंजीनियरिंग एंड टेक्निकल सोसायटी के नाम से अग्रोहा के थेह के पास 234 एकड़ जमीन खरीदी। सन् 1975 में श्री रामेश्वरदास जी गुप्त के प्रयासों से दिल्ली में अखिल भारतीय अग्रवाल प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन हुआ और उसमें अग्रोहा निर्माण का संकल्प लिया गया । फलतः 1975 में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन व 1976 में अग्रोहा विकास ट्रस्ट का गठन हुआ। 1976 में ही अग्रोहा निर्माण हेतु सोसायटी ने 23 एकड़ भूमि अग्रोहा विकास ट्रस्ट को दी।

यह गर्व की बात है कि महाराजा अग्रसेन की कर्मस्थली अग्रोहा ने अब विश्व के मानचित्र पर अपना स्थान अंकित कर लिया है। आज अग्रोहा की शान देखते ही बनती है। यहां अग्रोहा विकास ट्रस्ट व अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेललन द्वारा काफी कार्य किया गया व यह लगातार जारी है। **संक्षिप्त में -**

अग्रोहा : अग्रवालों की पितृभूमि, हिसार (हरियाणा) जिले में है, अग्रोहा

को पांचवा धाम माना गया है ।

अग्रोहा धाम : राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 10 के हिसार जिले में है ।

अग्रोहा की रीति : एक ईंट और एक मुद्रा (रूपया) यानि सब एक के लिए – एक सब के लिए की भावना।

लाला हरभजन शाह (महम निवासी) ने अग्रोहा को दोबारा बसाया। इनको श्रीचंद नामक व्यापारी के पत्र से यह प्रेरणा मिली। इन्होंने परलोक के भुगतान पर कर्ज दिया ।

शीला माता : सेठ हरभजन शाह की पुत्री।

महालक्ष्मी : अग्रवालों की कुलदेवी ।

अग्रोहा में प्रतिवर्ष शरद पूर्णिमा को महाकुंभ का आयोजन किया जाता है।

अग्रोहा में दर्शनीय स्थल

– **महाराजा अग्रसेन जी का प्राचीन मंदिर** : जिसे विक्रम संवत् 1995 (1939) में कोलकाता के सेठ रामजीदास बाजोरिया द्वारा बनवाया गया। यहां पर इन्हीं ने एक धर्मशाला भी बनवाई। इसी के साथ सेठ विश्वेश्वरदयाल हलवासिया ट्रस्ट ने धर्मशाला के समीप एक कुंए और प्याऊ का निर्माण करवाया। इन सभी का अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा

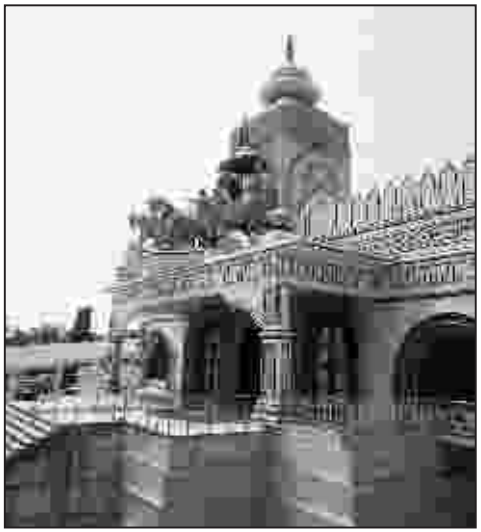

नवीन रूप में काया कल्प किया गया।

– अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा स्थापित श्री अग्रसेन फाउंडेशन के तत्वावधान में **अग्रविभूति स्माारक,** महारानी माधवी अन्न क्षेत्र आदि । यहां पर आने वाले समय में महाराजा अग्रसेन म्यूजियम, शोध संस्थान व पुस्तकालय स्थापित करने की योजना है।

– **अग्रोहाधाम (अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा) में बनाए गए** : शक्ति सरोवर, मंदिर जैसे – महाराजा अग्रसेन, कुलदेवी महालक्ष्मी, माता सरस्वती, शक्ति माता शीला, माता वैष्णो देवी गुफा व मंदिर, हनूमान जी की 90 फीट ऊंची प्रतिमा , द्वारकाधीश मंदिर, अप्पूघर, आदि ।

- **शक्ति शीला माता का भव्य मंदिर** : इसे स्व. श्री तिलक राज अग्रवाल (मुंबई) ने अग्रोहा विकास संस्थान के सहयोग से बनवाया ।

– **महाराजा अग्रसेन मेडिकल कॉलेज, अस्पताल व शोध केंद्र** : 278 एकड़ भूमि पर बना विशाल अस्पताल।

– **अग्रोहा के थेह व पुराने किले के पुरातात्विक अवशेष** : ये 566 एकड़ भूमि में फैला तथा 87 फीट ऊंचा है। थेह पर प्राचीन सतियों की मढ़ियां हैं।

– **अग्रसेन वैष्णव गौशाला** : ये हरियाणा की सबसे पुरानी गौशालाओं में से एक है। इसकी स्थापना 1915 में भिवानी के सेठ भोलाराम डालमिया व लाला सांवलराम के प्रयत्नों से की गई। आधुनिक सुविधायुक्त इस गौशाला में हजारों गायों को रखने की सुविधा है।

अग्रवाल

अग्रवाल कहलाता हूं मैं, स्वर्ण लिखा इतिहास है।
मेरी जाति के पुरखों ने, जग में किया काश है।।

अग्रवाल समाज को अंतरराष्ट्रीय कौम कहा जाता है। भारत में व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे अग्रणी व श्रेष्ठ समाजों में इसकी गिनती होती है।

महाराजा अग्रसेन के वंशज अग्रवाल कहलाते हैं। इस समाज का उल्लेख 1100 ईस्वी के ग्रंथों में मिलता है । यह वैश्य जाति का एक महत्वपूर्ण घटक है और इसकी परम्पराएं महान हैं। इसने कभी भी जाति की संकीर्ण भावनाओं को आश्रय नहीं दिया। अग्रवाल समाज की राष्ट्रीय व सामाजिक सेवाओं का प्रसार व असर समस्त प्राणियों में दिखाई देता है। सरकार के बाद भारत में सबसे अधिक विद्यालय अग्रवाल समाज द्वारा स्थापित हैं। इस जाति में गौत्र की शानदार परंपरा रही है इसी कारण आज भी इस जाति की गणना विश्व की श्रेष्ठ जातियों में होती है। इस समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी व्यवसाय एवं उद्योग क्षमता है, दूसरी – अद्‌भुत पुरूषार्थ, साहस, हिम्मत व धैर्य, तीसरी – सरलता, सादगी एवं मितव्यता है। अग्रवाल समाज में लोकोपकार एवं दानशीलता की भावना बचपन में ही संस्कारों के साथ ही मिलने लगती है । ये हमेशा अपनी साख पर ध्यान रखते हैं। अग्रवालों की यह भी विशेषता रही है कि वह जहां भी जाता है वहीं का हो जाता है । अगवाल समाज का स्वर्णिम इतिहास अत्यधिक व्यापक है। राष्ट्रीय उत्थान में अग्रवालों का योगदान इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है। आजादी के दीवानों के रूप में स्वत्रंता संग्राम के

इतिहास में अगवालों का योगदान तो भरा पड़ा है। यह समाज वीरता एवं त्याग के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है। इतिहास साक्षी है कि जब तक वैश्य अग्रवालों के हाथ में कृषि, गौरक्षा और वाणिज्य का कार्य रहा, भारत सोने की चिड़िया कहलाया। संपूर्ण भारत में परिचय सम्मेालन व सामूहिक विवाह का आरंभ अग्रवाल समाज ने ही किया।

आपनी योग्यता व बुद्धि से अनेक अग्रविभूतियों ने राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान का झंडा बुलंद कर समाज का नाम रोशन किया है। खेद है कि आजादी के बाद आरक्षण व वोट बैंक की राजनीति के कारण इस जाति को उचित स्थान नहीं मिला।

ये इतिहास है अग्रवालों का...

जर्मन के महान् विद्वान प्रो. मेक्समूलर ने लिखा है : ''जो जाति अपने प्राचीन यश (गौरव) को भूल जाती है वह अपनी जातियता के आधार स्तंभ को खो बैठती है। ब्रिटिश शासनकाल में विभिन्न क्षेत्रों में बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय की भावना व करनी में कल्याण की भावना के लिए समाज सेवा व सामाजिक कार्यों में उल्लेखनीय सेवाओं को देखते हुए अनेक जातियों के दानवीरों को **महाराज बहादुर, रायबहादुर, सर, केसरे हिंद, राय साहब** आदि अनेक उपाधियों से सम्मानित किया गया। देश में कुए, बावड़ी, तालाब, बाग–बगीचे, चिकित्सांलय विद्यालयों आदि का निर्माण कार्य आप जैसे कर्मप्रधान पुरूषों के कारण संपन्न हुआ। राष्ट्र सेवा और राष्ट्र निर्माण में अपने आप को तन–मन–धन से समर्पित करने वाले इन महापुरूषों पर सदा गर्व रहोगा। देश में ऐसा कोई धार्मिक स्थल नहीं मिलेगा जहां अग्रवाल समाज की इन विभूतियों ने धर्मशालाएं, मंदिर, मठ, पुल आदि न बनाए हों। इनकी सार्वजनिक सेवाएं प्रशंसनीय और विस्तृत हैं। परोपकार और धार्मिक कार्यों में इनका विशेष स्थान है। इन अग्रवाल विभूतियों ने अपनी दानशीलता, उदारता एवं परोपकारी वृत्ति के कारण जनमानस में एक उच्च व प्रतिष्ठायुक्त स्थान प्राप्त किया है ।

संपूर्ण वैश्य जाति के घटकों में इनकी संख्या अधिक है। यहां अग्रवाल जाति के अग्र महापुरूषों का विवरण प्रस्तुत है। यह विवरण संग्रहित किया गया है। प्रणाम उन इतिहासकारों को, उन साहित्यकारों को जिन्होंने इतनी महत्वपूर्ण जानकारी समाज को दी, ये उनकी वर्षों की तपस्या का ही फल है। यदि इस संबंध में और कुछ जानकारी हो तो कृपया अवगत करवाने की कृपा करें ।

महाराज बहादुर

देवी सिंह बहादुर (गोविल गौत्र) - आप बंगाल प्रांतीय कौंसिल के सदस्य रहे। बिहार में दीवानी के पद पर उच्च कार्य किए। अंग्रेज सरकार ने आपको महाराज बहादुर की उपाधि प्रदान की।

राजा बहादुर

राजा ख्यालीराम बहादुर - ऐरण गौत्री : आप राय खानदान के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपको ब्रिटिश शासन में डिप्टी गर्वनर का सम्मान पूर्ण पद प्राप्त हुआ और लार्ड क्लाईव ने आपके कार्यों से प्रसन्न होकर रायबहादुर का सम्मान प्रदान किया। बिहार में गड़बड़ी होने पर पूरा सूबा उन्हें ईस्ट इंडिया कंपनी ने लीज पर दे दिया था, ये पटना के दीवान भी रहे ।

राजा पटनी मल बहादुर - ऐरण गौत्री : आप राय खानदान के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप राजा ख्यालीराम बहादुर के पुत्र थे, 1803 में मेजर जनरल वेलेजली के साथ अवध, गोहद और ग्वालिर के महाराजाओं के साथ जो संधि हुई उसमें आपका विशेष योगदान रहा। इसलिए वेलेजली ने आपको पंचहजारी मनसब और एक जागीर भी दी। आप बेहद धार्मिक प्रवृति के थे, आपने अनेक मंदिरों, तालाबों का निर्माण करवाया। मथुरा में प्रसिद्ध शिवताल तालाब आपने 3 लाख रूपये की लागत से बनवाया । अकबर बादशाह द्वितीय ने राजा का खिताब व पंचहजारी का मंसब प्रदान किया। 20 अगस्त 1831 को लार्ड बिलियम बेंटिक ने आपको राजा बहादुर की उपाधि प्रदान की। दिल्ली में पटनीमल की गली, पटनीमल की खिड़की व पटनीमल हवेली विद्यमान है।

राजा बहादुर शंभू प्रसाद आसफजाही : हैदराबाद की सल्तनत में आप अहम स्थान रखते थे। सल्तनत के सभी मामलों में आपका दखल था।

दरबार में आपका इतना आदर था कि जब तक राजा बहादुर शंभूप्रसाद आसफजाही दरबार में नहीं आ जाते तब तक नवाब दरबार में नहीं आते थे। आपको नोबत, घड़ियाल और अंबाड़ी का सम्मान प्राप्त था जो हैदराबाद में अग्रवाल खानदान के लिए गौरव की बात थी। आप जागीरदार थे। नवाब ने इन्हें आसफजाही का खिताब और रायबहादुर का खिताब दिया था। वर्तमान में जो स्थान कालीकमान के नाम से बोला जाता है वह पहले शंभूप्रसाद की कमान के नाम से प्रसिद्ध था।

राजा बहादुर सर सेठ बंशी लाल पित्ती - जिंदल गौत्र, नागौर- राजस्थान : विक्रम संवत् 1955 में निजाम सरकार महबूब अली बादशाह ने आपको राजा बहादुर का खिताब दिया। इनके परिवार में अनेक यशस्वी व्यक्ति हुए जिन्हें निजाम एवं ब्रिटिश सरकार ने ऊंची–ऊंची पदवियां दी जैसे – रायबहादुर, सर, राजाबहादुर आदि । आपने अनेक मंदिर व धर्मशालाओं का निर्माण करवाया।

राजा कानीराम बहादुर : मुगल सम्राट शाह आलम के शासनकाल (सन् 1816 से 1863) में आप बिहार सूबे के नायब दीवान थे। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने आपको राजा बहादुर की उपाधि प्रदान की थी । इसी समय दिल्ली के जयसिंह अग्रवाल दीवान के प्रशासनिक पद पर नियुक्त थे। शाह आलम ने इन्हें शाही तोपखाने का हाकिम बनाया था। इनके वंशज आज भी इसकी कारण तोपखाने वाले कहलाते हैं।

राजा बहादुर शिवप्रसाद, बिजनौर : आप हैदराबाद के निजाम की सेना में उच्च पदस्थ सैनिक थे। आपकी इंतजाम शक्ति को देखकर हैदराबाद निजाम ने अपने मुल्क का **इंतजामे फौजी** नियुक्त किया। आपने अनेक विजय हांसिल की। आपकी दिलेरी देखकर निजाम ने आपको **मसवंत हजारी** की उपाधि से सम्मानित किया तथा राजा बहादुर का खिताब दिया।

राजा ललिता प्रसाद ओ बी ई, धर्मभूषण : सन् 1898 में राजाबहादुर, 1910

में राजा, 1918 में ओ बी ई (ऑर्डर ऑफ ब्रिटिश एंपायर) की उपाधि तथा सनातन धर्म में आपकी अटूट श्रृद्धा को देखते हुए भारत धर्म महामंडल ने आपको धर्मभूषण की पदवी से सम्मानित किया। आपने सरकार व जनसाधारण की बहुत सेवा की। यू पी गर्वनर ने अपने लंबे भाषण में आपके गुणों व सेवाओं की मुक्त कंठ से प्रशंसा की साथ ही आपको जरीदोज का चोगा, पटका, पगड़ी आदि ''**रोब ऑफ ऑनर**'' देकर सम्मानित किया।

राजा बहादुर लाला सुखदेव सहाय : हैदराबाद स्टेट के प्रति आपकी सेवाओं के फलस्वरूप निजाम ने आपको राजा बहादुर की पदवी प्रदान की तथा आपको अपना खास जौहरी बनाया। आप जैन धर्म में गहरी आस्था रखते थे।

राजाबहादुर मोती लाल : आप हैदराबाद में निजाम स्टेट के जौहरी थे। आप सभी सार्वजनिक एवं परोपकारी कामों में उदारता से सहायता किया करते थे। आपके कार्यों से प्रसन्न होकर व योग्यता की कद्र करते हुए निजाम ने आपको राजाबहादुर की पद्वी से सम्मानित किया।

राजा ज्वाला प्रसाद - गर्ग गौत्र : जन्म सन् 1872 जिला बिजनौर कस्बा डाबर में। काशी विश्वविद्यालय की वृहत योजना व विशाल भवन आपकी उत्कृष्ट शिल्पकला का अनुपम उदाहरण है। आप उत्तर प्रदेश में प्रथम भारतीय इंजीनियर नियुक्त हुए। अंग्रेज सरकार ने आपको राजा साहब की उपाधि से सम्मानित किया। काशी विश्वविद्यालय के उपकुलपति बने। काशी पुरातन घाटी की योजना आपने बनाई। 1902 में वैश्य अग्रवाल राजवंश सभा के प्रधान बने।

राजा बहादुर पुरुषोत्तम जैन - मित्तल गौत्र।

रायबहादुर

रायबहादुर हरिप्रसाद अग्रवाल : आपके पिता लाला द्वारकादास जी अंबाला और लाहौर के प्रसिद्ध वकील थे। आपका विवाह सर गंगाराम जी की पुत्री से हुआ, आप अनेक वर्षों तक केमेस्ट्री के प्रोफेसर रहे। शिक्षा के क्षेत्र व धार्मिक क्षेत्र में आपकी उल्लेखनीय सेवाओं के फलस्वरूप आपको सिलवर जुबली मेडल, कोरोनेशन मेडल तथा रायबहादुर की उपाधि प्रदान की गई।

रायबहादुर सेठ भगवानदास बागला - बिंदल गौत्र : मारवाड़ी अग्रवाल समाज में जिन कीर्ति पुरूषों की पताका फहराई जाएगी उनमें रायबहादुर सेठ भगवानदास बागला का नाम प्रमुख रूप से लिया जाएगा। आपने सैंकड़ों संस्थाओं की सहायता की, अनेक सार्वजनिक स्थानों का निर्माण करवाया, रंगून में भी आपने अनेक जनहित के कार्य किये। आपकी सार्वजनिक सेवाएं प्रशंसनीय व बहुत विस्तृत हैं। बीकानेर दरबार आपका बहुत आदर किया करते थे तथा दरबार में आपको उच्च स्थान प्राप्त था। आपकी पत्नी ने सन् 1920 में राय बहादुर भगवानदास बागला हिंदू हॉस्पीटल नामक प्रसिद्ध संस्थां की स्थापना कलकत्ता में की।

रायबहादुर रामानुजदयाल मेरठ : जन्म – 1968, उपाधि सन् 1909 में। आप पहले और अकेले हिंदू थे जो सन् 1911 के देहली दरबार में गर्वमेंट के मेहमान की हैसियत से निमंत्रित किए गए।

रायबहादुर बालेश्वर प्रसाद बी.ए. : आप महाराजा बनारस के दीवान रहे। आपकी प्रतिष्ठा अग्रवाल समाज, इलाहबाद व बनारस की जनता में काफी थी। सन् 1915 में रायबहादुर की उपाधि प्रदान की गई।

रायबहादुर गुलाब राय जैन - जिंदल गौत्री - बंक रईस : रईस परिवार, आपकी

विशेष सेवाओं को देखते हुए सरकार ने आपको रायसाहब, रायबहादुर जैसी उपाधियां प्रदान की।

रायबहादुर बद्रीदास गोयनका - KTCIE : आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर ब्रिटिश सरकार ने आपको रायबहादुर, सर नाइट, सी आई ई आदि उच्च – पदवियां देकर आपका सम्मान किया। आप रिजर्व बैंक के डायरेक्टर, प्रसिद्ध व्यवसायी और कोलकाता विश्व विद्यालय के आनरेरी फेलो रहे हैं। आप अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ थे, आप बंगाल लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य भी रहे। कोलकाता की सामाजिक, व्यवसायिक तथा राजकीय संस्थाओं में आपका विशेष योगदान रहा।

रायबहादुर कन्हैयालाल अग्रवाल, कंसल गौत्र : आप आगरा के नामी वकील थे। आपका परिवार आगरा का प्रतिष्ठित व अग्रणी परिवार रहा है ।

रायबहादुर सेठ मोती लाल अग्रवाल : जन्म जोधपुर– राजस्थान, आप रायबहादुर पुखराज जी अग्रवाल के पिता थे। आपका देहावसान 1908 में हुआ।

रायबहादुर पुखराज अग्रवाल : 1946 में आपको रायबहादुर की पदवी दी गई। 1938 में आप अहमदाबाद में रेलवे सुपरिडेंडेट रहे, 1939 में मुंबई में रेलवे सुपरिडेंडेट रहे, 1944 में रेलवे बोर्ड के डायरेक्टर, 1948 में जोधपुर रेलवे के आप चीफ मैकेनिकल इंजीनियर रहे। आपने मैकेनिकल इंजीनियर की डिग्री लंदन से ली। अंग्रेज राज में आप पहले भारतीय थे जो इंजीनियर बने। आपने अनेक शिक्षण संस्थाओं का निर्माण करवाया तथा अनेक जनहित कार्य किये।

रायबहादुर लाला जगदीश प्रसाद : जन्म – सन् 1891, आप मुजफ्फर नगर की लगभग सभी संस्थाओं के पदाधिकारी रहे, आपने अपनी रियासत का कार्यभार संभाला और अपने सद्व्यवहार व उदारवृति से जल्दी ही लोकप्रिय हो गए। आप यू पी की राजकीय संस्थाओं में उच्च पदों पर

रहे। सन् 1920 में आपको रायसाहब व 1927 में रायबहादुर की पदवी सरकार की तरफ से प्रदान की गई। 1935 में आपने जयपुर में अखिल भारतवर्षीय वैश्य महासभा के अधिवेशन में सभापति का पद सुशोभित किया।

ऑनरेबुल रायबहादुर लाला निहालचंद : 1898 से 1909 तक आप यू पी कौंसिल के मेंबर पद पर रहे। आपने अनेक जनहित के कार्य किये और वैश्य जाति की शोचनीय दशा देखकर आपने श्री अखिल भारतवर्षीय वैश्य महासभा नामक प्रसिद्ध संस्था की स्थापना की। हरिद्वार में आपने बाग, कोठी और धर्मशाला का निर्माण करवाया।

रायबहादुर लाला रामरूप अग्रवाल - दूरदर्शी और सिद्धान्तवादी। आपने अनेक मंदिर, स्कूल, अस्पताल व धर्मशालाएं बनवाई,आपकी समाज के प्रति निस्वार्थ भावना को देखते हुए आपको रायबहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया। आप दिल्ली क्लोथ मिल के 35 वर्ष तक डायरेक्टर रहे। दिल्ली के सब्जी मंडी स्थान पर आपने एक घंटाघर का निर्माण 1941 में करवाया, घंटाघर की संगमरमर पट्टी पर अंग्रेजी में लिखा है — RamRoop Tower 1941- Donation of lala Ram Roop Vaish Agarwal

रायबहादुर लाला आनंद स्वरूप : आप बड़े देशप्रेमी व अग्रवाल जाति के हितैषी थे। आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में सन् 1930 में रायसाहब तथा 1934 में रायबहादुर की पदवी से आपको सम्मानित किया गया। श्री अखिल भारतवर्षीय वैश्य महासभा के आप महामंत्री रहे, अग्रवाल महासभा में आपने काफी कार्य किया।

रायबहादुर साहु पुरुषोत्तम शरण : आप अनेक धार्मिक संस्थाओं व यू पी की अनेक राजकीय संस्थाओं में उच्च पदों पर रहे। प्राविन्शियल दरबारी और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट का सम्मान भी आपको प्राप्त था। आपकी सेवाओं के कारण सन् 1915 में सरकार ने आपको रायबहादुर की

पदवी से सम्मानित किया। यूरोपीय वार में आपने उस समय 34 हजार रूपये तथा 179 रिक्रूट दिये। इन सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको **सोर्ड ऑफ ऑनर** तमगे सहित मिली ।

रायबहादुर साहु ज्वालाशरण : सन् 1933 में आपको रायसाहब तथा 1936 में रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया गया। आपको सम्राट जार्ज पंचम की सिल्वर जुबली के अवसर पर जुबली मेडल व छठे जार्ज के राज्यारोहण पर कारोनेशन मेडल तथा सनदें मिलीं।

रायबहादुर लाला छोटे लाल ओ.बी.ई : जन्म सन् 1878, आपको 1917 में रायबहादुर व 1918 में ओ बी ई उपाधि दी गई। 1935 में सिलवर जुबली मेडल, 1937 में कोरोनेशन मेडल प्राप्त हुआ।

रायबहादुर साहु जगन्नाथ, पीलीभीत : आपने बद्रीकाश्रम मार्ग में दो धर्मशालाएं, गोला–गोकर्णनाथ तीर्थ में विशाल व सुंदर धर्मशाला बनवाई। आपकी भारत के साधु समाज में बड़ी ख्याति थी। सन् 1900 में आपको रायबहादुर की पदवी प्रदान की गई ।

रायबहादुर साहु रामस्वरूप ओ बी ई : आपको 1915 में रायबहादुर व 1918 में ओ बी ई की उपाधि दी गई।

रायबहादुर शिवप्रसाद एमबीई, बरेली : उपाधि सन् 1924 में व बाद में एम बी ई (मेंबर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर) की उपाधि तथा समय–समय पर सरकार ने आपको अनेक मेडल, सनदें और परवाने देकर सम्मानित किया ।

रायबहादुर लाला उग्रसेन बी.ए. (ऑक्सफोर्ड), एम बी ई बैरिस्टर एट लॉ : 1914 में आपने लंदन से लॉ की डिग्री प्राप्त की। जनता की अच्छी सेवाओं के फलस्वरूप सरकार ने आपको 1930 में रायबहादुर व 1936 में एम बी ई की पदवी से सम्मानित किया।

रायबहादुर लाला प्यारे लाल इंदौर वाले : आपके पास बहुत सी रियासतों की देखभाल का कार्य था इनमें आपने कई सुधार कार्य किए व माली हालत को सुधारा, सन् 1911 में रायसाहब, 1920 में रायबहादुर की पदवी से सम्मांनित किया गया। 1911 में सम्राट जार्ज पंचम के राज्यारोहण पर दरबार में कोरोनेशन दरबार मेंडल से सम्मानित किया गया। आपने अपने समय में अनेक अंग्रेज अफसरों के साथ कार्य किया।

रायबहादुर डाक्टर प्यारे लाल, मुरादाबाद : आप प्रसिद्ध सर्जन थे। रूमानिया के राजा, इंग्लैंड के राजा, भारत के तत्कालीन वायसराय और यू पी के गर्वनर ने आपकी सेवाओं व आपके ज्ञान की प्रशंसा की तथा 1926 में आपको रायबहादुर की उपाधि प्रदान की गई।

रायबहादुर बैद्यनाथ दास बी ए : आप अनेक भाषाओं के जानकार थे, आपने अनेक जनहित कार्य किए, आपने अग्रवाल समाज की स्थापना की, अग्रवाल कन्या पाठशाला भी खुलवाई। सन् 1924 में रायबहादुर की पदवी से सम्माानित किया गया।

रायबहादुर साहु श्यामसुंदर लाल : उपाधि सन् 1919 में। समय समय पर आपको कई सर्टिफिकेट व सनदें भी मिलीं।

रायबहादुर साहु हरप्रसाद ओ बी ई : सन् 1922 में रायबहादुर, 1936 में ऑडर ऑफ ब्रिटिश एंपायर की उपाधि से सम्मानित किया गया। संवत् 1980 में काशी के धर्म महामंडल ने आपको धर्मरत्न की उपाधि प्रदान की।

रायबहादुर राय जयकृष्ण ऐरन गौत्र : आपके पूर्वज गुडगांव–हरियाणा के थे तथा पटना–बिहार जाकर बस गए।

रायबहादुर लाला श्रीकृष्ण दास 'धर्मसुधारक' : आपने स्कूल, कॉलेज,

अस्पताल आदि लोकोपकारी कार्य किये। आपने बहादुरगढ में एक लाख रूपयों की लागत से एक बड़ा तालाब बनवाया।

रायबहादुर सेठ मुल्तानमल : सार्वजनिक व राजकीय क्षेत्र में आपका ऊँचे दर्जे का सम्मान था। पटियाला स्टेट ने आपको ''शान इफ्तिखार'' का खिताब दिया। सन् 1936 में रायबहादुर का सम्मान प्राप्त हुआ। आपने अनेक स्कूल, धर्मशालाएं, गौशाला व अस्पताल बनवाए। आपको सिलवर जुबली मेडल से भी सम्मानित किया गया।

रायबहादुर सेठ गोवर्धन दास, तुमसर : आपने अनेक धर्मशालाएं, स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय, कुएं, बावड़ी बनवाई व काफी दान दिया।

रायबहादुर चौधरी भगवाल दास, चंदौसी : सन.1930 में आपके कार्यों से प्रसन्न होकर सरकार द्वारा रायबहादुर की पदवी प्रदान की।

रायबहादुर लाला हरिकृष्ण दास एम बी ई, ऊर्फ खुनखुनजी : सन् 1927 में रायबहादुर व 1935 में एम बी ई का खिताब सरकार ने आपको दिया। आपने अनेक जहित कार्य किये।

रायबहादुर लाला जिनेश्वर दास : ऑनरेरी मजिस्ट्रेट व ऑनरेरी कलेक्टर का सम्मान आपको प्राप्त था। सरकार ने आपके कार्यों से प्रसन्न होकर रायबहादुर की उपाधि प्रदान की।

रायबहादुर साहु जगमंदर दास : आप अनेक सरकारी पदों पर रहे व जनहित के अनेक कार्य किये, आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर आपको रायसाहब व रायबहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया।

रायबहादुर सेठ मुखराम कनोडिया : सन् 1920 में रायबहादुर की पदवी से सम्मानित किया गया। आपने धर्मशालाएं व संस्कृत स्कूल बनवाए व अनेक जनहित कार्य किए।

रायबहादुर लाला धनीराम : सन् 1928 में रायसाहब व 1935 में रायबहादुर की पदवी से आपको सम्मानित किया गया। सन् 1911 में देहली दरबार में आपकी सेवाओं के कारण आपको सिलवर मेडल मिला। आप हिंदू यूनिवर्सिटी के डोनर थे।

रायबहादुर पन्ना लाल गुप्ता - आसनसोल : प. बंगाल, आप प्रसिद्ध समाज सेवी कृष्ण बहादुर गर्ग के ससुर हैं जो पटना के हैं।

रायबहादुर सेठ गूजरमल मोदी : सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं यूपी में मोदी नगर के संस्थापक, जन्म हरियाणा के महेन्द्र गढ़ में सन् 1901, सन् 1942 में आपको रायबहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया। आपने बहुत सी धर्मशालाएं, मंदिर, स्कूल, कॉलेज आदि बनवाए। 1963 में आपको पदमभूषण से सम्मानित किया गया।

रायबहादुर सेठ सूर्यमल शिवप्रसाद : आपने हरिद्वार में गंगा नदी पर प्रसिद्ध लक्ष्मनण झूले का निर्माण करवाया। देश में शायद ही ऐसा कोई धार्मिक स्थान होगा जहां आप द्वारा निर्मित धर्मशालाएं न हों।

रायबहादुर सेठ चंपालाल रामस्वरुप रानीवाला : आप अवध के खजांची भी रहे व एक मिंट चलाते थे जहां सिक्के ढाले जाते थे। आज भी इस मिंट के दो सोने व 27 चांदी के सिक्के लखनऊ संग्रहालय में मौजूद हैं। वि. सं. 1950 में रायबहादुर की उपाधि मिली।

रायबहादुर लाला सखीचंद जैन, कलकत्ता - गर्ग गौत्र : आपने औषधालय, पाठशाला, अनाथालय और कृष्णाश्रम स्थापित करवाए। आपको रायबहादुर तथा **केसरे हिंद गोल्ड मैडल** देकर सम्मानित किया गया। भारत धर्म महामंडल की ओर से आपको बिहार भूषण और दयानिधि का पद दिया गया।

रायबहादुर नौरंगराय खेतान : आप असाधारण गुणों के व्यक्ति थे। सन् 1905 में रायसाहब, 1913 में रायबहादुर और जयपुर दरबार ने सेठ की पदवी से आपको विभूषित किया। जयपुर दरबार से आपको ऐसा सम्मान प्राप्त हुआ जो आज तक किसी भी वैश्य को प्राप्त नहीं हुआ। महाराजा आपको तुम की जगह राज कहकर लिखने और बोलने लगे जो केवल दरबार के भाई बेटों के लिए ही था। आप जयपुर स्टेट के प्रथम जेल सुपरिटेंडेंट नियुक्त किए गए।

रायबहादुर विश्वेश्वर लाल हलवासिया, गर्ग गौत्र : हाबड़ा में जानकी दास अस्पताल, गंगाजी पर श्राद्धघाट बनवाया विक्रम संवत 1982 में आपने मृत्यु से पूर्व 60 लाख रूपयों की संपत्ति से एक परमार्थ ट्रस्ट बनवाया, अग्रवाल समाज में इनता बड़ा ट्रस्ट अनेक वर्षों तक किसी ने नहीं बनवाया।

रायबहादुर शिवराम दास केडिया - मुंबई - गर्ग गौत्र : सन् 1929 में आपको रायबहादुर व जे पी की उपाधि प्रदान की।

रायबहादुर केदारनाथ खेतान, एम एल सी, गर्ग गौत्र : सन् 1932 में रायसाहब तथा 1936 में रायबहादुर का खिताब आपको दिया गया।

रायबहादुर अभिनंदन प्रसाद, जिंदल गौत्र : यूरोपीय युद्ध के पूर्व आपको रायबहादुर का खिताब मिला। आप गोरखपुर के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, ऑनरेरी मुंसिफ, बार ऐसोसिऐशन के सभापति, अग्रवाल हितकारी सभा के उपप्रमुख, डिस्ट्रिक को ऑपरेटिव बैंक के डायरेक्टर आदि पदों पर रहे। यूरोपीय युद्ध के समय आपने भारत सरकार की तन मन धन से सेवाएं कीं।

रायबहादुर बाबू गुलाबचंद जैन : सन् 1921 में रायसाहब व 1918 में रायबहादुर की पदवी से आपको सम्मानित किया गया।

रायबहादुर सेठ नारायणदास - गोयल गौत्र - गुड़वाला परिवार : आप दिल्ली के ऑनरेरी मजिस्ट्रेट व म्यूनिसिपल कमिश्नर रहे।

रायबहादुर विशुन नारायण बी ए., एल एल बी : 1937 में आपके जनहित कार्यों के फलस्वरूप यह उपाधि दी गई।

रायबहादुर बलदेवदास रामेश्वर दास नाथानी - सिंघल - नाथानी परिवार : इनका कोलकाता में शेयरों का बडा कारोबार था।

रायबहादुर लाला कन्हैया लाल, दिल्ली - सिंघल गौत्र : आप पहले भारतीय थे जो पंजाब में सुपरिटेंडेंट इंजीनियर बने।

रायबहादुर रामदेव चौखानी : सन् 1919 में रायसाहब तथा 1927 में रायबहादुर की उपाधि प्रदान की गई।

रायबहादुर सेठ बद्रीप्रसाद, डीगवाले : उपाधि सन् 1938 में मिली ।

रायबहादुर लाला सुल्तान सिंह : उपाधि सन् 1912 में मिली।

रायबहादुर लाला लक्ष्मीचंद : उपाधि सन् 1910 में मिली ।

रायबहादुर लाला हुलाशराय : उपाधि सन् 1932 में मिली।

रायबहादुर सेठ चिरंजीलाल बागला : उपाधि सन् 1920 में मिली।

रायबहादुर लाला केशन सहाय : उपाधि सन् 1884 में मिली।

रायबहादुर हरदत्त राय रामप्रताप चमड़िया - गर्ग गौत्र : चमड़िया परिवार

रायबहादुर सेठ मेवाराम - गर्ग गौत्र : रानीवाल परिवार

रायबहादुर सेठ सुंदरमल - सिंघल गौत्र : राजगढ़िया परिवार

रायबहादुर बाबू बंशी - सिंघल गौत्र : ढूंढाणिया परिवार

रायबहादुर सेठ हजारी मल दूदवा - सिंघल गौत्र : दूदवा परिवार

रायबहादुर साहू जगमन्दर दास - मित्तल गौत्र : साहू–जैन परिवार

रायबहादुर अभिनंदन प्रसाद रईस गोरखपुर - जिंदल गौत्र : रईस परिवार

रायबहादुर सेठ मुखराम - मंगल गौत्र : कानोडिया परिवार

रायबहादुर सेठ चिरंजीलाल बागला - बिंदल गौत्र : बागला परिवार

रायबहादुर सेठ रामजीदास बाजोरिया - सिंघल गौत्र

रायबहादुर सेठ मोतीलाल पित्ती - जिंदल गौत्र : नागौर– राजस्थान

रायबहादुर बटुक प्रसाद : आपको अंग्रेज सरकार ने रायबहादुर व रायसाहब की पदवी प्रदान की।

रायबहादुर सेठ अमोलक चंद रानीवाला

रायबहादुर लाला जानकी प्रसाद

रायबहादुर दुर्गा प्रसाद संघी

रायसाहब की पदवी से सम्मानित अग्रवाल विभूतियां

रायसाहब सेठ महादेव प्रसाद : आपने अपने जीवनकाल में घाटों व सड़कों का निर्माण करवाया, अकाल के समय आपने अनेक गांवों व स्थानों पर सराहनीय सेवा की। सन् 1920 में आपको रायसाहब की उपाधि दी गई।

राय साहब नगर सेठ तुलसीदास अग्रवाल - लूणवाला परिवार, जोधपुर : सदा जनता की भलाई में अपने को समर्पित करने वाले तुलसीदासजी को सन् 1946 में राय साहब, 1936 में सेठ, घोड़ा शरीफ व खलीफा की पदवी से सम्मानित किया गया। 1939 में सनद की पदवी प्रदान की गई। दरबार के आग्रह पर 1938 में आपने कुआं व ट्यूबवेल खुदवा कर बालोतरा से पचपदरा तक लगभग 45 किलोमीटर की दूरी पर पानी पहुंचाया व जनता को समर्पित किया। उस जमाने में यह काफी कठिन कार्य था। जोधपुर में आपने 1938 में पशु चिकित्सालय का निर्माण करवाया, अनेक कुएं तथा प्याऊ का निर्माण करवाया। जनता के परोपकारी कार्यो के लिए 1942 में जोधपुर महाराजा द्वारा ''**सोना निवेश**'' की उपाधि प्रदान की गई। आपको नगर सेठ की उपाधि भी दी गई। आपने अनेक गांवों में निशुल्क नेत्र शिविरों का आयोजन करवाया उस जमाने में यह नामुमकिन कार्य था कोई ऐसे शिविर लगाने की सोचता भी नहीं था।

राय साहब इन्द्रमन : आप दिल्ली के दरबार में दीवानगी के गौरवशाली पद पर थे।

रायसाहब कृष्णलाल : जर्मन वार के समय आपको एयरफोर्स का कप्तान बनाया गया। जर्मन से आने के बाद आपको रायसाहब की उपाधि प्रदान की गई।

रायसाहब साहु नंदलाल शरण : उपाधि सन् 1925

6. **रायसाहब लाला चिरंजी लाल - बहादुरगढ़िया** : मोदी परिवार, उपाधि – सन् 1930

7. **रायसाहब केप्टन रामचंद्र** : सन् 1929 में की उपाधि।

8. **रायसाहब लाला काशीनाथ एम ए.** : उपाधि– सन् 1937 में ।

9. **रायसाहब लाला राम प्रसाद** : उपाधि– सन् 1913 में ।

10. **रायसाहब लाला प्रद्युम्न कुमार** : उपाधि– सन् 1934 में ।

11. **रायसाहब सेठ घासीराम** : उपाधि– सन् 1918 में ।

12. **रायसाहब लाला रामसुखदास** : उपाधि– सन् 1956 में ।

13. **रायसाहब लाला गुलाबराय** : उपाधि – सन् 1923 में ।

14. **रायसाहब सेठ रामविलास** : उपाधि– सन् 1888 में ।

15. **रायसाहब लाला रामदयाल** : उपाधि– सन् 1928 में ।

16. **रायसाहब साहु गणेशी लाल** : उपाधि– सन् 1914 में ।

17. **रायसाहब बाबू किशन प्रसाद** : उपाधि– सन् 1924 में ।

18. **रायसाहब लाला सरयू प्रसाद** : उपाधि– सन् 1915 में ।

19. **रायसाहब रामरतनदास केडिया** : उपाधि– सन् 1915 में ।

20. **रायसाहब लाला श्याम लाल** : उपाधि– सन् 1925 में ।

21. **रायसाहब जमुनादास चौधरी** : उपाधि– सन् 1922 में ।

22. **रायसाहब सेठ महादेव प्रसाद - गोयल गौत्र** : सवाईका परिवार

23. **राय साहब लाला रामसुख दास - बंसल गौत्र** : बंक चाचाण– चाचाण परिवार

24. **राय साहब राम गोपाल सीताराम** : बंक चाचाण– चाचाण परिवार

25. **राय साहब राधाकृष्ण - तायल गौत्र** : बंक उतरावाल

26. **राय साहब बाबू नौरंगराय खेतान - गर्ग गौत्र**

27. **राय साहब पूर्णमल - सिंघल गौत्र** : गनेड़ीवाला परिवार

28. **राय साहब रामलाल गनेड़ीवाला** : गनेड़ीवाला परिवार

29. **राय साहब नथमल बैरोलिया**

30. **रायसाहब लाला फतेहचंद**

31. **रायसाहब लाला ठाकुरदास बी ए.**

सर (नाइट हुड)

राइट ऑनरेबल सर शादीलाल पी सी - मंगल गौत्र : पिता– सेठ रामप्रसाद अग्रवाल – जन्म : 12 मई 1874, 1920 में आपको पंजाब उच्च न्यायालय लाहौर का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया। आपने अनेक वर्षों तक प्रधान न्यायाधीश का महान् उत्तर दायित्व निभाया, उल्लेखनीय है कि अंग्रेज राज में किसी भी भारतीय को पहली बार प्रधान न्यायाधीश का पद दिया गया। 1934 में आपको इंग्लैंड की प्रीवी कौंसिल की न्यायायिक समिति का सदस्य नियुक्त किया गया। आप पहले अग्रवाल थे जिनको सरकार की ओर से इतना बड़ा सम्मानित पद दिया गया। हरिद्वार में आपके पुत्रों ने अपनी माता के नाम पर नारायणी धर्मशाला का निमार्ण करवाया है।

पंडित सर सीताराम - गर्ग गौत्र : परिवार पत्थरवालों के नाम से प्रसिद्ध है। सुविख्यात राजनीतिज्ञ एवं विधिवेता और युक्त प्रांतीय लेजिस्लेटिव कौंसिल के भू. पू. अध्यक्ष, अग्रकुल भूषण सीताराम जी का जीवन आदर्श रहा। आपने जो समाजोन्नति और लोकहित सार्वजनिक सेवाएं की हैं उनका वर्णन करना असंभव है। आपका जन्म 1885 में मेरठ के एक प्रसिद्ध अग्रवाल परिवार में हुआ, आपके पूर्वज मुगल शासन में कानूनगो थे, सम्राट का ''शाही फरमान'' भी आपके वंशजों के पास है। सार्वजनिक सेवाओं पर मुग्ध होकर ब्रिटिश सरकार ने आपको ''**आनरेरी मजिस्ट्रेट**'' का पद तथा **राय साहब** की उपाधि प्रदान की। सन् 1923 में आप **रायबहादुर** बनाए गए व 1930 में आपको **नाइट हुड** अर्थात् सर की उपाधि प्रदान की गई। 1921 से 1937 तक उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य तथा 1937 से 1949 तक अध्यक्ष रहे आपने अनेक सामाजिक संस्थाओं की स्थापना की व शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया, आप हिंदू विश्वविद्यालय बनारस के सदस्य भी रहे। आपके ही प्रयास से आगरा विश्वविद्यालय का प्रस्ताव पास हुआ। संस्कृत में आपकी अपरिमित योग्यता होने के कारण इलाहबाद यूनिवर्सिटी ने **पंडित** की

उपाधि प्रदान की।

माननीय सर गंगाराम : जन्म 13 अप्रैल 1851 गांव शेखपुरा–पंजाब, पिता लाला दौलतराम जी अग्रवाल 1873 में आप इंजीनियर बने व लाहौर में नियुक्त हुए। ब्रिटिश सरकार ने आपको सी आई ई की उपाधि प्रदान की व इसके पश्चात् एम बी ओ की भी उपाधि प्रदान की । आप प्रख्यात समाजसेवी, दान शिरोमणी के रूप मे जाने जाते थे। आपने अनेक बड़े शहरों की जल योजनाओं को मूर्त रूप दिया, अमृतसर–पठानकोट की रेल लाईन निर्माण की संपूर्ण योजना के सूत्रधार, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के निर्माण में आपका योगदान रहा इसके लिए पं. मदनमोहन मालवीय जी ने लिखा कि ''विश्वविद्यालय की इमारत का कोना कोना लाला गंगाराम का ऋणी रहेगा।'' निधन – 10.7.1927

सर राजा मोती चंद - गोयल गौत्र : आप वाराणसी के प्रथम मेयर थे। काशी यानि वाराणसी के विकास में आपका अभूतपूर्व योगदान रहा । आप अजमलगढ़ के राज परिवार से संबंधित थे।

सर हरिराम गोयनका, के टी सी आई : आपको रायबहादुर, सी आई ई, तथा सर नाईट की पदवी से सम्मानित किया गया। जयपुर दरबार व सीकर रावराजा जी की ओर से भी आपको ताजीम का सम्मान प्राप्त था। मारवाड़ी समाज के उत्थान में आपका विशेष योगदान रहा।

सर पदमावत सिंघानिया - सिंघल गौत्र : महान् देशभक्त, शिक्षा प्रेमी एवं दानवीर। संविधान सभा के सदस्य। 1943 में आपको सर की उपाधि दी गई। आपने बड़े–बड़े शिक्षण संस्थानों, अस्पतालों, मंदिरों तथा जे. के. इंस्टीट्यूट ऑफ रेडियोलोजी, कैंसर रिसर्च व कमलापति सिंघानिया आदि अस्पताल की स्थापना की ।

केसरे हिंद

केसरे हिंद सेठ लक्ष्मीनारायण बागला - बिंदल गौत्र : आपने रंगून, कोलकाता, चुरू आदि स्थानों में सार्वजनिक संस्थाओं का निर्माण किया। ब्रिटिश सरकार ने आपके इन महत्वपूर्ण कार्य के लिए केसरे हिंद की उपाधि प्रदान की।

केसरे हिंद डा. मोहनलाल : जन्म 1925 अलीगढ़ – नेत्र चिकित्सा का कार्य आपने सेवा भाव से किया। 1942 में इनकी महान सेवा को देखते हुए तत्कालीन गर्वनर ने इनको केसरे हिंद की पदवी से सम्मानित किया। भारत सरकार ने आपको 1956 में पद्श्री की पदवी से सम्मानित किया।

श्रीमती रानी रामकली (चंदौसी-यूपी) : आपने अनेक स्कूल व कॉलेज खुलवाए। सन् 1913 में केसरे हिंद तथा सन् 1923 में सरकार ने आपको रानी की पदवी प्रदान की। आप उच्च कोटि की धार्मिक महिला थीं।

रायबहादुर सेठ बैजनाथ गोयनका : सरकार ने सन् 1901 में केसरे हिंद व 1911 में देहली दरबार ने रायबहादुर की पदवी प्रदान की ।

धार्मिक जगत की अग्र विभूतियां

आध्यात्मिक क्षेत्र में अग्रवाल समाज के उच्च कोटि के विद्वान एवं मनीषी संत एवं धर्माचार्य हुए हैं। कुछ ने कम उम्र में संन्यास ले लिया तो इनमें से काफी संत गृहस्थी त्याग कर हुए हैं तथा कुछ ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए संत परम्परा में अपना जीवन व्यतीत किया। महाराजा अग्रसेन के वंश में त्याग तपस्या एवं भक्ति का जो यह अनोखा संगम प्रस्तुत हुआ वह सिर्फ अग्रवाल समाज ही नहीं बल्कि सभी भक्त व धर्म प्रेमी सज्जनों के लिए गौरव की बात है।

परमपूज्य विद्या वाचस्पति श्रीधर स्वामी जी महाराज, अप्पा स्वामी, मठ पंच गव्हागणकर : अग्रवाल समाज की महान् धार्मिक विभूति हैं। आप सबसे पहले रिसोढ़ में प्रगट हुए। आपका जन्म 8 फरवरी 1928 में राजस्थानी अग्रवाल परिवार में हुआ, आपने एम.ए. संस्कृत व अंग्रेजी में किया। बनारस विद्यापीठ से ही आपने विद्यालंकार वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की इस प्रकार की उपाधि प्राप्त करने वाले महाराष्ट्र के आप एकमात्र अग्रवाल हैं। आप अनके भाषाओं के प्रकांड विद्वान हैं। आप गुजराती, मराठी, राजस्थानी, हिंदी आदि भाषाओं में कथा सुनाते हैं। आपने केरल में अंग्रेजी में कथा सुनाकर सबको आश्चर्य चकित कर दिया। अमेरिका में सनातन धर्म पर प्रवचन देने का श्रेय आपको प्राप्त है।

संत स्वामी अमरानंद जी महाराज : धार्मिक जगत की विशिष्ट विभूति, आपका जन्म 25 मार्च 1925 को देहली के स्वत्रंता सैनानी श्री ताराचंद जी अग्रवाल के यहां अलीपुर ग्राम में हुआ था। आपने दिल्ली के बकौली आश्रम के संत स्वामी श्री रामभारती जी से दीक्षा ली, आप 1987 में घर बार त्याग कर संन्यासी बने। राष्ट्रभक्त होने के साथ–साथ आप प्रारंभ से ही धर्मपरायण रहे। आप प्रारंभ से ही हरिद्वार में चित्रकूट आश्रम में थे, बाद में संन्यास ग्रहण कर चरखी दादरी में गीताभवन आश्रम की स्थापना की तथा यहीं पर रहकर अपना पूरा जीवन धर्म,

समाज एवं गौसेवा में समर्पित कर दिया। हरिद्वार के चित्रकूट आश्रम के पास 14 जनवरी 2003 को महानिर्वाण प्राप्ते कर जल समाधिस्थ हो गए।

स्वामी ओमानंद जी (हरिद्वार) : आप महामंडलेश्वर मंडल के महामंत्री हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी शुकदेवानंद जी सरस्वती महाराज : पूरे देश में परमार्थ निकेतन नाम से सेवा केंद्रों तथा मंदिरों की श्रृंखला स्थापित करने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। अपका जन्म वि.सं. 1959 में बिजनौर जिले के गंगातट पर स्थित परम वैष्णव लाला जगन्नाथ अग्रवाल के यहां हुआ। आपका बचपन का नाम प्रयागनारायण था। आपने देवी संपदा महामंडल के संस्थापक स्वामी एकरसानंद जी से सन्यास की दीक्षा ली। आपकी बचपन में ही धर्म और अध्यात्म में रूचि थी।

महामंडलेश्वर स्वामी भजनानंद जी सरस्वती : आपका बचपन का नाम लड़ेतेलाल अग्रवाल था। बचपन से ही धार्मिक संस्कार होने के कारण आपने भी एकरसानंद जी महाराज से दीक्षा ली। आपने धर्म और अध्यात्म के प्रचार प्रसार में विशिष्ट योगदान दिया। आप परमार्थ निकेतन के अधिष्ठाता के रूप में धर्म तथा हिंदू संस्कृति की सेवा में रत हैं।

महामंडलेश्वर स्वामी असंगानंद जी सरस्वती महाराज : आप गंगातट पर स्थित ऋषिकेश (स्वर्गाश्रम) में परमार्थ निकेतन के अधिष्ठाताओं में प्रमुख हैं। आपका जन्म बरेली के आंवला नगर में लाला राजकुमार अग्रवाल के यहां 15 अक्टूबर 1936 को हुआ। आपने 1991 में सन्यास धर्म की दीक्षा ली और लंबे समय तक परमार्थ निकेतन के संस्कृत विद्यालय मे प्राचार्य रहे, यहां मंदिर, सत्संग भवन तथा अन्य लोकोपकारी कार्यों के संचालन में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा आपने हरिद्धार, दिल्ली, विदर्भ आदि अनेक स्थानों में परमार्थ निकेतन की श्रृंखला स्थापित कर हिंदू धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्र में उल्लेखनीय

कार्य किया । आपने 12 मई 1991 को हरिद्वार के परमार्थ आश्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित संतों के समक्ष महामंडलेश्वर की उपाधि को ग्रहण किया । स्वामी शुकदेवानंद जी महाराज ने 1942 में मुमुक्षु आश्रम शाहजहांपुर की स्थापना की जहां पर आपके पिताजी ने आपको मात्र नौ वर्ष की उम्र में महाराज जी के चरणों में छोड़ दिया। 80 वर्ष की उम्र में आपने मोक्ष प्राप्त किया।

महामंडलेश्वर कैलाश मानव : उदयपुर, राजस्थान में भारत की प्रसिद्ध संस्था नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक। आपका पूरा नाम श्री कैलाश चंद्र अग्रवाल है। विकलांगों एवं समाज के अभाव ग्रस्त लोगों की सहायता के साथ धर्म प्रचार में भी रूचि। हरिद्वार कुंभ के अवसर पर सन्यास की दीक्षा एवं महामंडलेश्वर की उपाधि। देशभर में श्रीमद्भागवत,रामचरित मानस व अन्य कथाओं का आयोजन। विविध धार्मिक चैनलों पर आपके कार्यक्रमों का प्रसारण निरंतर होता रहता है।

स्वामी प्रबुद्धानंद सरस्वती : आप एक महान् साधक तथा साहित्यिक सेवी संत हैं। आगरा के अग्रवाल परिवार में जन्में प्रबुद्धानंद जी 28 वर्षों तक स्वामी अखंडानंद सरस्वती के साथ रहे। अब आप शुक्रताल में रह रहे हैं।

श्री श्री 1008 समंदर शाह जी महाराज : आपने सांई जी की बेरी जो सिवाणा(जालोर) राजस्थान में है मठ की स्थापना की। यह मठ 250 साल पुराना है। आप यहां के गादिपति थे, आप महान तपस्वी संत थे, आपने जीवित समाधि ली। आपका कोई भी शब्द झूंठा नहीं जाता था। आप बालोतरा निवासी अग्रवाल परिवार से ताल्लुक रखते थे। आप शस्त्रों को चलाने में जबरदस्त सिद्धहस्त थे। कहते हैं कि आपने कुछ युद्धों में भाग लिया। आपके अनेक शस्त्र आज भी मठ में रखे हैं।

रामस्नेही स्वामी मुरलीराम जी महाराज : आप रामस्नेही सम्प्रदाय के आचार्य थे। आपका जन्म भक्त कवयित्री मीरा की पावित्र भूमि मेड़ता में

श्री रामनाथ अग्रवाल व माता श्रीमती गंगा देवी के यहां माघ कृष्ण 7, विक्रमी 1802 को हुआ। ब्राह्मणों ने आपका नाम मुरलीधर रखा। आपने 1826 में स्वामी रामचरण दास जी महाराज से दीक्षा ली और रामभक्ति की अलख घर–घर में जगाई। आपने 24000 अनुष्टुप छंदों (श्लोकों) की रचना कर रामस्नेही संप्रदाय के साहित्य की वृद्धि में योगदान दिया। आपकी प्रसिद्धि **आण भैवानी** के रूप में हुई व इसी रूप में आपको पूजा भी जाता है। रायपुर मारवाड़ में आपकी समाधि स्थली पर रामद्वारा स्थापित है। आपके प्रताप से ही बलाड़ ग्राम (भीलवाडा) में सूखा तालाब मीठे पानी से लबालब भर गया, यह जलाशय आज **मुरली सागर** के नाम से जाना जाता है। पूरे मारवाड़ व अन्य स्थानों में आपने रामस्नेही संप्रदाय की पताका को फहराया। भाद्रपद कृष्ण 2, विक्रमी संवत् 1857 को आपने शरीर का त्याग किया।

महान् संत जैन मुनि सुदर्शनलाल जी महाराज : आप सुप्रसिद्ध जैन संतों में से एक हैं। आपका जन्म रोहतक के गर्ग गौत्री अग्रवाल सेठ चंदगीराम जैन के यहां 4 अप्रैल 1923 को हुआ। 18 जनवरी 1992 को सुप्रसिद्ध संत मदनलाल जी महाराज संगरूर से आपने दीक्षा ली, आपका संपूर्ण जीवन धर्म प्रचार एवं मानव सेवार्थ समर्पित रहा। आपने अपने उपदेशों से लाखों लागों को मांस, मदिरा व नशा सेवन आदि अनेक दुर्वयसनों से मुक्ति दिलाकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। आप एक ईंट व एक मुद्रा के अनूठे सिद्धांत के प्रशंसक थे।

बाल ब्रह्मचारी श्री रामस्वरुप भगत : लाला श्यामलाल जी गोयल व माता गोमती देवी के घर 13 अक्टूबर 1928 को गांव सातरोड में आपका जन्म हुआ। इनकी माताजी धार्मिक विचारों की थीं और हमेशा हनुमान जी की भक्ति में लीन रहती थीं। माता जी के संस्कारों के कारण वे सांसारिक बंधनों से मुक्त रहे। सत्संग व भजन कीर्तन में माताजी के साथ रहने से बचपन में ही अनेक भजन कंठस्थ हो गए। माताजी की आज्ञा से ही इन्होंने बाल ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा ली और माताजी की प्रबल इच्छा–शक्ति से ही इन्हें भगवान की भक्ति, तपस्या और

साधना करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। इस प्रकार माताजी इनकी आध्यात्मिक गुरू बनीं।

भगवान हनुमान जी की उपासना में ये इतने लीन हो गए कि साधना हेतु आपने 14 वर्षों तक अन्न नहीं खाया, कठोर तपस्या की । आपने हनुमान भजनावली, समाज सुधार भजनावली, नरसी भात, राजा हरीशचंद्र की असली कथा, मोरध्वज की असली कथा, गोपीचंद भरथरी, देवियों के गुरू अधिकार, श्री परमपिता हनुमान जी का दिव्यजीवन, हनुमान पचासा, आरती–माला, ओम नमो गुरू पिता हनुमंते आदि अनेक पुस्तकें लिख कर छपवाईं। परम पिता हनुमान जी के जीवन चरित्र और भक्ति के संबंध में इन्होंने जो ओम नमो गुरू पिता हनुमते ग्रंथ लिखा है वह वास्तज में एक शोध ग्रंथ है। कड़ी साधना व तपस्या के कारण इन्हें परमपिता हनुमान जी का इष्ट प्राप्त हुआ और उन्हीं के सिद्धहस्त हुए।

आपने एक हनुमान मंदिर बनवाया व वहीं पर प्रेम कुटी बनाकर रहते थे। इन्होंने समाज की भलाई के लिए कई स्थानों पर कमरे, स्कूलों में कमरे व एक कुंआ बनवाया, हरिद्वार में गुरू आत्मानंद जी के आश्रम में एक बड़ा हॉल बनवाया। प्रेम कुटी के पास ही एक बहुत बड़ी सार्वजनिक धर्मशाला बनवाई।

श्री श्री 1008 श्री सेवाराम जी महाराज : आपका जन्म बालोतरा, राजस्थान में प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार,(सिंघल गौत्री) के यहां हुआ। आपने गुरू विरमाराम जी महाराज से वैराग्य की दीक्षा ली। आप चोंच मंदिर के गादीपति हुए। आपका जीवन मानव सेवा व प्रभु राम की भक्ति में बीता। आपने अनेक धर्माथ कार्यों का आयोजन किया, आपका नाम एक सिद्ध व प्रसिद्ध संतों की श्रेणी में आता है।

महान् अग्रविभूति संत श्री श्री 1008 स्वामी श्री हरिदास जी महाराज : आपका जन्म बालोतरा, राजस्थान में वि.सं. 1969 को श्री बांकीदासजी अग्रवाल

(गर्ग गौत्री) के यहां हुआ। आपने अपने गुरू संत श्री सेवाराम जी महाराज से सं 1983 को वैरागी दीक्षा ली। वि सं 2010 में आप चोंच मंदिर के गादीपति हुए। आपने 70 वर्ष तप, तपस्या, त्याग एवं सीताराम स्मरण करते हुए परोपकारमय जीवन व्यतीत किया। वि सं 2052 को आप साकेत धाम पधारे। आप एक सिद्ध संत थे। आपने बालोतरा में भव्य कांच का श्री सीताराम चोंच मंदिर बनवाया।

श्री 1008 जगत गुरुवर काशी पीठाधीशवर स्वामी रामशरणाचार्य जी महाराज : आपका जन्म बालोतरा, राजस्थान में स्व. रामस्वरूप जी आजाद, सिंघल गौत्री परिवार में हुआ। आपने काशी में सीताराम काशी पीठ का निर्माण करवाया। आपकी विद्वता से प्रभावित होकर काशी पंडित सभा ने आपको सार्वभौम भगवत रत्न की उपाधि से सम्मानित किया। आपकी गणना हिंदू धर्म के श्रेष्ठ आचार्यों में होती है। आप वैष्णव रामानंद संप्रदाय में श्री हरिदास जी महाराज से संवत् 2032(1975) में दीक्षा लेकर संन्यासी बने। आप रामानंद संप्रदाय श्री सीताराम चोंच मंदिर,बालोतरा के गादिपति भी रहे हैं। आप अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष–अ. भा.संत परिषद, केंद्रीय मार्गदर्शक – विश्व हिंदू परिषद, अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष व संस्थापक–रामशरण मिशन, अध्यक्ष– अखिल हिंदू रक्षा समिति, मानद मार्गदर्शक – अ.भा.गोरक्षा संघ, संस्थापक–संस्कृत वैदिक गुरूकुल व योगालय आदि अनेक संगठनों से जुड़े हैं। अनेक देशों में आपने धर्म प्रचार का कार्य किया है। 1987 में नेपाल में आयोजित विश्व हिंदू परिषद की ओर से आपने धर्माचार्यों का नेतृत्व किया।

बाबा बालमुकुंद जी महाराज : ब्रह्मलीन महाराज जी का जन्म अग्रवाल परिवार में संवत् 1540 को मेरठ में हुआ। कहते हैं कि आप सिद्ध पुरूष थे, आपको मृत्यु से पूर्व मां अन्नपूर्णाजी के दर्शन हुए, आपको हनुमान जी ने भी दर्शन दिए। आपने अपने तप के प्रभाव से अनेक बार अनहोनी को होनी में बदल दिया व अपनी चमत्कारिक शक्तियों का परिचय दिया। आपका स्थान एक सिद्ध स्थान है। हजारों लोग आपकी समाधि

के दर्शन करने जाते हैं। आपके संबंध में अनेक चमत्कारिक सत्य कथाएं प्रचलित हैं। एक बार भंडारे के लिए घी कम पड़ गया तब आपने कहा कि जाओं गंगा जी से कर्ज ले आओ, जब गंगाजल को कड़ाहों में डाला गया तो वह देशी घी बन गया।

संतदास : सुप्रसिद्ध संत दादू दयाल के 52 शिष्यों में से एक। चमड़िया अग्रवाल वैश्य। आपने 2000 अनुष्टुप छंदों में वाणी की रचना की।

नैष्टिक ब्रह्मचारी श्री केशवानंद जी महाराज (अग्रविभूति महंत जी) : आप अग्रवाल वंश में जन्मी महान् विभूति हैं। जग प्रसिद्ध ऐतिहासिक श्री शुक्रतीर्थ (शुक्रताल) में संस्थापित हनुमतधाम के आप महंत हैं।

स्वामी जीवयोगी जी महाराज : आप परमार्थ निकेतन की विशिष्ट विभूतियों में से एक हैं। आपने परमात्मा दर्शन, धर्म, योग आदि के नाम से अनेक धार्मिक पुस्तकों का सृजन किया। आपने सत्संग व प्रवचनादि के माध्यम से धर्म प्रचार में सहयोग दिया। आप उच्च शिक्षित हैं व महाविद्यालय में इंजीनियरिंग व टेक्नोलोजी के विभागाध्यक्ष रहे। मानवमात्र को धर्मसंदेश देने के लिए व सांसारिक सुखों का त्याग कर आपने संन्यास धारण किया। आप भागवान कृष्ण को अपना आराध्य मानते हैं। अग्रवाल होने के नाते महाराजा अग्रसेन के सिद्धांतों से विशेष प्रेम रखते हैं व अग्रोहा को भी आपने अपने आध्यात्मिक प्रेरणा का केंद्र बिंदु बनाया। आप परमार्थ निकेतन में विराजते हैं।

अवतारी बाबा गंगाराम जी : आपका जन्म झुंझनु के गोयल गोत्री अग्रवंशी परिवार में वि.सं. 1952 श्रावण शुक्ला दशमी को हुआ। युवावस्था में बाराबंकी जिले में कल्याणी नदी के तट पर आप आश्रम बनाकर धर्म साधना करने लगे और 42 वर्ष की आयु में आप ब्रह्मलीन हो गए। कहा जाता है कि आपके श्रीमुख से निकली वाणी निष्फल नहीं होती थी। आपकी प्रेरणा से सीकर–लोहारू मार्ग पर भव्य पंचदेव मंदिर का निर्माण करवाया गया। मंदिर के गर्भगृह में मंदिर के संस्थापक श्री

देवकीनंदन अग्रवाल की मूर्ति लगी है।

संत पूनम देवी जी (अग्रवाल) : विदर्भ की मीरा के नाम से ख्याति प्राप्त व विख्यात संत दरियाव जी महाराज द्वारा स्थापित रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर सुप्रसिद्ध संत हरिनारायण जी की आप शिष्या हैं तथा संन्यास की दीक्षा भी आपने इन्हीं से ली। आप रामकथा के माध्यम से लोगों के हृदय में भक्ति जगाने का प्रयास कर रही हैं। आपने एम कॉम की शिक्षा प्राप्त करके संन्यास ले लिया। आपने बताया कि सत्संग से प्रभावित होकर आपने संन्यास लिया ।

गृहस्थ संत बाबू रामस्वरुप गुप्ता : राधा स्वामी संत भिवानी वाले। आपका जन्म रामनवमी को सन् 1896 में हुआ तथा स्वर्गारोहण 12 अगस्त 1966 को हुआ। श्रृद्धालु राधास्वामी सत्संग भक्तजनों ने बाबू साहब की स्मृति में मोक्षधाम, चांदपोल – जयपुर में इनके समाधि स्थल के पास एक सत्संग भवन का निर्माण करवाया है।

1008 श्री रामशरण दास जी महाराज : आपके बचपन का नाम रामस्वरूप जौहरी था। जोधपुर के जौहरी (अग्रवाल) परिवार के स्व0. सेठ श्री रामधन जी जौहरी के चार पुत्रों में आप ज्येष्ठ थे। आपका विवाह 16 वर्ष की आयु में हुआ आपका जन्म संवत 1990 में हुआ तथा मोक्ष संवत् 2000 में हुआ। आपने संत श्री 108 श्री शांतेश्वर जी महाराज की प्रेरणा से वर्ष 1996 में पत्नी के साथ संतरूप धारण किया। संन्यास के बाद आप दिनरात ईश्वर के भजन–ध्यान में लीन रहे।

जोधपुर से ही और महिलाएं संत हुई हैं जिनमें प्रमुख हैं – श्री गंगाराम जी महाराज, श्री भगवानदास जी महाराज ।

परम श्रद्धेय श्री रामकृष्ण जी महाराज : आप अवधूत वैरागी समाधिस्थ, गीता पाठी, ब्रह्मनिष्ठा, शांति परमहंस महात्मा थे। आपने 20 वर्ष तक मौन रखा और दुखी व पीड़ित निर्धन प्राणियों पर करूणा करके उनके

भविष्य के बारे में प्रश्न करने का पूरा अवसर दिया। आप वचन सिद्ध, ईश्वर तुल्य महात्मा थे। आपका जन्म संवत् 1942 में जोधपुर नगर के प्रतिष्ठित अग्रवाल परिवार श्री हरिदास जालानी के यहां हुआ। आप पदमासन लगाए हुए जन्में थे। आप 1994 में गृहस्थ जीवन त्याग कर महात्मा बने। संवत् 2014 को आप परमधाम पधारे।

श्री केशवानंद (केदार जी) महाराज : आपका जन्म सन् 1902 में अग्रवाल जाति के कंदोई परिवार में श्री धूताराम व माता श्रीमती कीकीबाई अग्रवाल के यहां हुआ था। जन्म के समय ज्योतिषियों ने कहा कि बालक के राजयोग बनता है तथा उच्च कोटि का वैराग्य योग है। आपकी पत्नी भंवरी बाई (संत भगवान जी महाराज) जो सिद्ध संत योगीराज परमहंस रामकृष्ण महाराज की एकमात्र पुत्री थीं ने भी अपने पति के शांत होने के बाद संन्यास ले लिया। आपने भक्तों के कष्ट दूर किए तथा भक्ति की सरिता निरंतर बहाई। अनेक भक्तों के कार्य आपने सिद्ध किए। आप 1976 में मोक्षधाम पधारे।

अग्र नागा बाबा श्री सीताराम दास निर्मोही : आप नागा बाबा आश्रम बाड़मेर के संस्थापक थे। आपका जन्म भरतपुर (राजस्थान) के गर्ग गोत्री अग्रवाल परिवार में हुआ। आपने बचपन में ही घरबार त्याग कर संन्यास धारण कर लिया। 2013 में आप गोलोकवासी हुए।

प्रो. जी. डी. अग्रवाल उर्फ डा. स्वामी ज्ञानस्वरूप आनंद जी महाराज : (मां गंगा के सच्चे पुरोधा) – आप महान् संत थे। मां गंगा के अनन्य भक्त। आपने केलीफोर्निया में पर्यावरण इंजीनियरिंग में पी एच डी की। आप महात्माआ गांधी चित्रकूट विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग विभाग के अध्यक्ष रहे, बांधों के कारण हरिद्वार में जब गंगा का पानी कम होने लगा तथा मां गंगा में फैले प्रदूषण के कारण आपने अनशन किया। आपके प्रयासों के फलस्वरूप गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित कर दिया गया। अनशन के दौरान ही आपका स्वर्गवास हो गया।

ब्रजेश्वरी देवी : महान् संत जगदगुरू कृपालु जी महाराज की शिष्या एवं देश के सभी भागों में धर्म प्रचार।

धर्ममूर्ति सुश्री बृजगोचरी देवी : महान् संत जगदगुरू कृपालु जी महाराज की शिष्या एवं प्रचारिका। आप अग्रवाल समाज की महान महिला संत हैं। आप लखनऊ विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र से स्नात्कोत्तर हैं ।

भक्त ललित किशोरी व ललित माधुरी जी : सखी संप्रदाय के अनुयायी तथा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं के अमर गायक – दोनों भाई भक्ति रस के सख्य भाव के परम मर्मज्ञ थे। आपने जीवन के अंतिम समय तक राधा रानी और नंदनंदन श्रीकृष्ण के सौंदर्य, माधुर्य और सरस तथा चिन्मय प्रेम से ओतप्रोत वृंदावन के रमणीय भागवत के लिए कुंज मंडल में निवास कर रसब्रह्म की उपासना की। आपका जन्म लखनऊ के गोविंद लाल जौहरी के यहां हुआ, आपका बचपन का नाम शाह कुंदन लाल व शाह फंदन लाल था। आपके पिता को लखनऊ के नवाब ने शाह की उपाधि प्रदान की। आपने अपने ज्येष्ठ पुत्र की याद में राधारमण मंदिर बनवाया। भारतेंदु हरीशचंद्र जी ने लिखा है कि दोनों भाईयों की राम–लखन की जोड़ी थी। दोनों कृष्ण भक्त थे। दोनों भाईयों की जोड़ी भगवान की प्रेम लीलाओं का गुणगान करने लगी। आपने 10,000 से अधिक पदों की रचना की। भगवान श्री कृष्ण ने आपको दर्शन दिए। दोनों ने राधारमणीय गोस्वामी राधागोविंद जी से दीक्षा ली। संवत् 1917 में उन्होंने ललित कुंज नाम से मंदिर बनवाया वृंदावन में करोड़ों रूपयों की लागत से प्रसिद्ध शाहबिहारी जी के मंदिर का निर्माण करवाया।

भक्त रामशरण दास : संत साहित्य के प्रसिद्ध लेखक – आपका जन्म उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद के ग्राम बझैड़ा में 6 मार्च 1915 को हुआ। आपके पिता श्री नारायण दास अग्रवाल एक समृद्ध जमींदार थे। आपने पिलखुआ के ठाकुर द्वार में स्वामी श्रीकृष्ण बोधाश्रम का 1933 में शिष्यत्व ग्रहण किया। आपने उड़िया बाबा से भी ज्ञान प्राप्त किया।

आप श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, जयदयाल गोयंदका व पं. मदनमोहन मालवीय जी के संपर्क में आए। आपने उड़िया बाबा के कहने पर विवाह किया। स्वामी कृष्ण बोधाश्रम जी, पूज्य करपात्री जी महाराज आदि की प्रेरणा से आप जीवनभर सनातन धर्म के प्रचार में लगे रहे। आपके लेख कल्याण में भी पर्याप्त मात्रा में छपे तथा आपके द्वारा पुनर्जन्म की सत्य घटनाएं अत्यंत लोकप्रिय हुईं। भक्त रामशरण दास जी ने पिलखुआ में एक संग्रहालय की स्थापना की जो अब एक दर्शनीय स्थल बन चुका है। श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने इस **विश्व सिद्ध संग्रहालय** की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। आपके सुपुत्र स्वतंत्रता सैनानी श्री शिव कुमार गोयल थे जो खुद प्रसिद्ध साहित्यकार, कहानीकार व लेखक थे।

रतनचंद जी अग्रवाल (एक महान् संत) : आपका जन्म 8 जुलाई को पंजाब के हिम्मतपुरा ग्राम जिला मोगा में हुआ। आप एच टी कॉलेज बरनाला में प्रोफेसर थे, आध्यात्मिक जिज्ञासा जाग्रत होने पर पद से त्याग पत्र देकर सत्य की खोज में निकले। भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करते हुए आपने चित्रकूट को अपना तप क्षेत्र बनाया। श्री ओम प्रकाश अग्रवाल के निवेदन पर आपने किशनपुर स्थित स्वामी चैतन्या तपस्थली लक्ष्मी कुंवर मंदिर में स्थित भूगर्भ कक्ष को अपना तप स्थान बनाया। आपने अपने श्री मुख से जनकल्याण हेतु विभिन्न विषयों पर प्रवचन दिए हैं।

प्रसिद्ध कथावाचक भाई रवि जी : राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि जोधपुर में आध्यात्मिक साधना करते हुए देश के विभिन्न क्षेत्रों में हर वर्ग के लोगों के लिए भाई रवि जी महाराज श्रीमद्भागवत कथा के माध्यम से आध्यात्म की राह दिखा रहे हैं। भाई रवि जी अग्रवाल (सिंघल) का जन्म जोधपुर में सन् 1984 को श्री महेशचंद्र जी अग्रवाल के यहां हुआ। बचपन से आध्यात्म की राह को अपना लक्ष्य बना भारत के महान् संतों का सत्संग प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से प्राप्त किया। जिनमें सेठ जयदयाल गोयन्दका, भाई हनुमानप्रसाद जी पोद्दार, स्वामी रामसुखदास जी, शरणानंद जी, मुरारी बापू प्रमुख हैं। आपने बाड़मेर जिले के पचपदरा

गांव में विराजमान निर्जल, निर्मल, निराहारी संत श्री श्री 1008 महासती भगवती मां से दीक्षा ग्रहण की तथा अपनी ग्रेजुएशन पूरी करने के बाद संपूर्ण रूप से इस मार्ग में लग गए। रवि जी का कहना है कि बुराई न करना विश्व की सेवा है, भलाई करना यह परिवार, समाज और देश की सेवा है। अचाह (इच्छा रहित) होना यही अपनी सेवा है और प्रेमी होना प्रभु की सेवा है।

संन्यासी राजेश कुमार गर्ग ऊर्फ ऋषि जी : आप पंजाब के थे व पेशे से चार्टर्ड एकाउंटेंट थे। आपने 40 वर्ष की उम्र में संन्यास लिया था। चीते के हमले में आपका स्वर्गवास हो गया।

हरियाणा के **श्री चिरंजीपुरी जी (कुरुक्षेत्र)** तथा **महामंडलेश्वर जमुनापुरी जी महाराज** जो हरिद्वार में हैं भी अग्रवाल हैं।

श्री सुखराम जी रामस्नेही संप्रदाय के प्रमुख अग्रवाल संत :

श्री अंकदास जी, श्री आदिदास जी, ज्ञानदास जी, श्री रतनदास जी (कोलकाता), श्री आज्ञादास जी, महिला साध्वी निश्कर्मा जी (सूरत), श्री निर्मोही जी, महिला साध्वी निष्ठा जी, नेहचला जी, (दिल्ली) महिला साध्वी वर्तिका जी (बरेली)

आर्यसमाजी अग्रविभूतियां

आचार्य प्रेम भिक्षु जी वानप्रस्थी : आपकी गणना वैदिक परम्परा के महान् विद्वानों में होती है। आपका जन्म 1925 में मथुरा में लाला पुरूषोत्तम दास अग्रवाल के यहां हुआ। आपका बाल्यकाल विलक्षण घटनाओं से भरा हुआ था। आपने संपूर्ण देश को अपनी कर्मस्थली माना। आपने वैदिक साधना आश्रम, वैदिक मिशनरी आर्य गुरूकुल महाविद्यालय, विरजानंद ट्रस्ट व डी ए वी इंटर स्कूल की स्थापना की, इसके अलावा आपने 75 आर्यसमाजों की भी स्थापना की। आपने अपनी महान् लेखनी से विश्व को चमत्कृत कर दिया। आपने छोटे–बड़े कुल 150 ग्रंथों की रचना की। आपने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को भी बखूबी पूरा किया। अग्रवाल समाज का भी कार्य किया। आपका पूर्व नाम ईश्वरी प्रसाद प्रेम था।

तपोभूमि के नाम से आप द्वारा प्रकाशित मासिक पारिवारिक पत्रिका आज भी आर्य परिवारों में श्रद्धा व सम्मान की दृष्टि से देखी जाती है। आपने अत्यंत सरल व सरस शैली में शुद्ध साहित्य सीरीज के अंतर्गत शुद्ध रामायण, शुद्ध कृष्णायन, शुद्ध हनुमतचरित्र, शुद्ध गीता आदि लोकप्रिय ग्रंथों का श्रृजन किया। आप द्वारा सरल भाषा में लिखे छोटे छोटे ट्रैक्टस अत्यंत लोकप्रिय हुए। आपको आर्य समाज सांताक्रुज मुंबई ने वेदोपदेशक सम्मान से सम्मानित किया ।

गायत्री परिवार के संस्थापक आचार्य श्रीराम शर्मा के साथ वर्षों तक आपने कार्य किया, आर्य समाज चौक मथुरा के आप प्रधान रहे। हम बदलेंगे–जग बदलेगा, हम सुधरेंगे जग सुधरेगा, वैदिक परिवार बनाएंगे – धरती को स्वर्ग बनाएंगे, नारों के प्रणेता आचार्य जी का यह संक्षिप्तं परिचय है।

प्रो. रामसिंह : आप हिंदुत्व के पर्याय थे। आप हिंदू महासभा के अध्यक्ष भी

रहे। आप आर्यसमाजी वैदिक विद्वान थे। आप वर्षों तक पंजाब में आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष रहे। आपने आर्यसमाज का प्रचार–प्रसार किया। आप हिंदू धर्म के उपासक, हिंदू राष्ट्र के प्रबल समर्थक, हिंदू धर्म के अनन्य भक्त एवं गौरक्ष थे। आपका जन्म हरियाणा के रोहतक के पास फरमाना(माजरा)गांव में श्री इच्छाराम जी अग्रवाल, आर्य के यहां हुआ था।

स्वामी वैदिकानंद सरस्वती (जगदीश प्रसाद वैदिक) : (आर्य जगत के क्रांतिकारी संन्यासी) – आपका जन्म इंदौर के मित्तल परिवार में हुआ, आपका बचपन का नाम जगदीश प्रसाद था। आपने अपना पूरा जीवन आर्य समाज को समर्पित कर दिया था। वे महर्षि दयानंद के परम भक्त थे। आपने अपनी आयु के उत्तर काल में संन्यास ले लिया। मध्य प्रदेश के आर्य समाज के आंदोलन के आप सूत्रधार थे । हिंदू महासभा व आर एस एस जैसी अनेक संस्थाओं से आप जुड़े रहे। आप वैदिक धर्म के मूर्धन्यद विद्वान थे। आपने संन्यास की दीक्षा ली।

आर्य संन्यासी योगी सच्चिदानंद सरस्वती : 20 वीं सदी में पातंजल योग के पुनः प्रतिष्ठापक– दिल्ली के नांगलोई में आपका जन्म 10 फरवरी 1906 को हुआ। आपके पिता मास्टर प्यारे लाल जी व माता यमुना देवी थीं। प्रोफेसर राम सिंह जी के संपर्क में आने पर आप स्वामी दयानंद जी के दीवाने हो गए। संस्कृत अध्ययन के लिए आप ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर पहुंच गए। विविध शास्त्रों का अध्ययन कर राजेन्द्र नाथ शास्त्री नाम धारण कर और भारतीय महर्षियों के पद चिह्नों पर चलने का व्रत लेकर आप घर लौटे। आपके पूज्य पिताजी भी संन्यस्त हो गए। आपने युसुफ सराय में गुरूकुल की स्थापना की। उत्तर प्रदेश में आपने दो गुरूकुल स्थापित किए। आपने अनेक ग्रंथ लिखे। आपने मठ की स्थापन भी की।

लाला देशबंधु गुप्त : आप स्वतंत्रता सैनानी व परम धार्मिक विभूति थे। आर्य समाज के अग्रणी नेता के रूप में आपकी गणना होती थी।

विशंभर सहाय प्रेमी (मेरठ) : आप आर्य समाज के अनन्य निष्ठावान नेता थे। आर्य समाज शताब्दी समारोह के आप संयोजक थे। आप महान् स्वतंत्रता सैनानी थे।

पंडित क्षितीश कुमार वेदालंकार (अग्रविभूति) : आर्यसमाजी, विद्वान पत्रकार व साहित्य मनीषी क्षितीज जी वेदों की सुंदर कथा कहते हैं। आप अनेक वर्षों तक आर्यजगत के संपादक रहे।

श्री लालमन आर्य : आप आर्यसमाज की विभूति तथा विद्वान व्यक्ति थे। आपने गो सेवा तथा आर्यसमाज के प्रचार में अग्रणी भूमिका निभाई। आपके पुत्रों ने अनेक पुस्तकों की रचना की है। पुत्र गजानंद आर्य अत्यंत विद्वान व धर्मप्रेमी विभूति हैं।

पंडित शिवदयाल : आप पूरे देश में अग्रणी आर्यसमाजी विद्वानों में स्थान रखते थे। आपका जन्म मेरठ के मित्तल गौत्रीय परिवार में हुआ। आर्य समाज के महत्व पर आपने दर्जनों ग्रंथ लिखे।

अन्य धार्मिक विभूतियां और धर्म प्रचारक

गीतामूर्ति सेठ जयदयाल गोयन्दका : हिंदू सनातन धर्म की महान विभूति एवं गीताप्रेस गोरखपुर के संस्थापक – आपने 1923 में गीता प्रेस गोरखपुर की स्थापना की। आपकी प्रेरणा से ही कल्याण का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। आपने अनेक धार्मिक ग्रंथ लिखे। गीता धर्म प्रचार के लिए आपने ऋषिकेश में गीताभवन की स्थापना की ।

भाई जी हनुमान प्रसाद पोद्दार : आध्यात्मिक जगत की महान विभूति – आपका जन्म राजस्थान के राजगढ़ में भीमराज जी अग्रवाल के यहां हुआ। आपका संपर्क अनेक महान् क्रांतिकारियों से रहा। शस्त्र डकेती कांड में आपको 21 माह की जेल हुई। आपने गीताप्रेस गोरखपुर के माध्यम से अनेक धार्मिक ग्रंथों की लाखों प्रतियां छपवाकर देश विदेश में इनका प्रचार प्रसार किया। धार्मिक विषयों पर आपने अनेक लेख लिखे। कल्याण के आप आजीवन संपादक रहे। धार्मिक साहित्य को आपने भारत की अनेक भाषाओं में छपवाया। आपने भारत रत्न जैसे सम्मान के लिए विनम्रता से मना कर दिया। आपने 100 पुस्तकें लिखीं।

श्री घनश्याम दास जालान : सेठ जयदयाल जी गोयंदका के कहने पर आपने गीताप्रेस गोरखपुर का प्रबंधन संभाला तथा यह प्रबंधन इतनी कुशलता से किया कि गीताप्रेस दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करने लगी।

श्री खेमराज कृष्णा दास : लगभग 150 वर्ष पूर्व बंबई की झोंपड़ी में आपने एक छोटा सा प्रेस लगाया, धीरे–धीरे प्रगति कर वेंकटेश्वर प्रेस

लगाया। आपने धार्मिक पुस्तकें प्रकाशित कर विक्रय कीं। यह प्रेस भारतीय साहित्य, धर्म, संस्कृति दर्शन एवं इतिहास की पुस्तकें छापने के लिए देश–विदेश में प्रसिद्ध है। आपका जन्म चुरू में सन् 1851 में हुआ।

केदारनाथ गुप्ता : श्री राधामाधव संकीर्तन मंडल तथा सनातन धर्म सभा के माध्यम से प्रभुपाद वेदांत स्वामी के **हरेकृष्ण आंदोलन** (इस्कॉन) को **विश्व में फैलाने** का श्रेय आपको है। 1969 में जब हरे कृष्ण आंदोलन के प्रवर्तक अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ के संस्थापक श्री भक्ति वेदांत प्रभुपाद जी महाराज श्री कृष्ण भक्ति प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से ब्रिटेन पहुंचे तब सबसे पहले उन्हें श्री केदारनाथ गुप्ता तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कमला गुप्ता का सहयोग प्राप्त हुआ। 17 दिसम्बंर 1969 को स्वामी भक्ति वेदांत जी महाराज ने सबसे पहले अग्रवाल कुलशिरोमणि भक्त केदारनाथ जी को ही दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया । श्रीमती कमला गुप्ता ने भक्ति वेदांत जी से दीक्षा ली तो उनका नाम ''कीर्ति मां दासी'' रखा गया। वृंदावन में वेदांत स्वामी के आश्रम तथा रासबिहारी मंदिर की स्थापना में आपका सहयोग रहा। आपने गीता का अनेक भाषाओं में अनुवाद कराया तथा गीता का विश्व व्याापी प्रचार में योगदान दिया। लंदन व वृंदावन में हरेकृष्ण मंदिर बनवाने में आपका विशेष योगदान रहा। श्री केदारनाथ गुप्ता मेरठ के सुविख्यात अग्रवाल परिवार जिनको पत्थर वालों के नाम से भी जाना जाता है के यहां आपका जन्म हुआ।

परमधर्म प्रेमी राय राजा पटनीमल : **मथुरा में कृष्ण जन्म भूमि के उद्धारक** - आप राय बालगोविंद जी के पुत्र थे। आपका जन्म 1770 ई. में हुआ, आपने ईस्ट इंडिया कं. की सेवा स्वीकार की। आगे चल कर आपने राजकाज छोड़ दिया और धार्मिक जीवन व्यतीत करने लगे, इन्होंने अपने काल में अनेक धर्मशालाएं, मंदिर व जलाशय बनवाए। आपने मथुरा, हरिद्वार, गया तथा ज्वालाजी आदि अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थानों का जीर्णोद्धार करवाया। 1807 ई. में लाखों रूपये की लागत से आपने

मथुरा में शिवताल का निर्माण करवाया। मथुरा में कृष्ण् जन्म भूमि स्थान आपने अंग्रेजों से क्रय किया व मथुरा का उद्धार किया।

डा. वासुदेवशरण अग्रवाल : आपके लिखे धर्म तथा संस्कृति संबंधी ग्रंथों का अनेक विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

लाला हरदेव सहाय : भारत गौ सेवक समाज के संस्थापक। पिता लाला मुसद्दीलाल मित्तल। स्वामी करपात्री जी, गुरू गोलवरकर तथा संत प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जैसी विभूतियां आपका बहुत सम्मान करती थीं।

गौतम पोद्दार : गौसेवा के प्रति समर्पित, आपने गोरखपुर के पास विशाल गौशाला की स्थापना की। भारत सरकार ने आपको सन् 1986 में **गोपाल रत्न** की उपाधि से सम्मानित किया।

श्री जगदीश अग्रवाल : न्यूयार्क में **प्रथम हिंदू मंदिर** का निर्माण आपने करवाया।

श्री आयुष गोयल : विदेशों में धर्म एवं गीता प्रचार में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आपने एक मंदिर का निर्माण करवाया।

श्री गोपाल अग्रवाल : इस्कोन के संस्थापक स्वामी प्रभुपाद को अमेरिका में पहली बार आपने घर ठहराने तथा उनके प्रवचनों का आयोजन का श्रेय आपको है।

श्री दाऊलाल गुप्ता : मथुरा में विश्व संकीर्तन परिवार के नाम से देशभर में संकीर्तन शाखाओं की स्थापना की और संकीर्तन युग पत्रिका के संपादन के साथ–साथ हरिनाम संकीर्तन का प्रचार तथा अनेक धर्म–ग्रंथों का सृजन आपने किया। आप श्री कृष्ण चरितमानस, श्री हनुमान चरितमानस, पांचाली, गीता, रामायण, श्याम संदेशों, भक्तियों

आदि श्रेष्ठ ग्रंथों के रचियता थे।

श्री मदनगोपाल सिंघल : आपका जन्म मेरठ में हुआ। धर्मसंघ व वर्णाश्रम संघ के माध्यम से सनातन धर्म की आपने ठोस सेवा की। सनमार्ग, साप्ताहिक आदेश तथा वैश्य हितकारी पत्रिकाओं का वर्षों तक संपादन किया। आपने अनेक पुस्तकें लिखीं। आप अग्रवाल समाज के उत्थान में भी योगदान करते रहे।

श्री जानकीदास पाटोदिया : वृंदावन में भजनाश्रम की स्थापना तथा रामनाम के माध्यम से हजारों अनाश्रित बेसहारा महिलाओं के जीविकोपार्जन की व्यवस्था।

श्री बजरंगदास गर्ग एवं सुशीला देवी : श्री जगदीश प्रसाद साहूवाला द्वारा प्रवर्तित हरिबोल प्रभातफेरी के मुख्य संयोजक तथा प्रचारक। कथा व संकीर्तन तथा अन्य धार्मिक आयोजनों के द्वारा हरियाणा, पंजाब, राजस्थान आदि में धर्म प्रचार में योगदान। वृद्धाश्रम का संचालन भी आप द्वारा किया जा रहा है।

श्री मनसुखराय मोर : सनातन धर्म के वेद शास्त्रादि ग्रंथों, पुराण स्मृतियों, निरूक्त, निघटु तथा भाष्यों का प्रकाशन कर धार्मिक जनता को निःशुल्क उपलब्ध करने वाले धार्मिक जगत के विशिष्ट व्यक्तित्व।

श्री मदन लाल हिम्मतसिंका : पांडिचेरी के अरविंद आश्रम तथा ममतामयी मां के चरणों में अपनी संपूर्ण संपत्ति दान कर उत्कृष्ट धर्मभावना का परिचय आपने दिया।

सेठ रामेश्वरदास नाथानी दूधवा वाले : अपने समय के कोलकाता के प्रसिद्ध सेठों में से एक थे। आपका ध्यान भगवत भजन व दान में लगता था। आप धर्म की ध्वजा के लिए हजारों – लाखों एक क्षण में दे देते थे।

आपके यहां से कभी कोई याचक खाली हाथ नहीं लौटता था।

श्री सत्यनारायण गोयनका : विपश्यना के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आचार्य। आपका जन्म 1924 में बर्मा में हुआ था व स्वर्गवास 30 सितम्बर 2013 को हुआ। आपको धम्मचग्र विपश्यना साधना केंद्र सारनाथ के तत्वावधान में आयोजित समारोह में तिब्बती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। आपने अपना संपूर्ण जीवन विपश्यना को समर्पित कर दिया। आप भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में 25 सौ साल पुरानी इस साधना पद्धति के सूत्रधार हैं। आपके प्रयास से विश्व के सौ देशों में इस पद्धति का प्रचार हुआ। आप हजारों साधना शिविरों का आयोजन कर लोगों को लाभान्वित कर चुके हैं।

श्री सीताराम खेमका : देश के जाने माने सनातनधर्मी नेता थे। आपने गोरक्षार्थ अनेक अभियान चलाए। स्वामी करपात्री जी व जगद्गरू स्वामी कृष्णबोधारम महाराज की आप पर कृपा थी। आपके पुत्र श्री राधेश्याम खेमका धर्मशास्त्र के विद्वान हैं तथा कल्याण के सफल संपादक रहे। आपकी सेवाओं से धर्मसंघ, भारत गौसेवा समाज आदि ने प्रगति की है।

श्री रामनिवास ढंढारिया (कोलकाता) : आप धर्म संस्कृति और साहित्य के गंभीर अध्येता थे। आपने श्री माधव राधा संकीर्तन मंडल की स्थापना की। आपने कोलकाता से रस वृंदावन मासिक पत्रिका का कई वर्षों तक प्रकाशन किया।

श्री सुरेन्द्र अग्रवाल : आप महान् संत हरिबाबा के परम भक्त थे। आपने मासिक श्री हरि कथा का संपादन किया। यह पत्रिका धार्मिक जगत में बहुत लोकप्रिय हुई। आपने अनेक संतों पर विशेषांक प्रकाशित किए।

श्री प्रेमचंद गुप्ता : आप अखित भारतीय सनातन धर्म महासभा के संस्थापक हैं तथा दिल्ली में सनातन धर्म का ध्वज फहरा रहे हैं।

अग्र कथा वाचक व नाटककार

आचार्य विष्णुदास अग्रवाल : अग्रसेन भागवत व अन्य कथाओं के प्रसिद्ध वाचक। श्रीमद्भागवत गीता तथा दुर्गासप्शती के 700–700 श्लोकों व सुंदरकांड एवं हनुमान चालीसा के अंग्रेजी पद्यानुवाद का श्रेय आपको है। आपने 100 से अधिक भजनों की रचना की। दिल्ली में पहली अग्रभागवत कथा का श्रेय आपको ही है।

श्री भगवताचार्य भूपेन्द्र शास्त्री : अग्रसेन चरित्र अमृतकथा – अग्रसेन भागवत कथावाचक।

अग्रसेन कथा व्यास स्वामी प्रमोद कृष्ण जी : अग्रसेन भागवत कथावाचक।

श्री पंकज दर्पण : देशभर में महाराजा अग्रसेन जी की नाट्य लीलाओं का मंचन व प्रभु की लीलाओं का मंचन कर आध्यात्मिक व नैतिक जागरण का प्रयास।

भजन गायक

श्री विनोद जी अग्रवाल : देश–विदेश में भजन सम्राट के नाम से ख्याति प्राप्त मूलरूप से दिल्ली निवासी तथा सात वर्ष की अवस्था में ही मुंबई प्रवास। पंजाब के गुरू श्री मुकुंद जी महाराज से 1979 में दीक्षा तथा मुख्य रूप से श्रीकृष्ण व राधारानी की लीलाओं का सुमधुर स्वरों में विभिन्न राग – रागिनियों में गायन। आपकी भजन संध्याओं का

दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर निरंतर प्रसारण होता रहता है।

अल्का गोयल : भारत की मशहूर भजन गायिका, आप चाणक्यपुरी–दिल्ली की रहने वाली हैं। अगस्त 2006 में आपने भगवान कृष्ण के साथ धार्मिक यात्रा प्रारंभ कर भजन गाना शुरू किया । सभी धार्मिक चैनलों पर आपकी मधुर वाणी के भजन प्रस्तुत किए जाते हैं। आपके भजनों के अनेक एलबम टी सीरिज से रिलीज हो चुके हैं व भजनों के विडियो भी बने हैं।

डा. गोपाल अग्रवाल : भक्ति संगीत के आचार्य। नेपाल के महाराजा वीर विक्रमशाह तथा महारानी ऐश्वर्या के सान्निध्य में भजनों की प्रस्तुति आपके द्वारा की गई।

श्रीमती पूनम देवी : विदर्भ की मीरा के नाम से विख्यात व रामस्नेही सम्प्रदाय की प्रमुख धर्मपरायण व्यक्तित्व। आप सुप्रसिद्ध संत हरिनारायण जी की शिष्या हैं तथा सन्यास की दीक्षा भी आपने इन्हीं से ली। जब आप भक्ति रस से ओतप्रोत भगवान कृष्ण की लीलाओं के भजनों का गायन करती हैं तो भक्तगण भावविभोर हो जाते हैं।

मास्टर दिशिप गर्ग : संसार में सबसे कम उम्र के भजन गायक। दिशिप नैनीताल से हैं, आपने मात्र चार वर्ष की आयु में भजन गाना प्रारंभ कर दिया था, 11 वर्ष की उम्र में इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् में शामिल किया गया। अभी तक आपके भजनों के अनेक एलबम आ चुके हैं। 12 वर्ष की उम्र में ही टी सीरिज द्वारा आपके भजनों का एलबम जारी किया गया जिसका विमोचन 25.10.2008 को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। आपके पिता **श्री उमेश गर्ग** भी **भजन गायक** हैं।

रश्मि अग्रवाल : मशहूर सूफी गायिका हैं। अमीर खुसरो, मीराबाई,

बुल्लेशाह, कबीर आदि महान् विभूतियों की मर्मभेदी अभिव्यक्ति आपकी खासियत है।

नमिता अग्रवाल : उड़िया लोकगीत की महान गायक व भजन गायक कलाकार हैं।

मनेषा अग्रवाल : मशहूर भजन गायिका।

संजय अग्रवाल : भजन गायक व अन्य गीतों के गायक कलाकार। आपने महाराजा अग्रसेन पर अनेक भजन व गीत गाए हैं व सी डी बनाईं हैं ।

सुश्री संगीता गुप्ता (मोना) - (सूरत-गुजरात) : आप हर तरह के भजन गाने में निपुण हैं। आपने अनेक भजन संध्यायों में गाया है।

अग्रवाल समाज द्वारा स्थापित पुरस्कार

भारत में अग्रवाल समाज की विभूतियों के नाम पर भारत सरकार, राज्य सरकार, विभिन्न संस्थांओं के बंधुओं व समाज द्वारा दिए जाने वाले पुरस्कार राष्ट्र और समाज सेवा के क्षेत्र में सम्मान जनक स्थान रखते हैं। इनमें अनेक पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हैं तो अनेक राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त। जैसे– ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय भाषाओं का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है। आइए इन्हें जाने –

1. भारत में प्रदान किए जाने वाले सर्वोच्च पुरस्कारों में से एक की स्थापना जिंदल एल्युमिलियम लि. के संस्थापक सुप्रसिद्ध उद्योगपति व समाजसेवी सीताराम जिंदल द्वारा संस्थापित सीताराम जिंदल फाउण्डेशन द्वारा की गई। 1–1 करोड़ रूपयों की राशि के ये सात पुरस्कार निस्वार्थ भाव से कार्य करने वाले उन महान् हस्तियों एवं संगठनों को प्रदान किए जाते हैं, जिनका निम्न क्षेत्रों में विशेष उल्लेखनीय योगदान होता है।

– ग्रामीण विकास एवं निर्धनता उन्मूलन
– स्वास्थ्य एवं औषधि रहित उपचार
– विज्ञान, टेक्नोलोजी एवं पर्यावरण विकास
– शांति, सामाजिक सौहार्द भाव की स्थापना तथा विकास
– शिक्षा एवं नैतिक उत्थान
– राष्ट्रीय एकता,सुरक्षा तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान। धार्मिक सहिष्णुता में अभिवृद्धि।
– सार्वजनिक जीवन में स्वच्छता, भ्रष्टाचार एवं आतंकवाद के विरूद्ध संघर्ष।

भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार : भारतीय भाषाओं में

लिखी गई सर्वश्रेष्ठ साहित्य कृति को प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार की स्थापना सुप्रसिद्ध उद्योगपति साहू शांतिप्रसाद जैन एवं श्रीमती रमा जैन द्वारा की गई। राष्ट्र के श्रेष्ठ पुरस्कारों में इसकी गणना होती है। 5 लाख रू. की राशि, प्रशस्ति पत्र व कांस्य प्रतिमा प्रदान की जाती है।

जमनालाल बजाज पुरस्कार : सुप्रसिद्ध गांधीवादी नेता जमनालाल बजाज की पत्नी श्रीमती जानकी देवी की स्मृति में इसकी स्थापना 1978 में जमनालाल बजाज फाउण्डेशन द्वारा की गई । 5–5 लाख के चार पुरस्कार खादी, ग्रामाद्योग, रचनात्मक कार्यों ग्रामीण विकास हेतु विज्ञान व टेक्नोलॉजी के व्यवहारिक प्रयोग तथा महिला एवं बाल विकास में असाधारण योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं।

इनमें जमनालाल बजाज अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना 1988 में की गई। यह पुरस्कार विदेश में ऐसे अभारतीय नागरिक को प्रदान किया जाता है जिसका विदेश में गांधीवादी मूल्यों के प्रचार प्रसार में योगदान रहा हो । इस पुरस्कार के अंतर्गत श्री नेल्सन मंडेला को पुरस्कृत किया जा चुका है।

सेठ जमनालाल बजाज उचित व्यवहार सम्मान : एक लाख रूपये का यह पुरस्कार किसी ऐसी व्यवसायिक संस्था को प्रदान किया जाता है जो व्यापार में साफ सुथरे उचित व्यवहार के लिए प्रसिद्ध हो।

मंगला प्रसाद पुरस्कार : वि सं. 1977 में गोकुलचंद जी ने अपने भाई बाबू मंगला प्रसाद की समृति में हिंदी के मौलिक साहित्य को प्रोत्साहन देने के लिए सर्वोत्कृष्ट पुस्तक के रचनाकार को देने हेतु 1200 रु. का एक पुरस्कार स्थापित किया और इसके लिए 40000 रु. का प्रोमेसरी नोट हिंदी साहित्य सम्मेलन को प्रदान किया। इसके अलावा आपने काशी हिंदू विश्वविद्यालय को एक लाख रूपये भी दिए।

जी सिने एवार्ड : इसकी स्थापना 1988 में सुप्रसिद्ध जी नेटवर्क द्वारा भारतीय फिल्म उद्योग में श्रेष्ठता एवं उत्कृष्टता के लिए की गई। ये पुरस्कार अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिष्ठित हैं।

वैद्य लक्ष्मीनारायण गुप्त राष्ट्रीय गौ सेवा पुरस्कार : डा. चंपालाल गुप्त द्वारा स्थापित गौ सेवा एवं संरक्षण के लिए प्रदान किए जाने वाला यह राष्ट्रीय पुरस्कार है। विश्व के सबसे बड़े गौ सेवी स्वामी दशरणनंद महाराज सहित भारत के जाने माने गौसेवियों को प्रदत्त।

लक्ष्मीजपत सिंघानिया आईआईएम लखनऊ राष्ट्रीय नेतृत्व पुरस्कार : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त इन पुरस्कारों की स्थापना जे के समूह द्वारा लक्ष्मीपत सिंघानिया प्रौद्योगिकी संस्थान लखनऊ द्वारा विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में, कारोबार के क्षेत्र में तथा सामुदायिक सेवा एवं सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में श्रेष्ठतम योगदान को बढ़ावा देने हेतु की गई है।

रामनाथ गोयनका श्रेष्ठ पत्रकारिता पुरस्कार : ये सुप्रसिद्ध इंडियन एक्सप्रेस पत्र समूह द्वारा प्रवर्तित पत्रकारिता जगत के श्रेष्ठ पुरस्कार हैं, पुरस्कारों की संख्या लगभग 30 है। इनकी स्थापना 2006–07 में समूह के संस्थापक, संपादक, जुझारू पत्रकार श्री रामनाथ गोयनका की समृति में की गई। किसी पत्र समूह द्वारा दिए जाने वाले ये सर्वोच्च पुरस्कार हैं।

एम.एस.एम.ई. अवार्ड : सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री रमेशचंद्र अग्रवाल द्वारा संचालित भास्कर समूह द्वारा ये पुरस्कर उद्योग व्यवसाय में उद्यमिता, साहसिकता, गुणवत्ता, प्रेरकता, प्रतिस्पर्धा, आधुनिक तकनीक के प्रयोग आदि को प्रोत्सा्हित करने हेतु प्रदान किए जाते हैं।

भास्कर बालीवुड अवार्ड : भास्कर समूह द्वारा फिल्मों में श्रेष्ठ अभिनय,कला,संगीत आदि के लिए भास्कर बालीवुड अवार्ड दिया जाता है।

मूर्तिदेवी पुरस्कार : साहू जैन समूह द्वारा प्रतिवर्ष प्रदान किए जाने वाला 51000 रु. का पुरस्कार भारतीय दर्शन, संस्कृति व साहित्य में विशेष योगदान के लिए प्रदान किया जाता है। यह भारतीय ज्ञानपीठ से संबंधित है।

काका हाथरसी पुरस्कार : भारत के प्रसिद्ध हास्य रस के कवि प्रभुदयाल गर्ग ऊर्फ काका हाथरसी द्वारा स्थापित 51000 रु. की राशि का यह पुरस्कार काका हाथरसी ट्रस्ट द्वारा हास्य व्यंग्य के क्षेत्र में विशेष प्रतिभा प्रदर्शित करने वाले कवि को हर वर्ष प्रदान किया जाता है। काका हाथरसी ट्रस्ट द्वारा संगीत सम्मान पुरस्कार भी प्रदान किया जाता है।

दुर्गादेवी सर्राफ साहित्य पुरस्कार : 21000 रु. का यह पुरस्कार शिक्षा एवं साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान देने हेतु दिया जाता है।

रामकृष्ण डालमिया श्रीविष्णु अलंकार : श्री वाणी न्यास द्वारा स्थापित दो लाख रूपये का यह पुरस्कार काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए हर वर्ष दिया जाता है।

डालमिया श्रीवाणी पुरस्कार : हर वर्ष किसी संस्कृत विद्वान को दिए जाने वाले इस पुरस्कार में दो लाख रूपये, प्रशस्ति पत्र, श्रीवाणी की प्रतिमा और अंगवस्त्र भेंट किए जाते हैं।

निष्काम समाज सेवी सम्मान : रामेश्वारदास गुप्त एवं श्रीमती कस्तूरी गुप्ता धर्माथ ट्रस्ट द्वारा हर वर्ष दिए जाने वाले पुरस्कार ऐसे निष्काम

समाजसेवी को प्रदान किए जाते हैं जिनका जीवन के किसी क्षेत्र में समर्पित भाव से प्रशंसनीय योगदान रहा हो।

दयावती मोदी विश्व संस्कृति सम्मान : कला,संस्कृति एवं लेखन क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतू गूजरमल मोदी समूह द्वारा प्रदान किया जाने वाला 2,51000 रु. का यह श्रेष्ठ पुरस्कार है। यह पुरस्कार श्री अमिताभ बच्चन, कवि व समालोचक अशोक बाजपेयी को भी दिया जा चुका है।

साधना सम्मान पुरस्कार : हिंदी साहित्यानुरागी श्री मोहनलाल केडिया की स्मृति में इनके परिवार द्वारा 1,11000 रु. का दिया जाने वाला यह पुरस्कार हिंदी साहित्य में वृद्धि हेतु प्रतिवर्ष किसी साहित्यकार को दिया जाता है।

भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार : नई कविता के जनक सुप्रसिद्ध कवि भारत भूषण अग्रवाल की स्मृति में हर वर्ष 35 वर्ष से कम अवस्था के हिंदी कविता के युवा कवि को श्रेष्ठ कविता लेखन के लिए दिया जाता है।

माता कुसुम कुमारी अग्रवाल पुरस्कार : हिंदीतर भाषा एवं साहित्य सेवियों को विभिन्न क्षेत्रों में प्रदान किए जाने वाले श्रेष्ठ आठ हिंदी साधक पुरस्कार।

घनश्यामदास सर्राफ पुरस्कार : समाजसेवी घनश्यामदास सर्राफ की स्मृति में स्थापित यह साहित्य पुरस्कार हिंदी, मराठी, राजस्थानी, गुजराती आदि विभिन्न भाषाओं के साहित्कारों को श्रेष्ठम लेखन के लिए दिया जाता है।

बालकृष्ण गोयनका अनुवादित साहित्य पुरस्कार : कमला गोयनका फाउण्डेशन द्वारा 31000 रु. का यह पुरस्कार तमिल से हिंदी, हिंदी से तमिल में अनुवादित श्रेष्ठ कृति को प्रदान किया जाता है। इसके अलावा दक्षिणी भारत के सर्वश्रेष्ठ हिंदी प्रचारक को भी बालकृष्ण

गोयनका हिंदी प्रचार सम्मान प्रदान किया जाता है।

रामकुमार भुवालका पुरस्कार : भारतीय भाषा परिषद द्वारा रामकुमार भुवालका की स्मृति में दो पुरस्कार हिंदी भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में महत्वापूर्ण योगदान के लिए दिए जाते हैं।

श्री बनारसीदास गुप्त राष्ट्रीय गौरव सम्मान : एक लाख रूपये का यह पुरस्कार उस समाजसेवी को दिया जाता है जिसका बनारसीदास जी द्वारा स्थापित सिद्धान्तों व आदर्शों के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान रहा हो अथवा महिला शिक्षा व उसके उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका रही हो।

श्रीमती गोदावरी देवी सरावगी सम्मान : समाजसेवी हनुमान सरावगी द्वारा अपनी माताजी की स्मृति में यह पुरस्कार उस महिला साहित्य सेवी को प्रदान किया जाता है जिसका राजस्थानी भाषा के साहित्य वृद्धि में विशेष योगदान रहा हो।

राजीव गोयल पुरस्कार : अमेरिका निवासी श्री रामस्वनरूप गोयल द्वारा कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय को प्रदान की गई राशि से एक–एक लाख के तीन पुरस्कार रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान व लाईफ सांइस में विशेष उपलिब्धि के लिए युवा वैज्ञानिकों को हर वर्ष दिए जाते हैं।

सेठ गूजरमल मोदी पुरस्कार : एक लाख रूपये का यह पुरस्कार विशेष रूप से अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए प्रदान किया जाता है। डा. सतीश धवन जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक को यह सम्मान दिया जा चुका है।

प्रो. जे. के. अग्रवाल पुरस्कार : ये पुरस्कार इनकी स्मृति में अमेरिका द्वारा प्रदान किए जाते हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ऐसे युवा वैज्ञानिकों को दिये जाते हैं जिन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में स्थाई उपलब्धि हांसिल की हो।

सतपाल मित्तल पुरस्कार : नेहरू सिद्धात केंद्र न्यास द्वारा अपने संस्थापक श्री सतपाल मित्तल जिन्होंने समाज सेवा का कार्य किया – की स्मृति में एक लाख रूपये का यह पुरस्कार उस समाजसेवी को प्रदान किया जाता है जिसका नेहरू जी द्वारा प्रतिपादित मूल्यों में विश्वास हो तथा प्रचार–प्रसार में रहते हों।

महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय पुरस्कार : अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा उन लोगों को दिया जाता है जो अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल के प्रचार–प्रसार, समाज संगठन, धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, समाज सेवा आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया जाता है।

सेठ द्वारिका प्रसाद सर्राफ राष्ट्रीय पुरस्कार : हर वर्ष समाज सेवा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए समाजसेवी व समाजसेवी संस्था को दिया जाता है।

दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान : 2,51000 रु. का यह पुरस्कार मोदी समूह द्वारा हिंदी काव्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए दिया जाता है।

स्थापत्य कला पुरस्कार : जे. के. सीमेंट द्वारा स्थापत्य कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं। एक–एक लाख के दो पुरस्कार सर्वोच्च आर्किटेट ऑफ द ईयर अवार्ड, कला की दृष्टि से श्रेष्ठम भवन अथवा पुल का डिजायन बनाने वाले, चार पुरस्कार कम लागत में गृह निर्माण, ग्रामीण वास्तुकला, पुल, ओवरब्रिज, यातायात टर्मिनल क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किए जाते हैं।

फिल्म फेयर एवार्ड : इन पुरस्कारों की स्थापना सुप्रसिद्ध टाइम्स ऑफ इंडिया समूह द्वारा अपनी फिल्म पत्रिका फिल्म फेयर के नाम पर 1954 में हिंदी एवं भाषाई फिल्मों में कला एवं तकनीक को प्रोत्साहन

देने के लिए की गई विभिन्न श्रेणियों में तीन दर्जन से अधिक पुरस्कार इसमें दिए जाते हैं।

महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय सम्मान : दो लाख रूपये का यह पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार द्वारा महाराजा अग्रसेन की स्मृति में सामाजिक सदभाव, समरसता व राष्ट्र सेवा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि के लिए हर वर्ष दिया जाता है।

डा. राममनोहर लोहिया पुरस्कार : हिंदी के विकास में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया जाता है।

जी.टीवी शताब्दी सम्मान : इनमें सात पुरस्कार ऐसे महान व्यक्तियों को दिये जाते हैं जिनकी दृढ़ इच्छा शक्ति ने देश विदेश के लाखों करोड़ों लोगों को प्रभावित किया।

ईश्वरदास जालान, डा. राममनोहर लोहिया एवं जमनालाल बजाज पुरस्कार : 51000 रु. की राशि के ये पुरस्कार इन विभूतियों की स्मृति में दिए जाते हैं।

भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार राष्ट्र सेवा सम्मान : हर वर्ष इनकी समृति में एक लाख रूपये का यह सम्मान राष्ट्र के नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान कि लिए दिया जाता है।

टाईम्स एवार्ड : टाइम्स ऑफ इंडिया(साहू जैन) द्वारा स्थापित यह पुरस्कार एक नागरिक के रूप में समाज के प्रति दायित्व व कर्तव्य को प्रोत्साहित करने के लिए दिया जाता है।

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी पुरस्कार : दैनिक नवज्योति के पूर्व संपादक, स्वतंत्रता सैनानी व अग्रगौरव कप्तान दुर्गा प्रसाद चौधरी की स्मृति में पत्रकारिता के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान कि लिए अखिल भारतीय एवं

राज्य स्तर पर ये पुरस्कार दिए जाते हैं।

बाबू बाल मुकुंद गुप्त पुरस्कार : हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पत्रकारिता एवं साहित्य में उल्लेखनीय सेवाओं हेतु 15–15 हजार के दो पुरस्कार अग्र गौरव गुप्त जी की स्मृति में दिए जाते हैं।

रतन ज्योत अग्रवाल स्मृति पुरस्कार : समाज सेविका स्व. रतन ज्योत अग्रवाल की यादगार में रतन ज्योत समृति ट्रस्ट हर वर्ष पत्रकारिता, साहित्य व संस्कृति और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दो नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान करता है। श्रीमती रतन ज्योत ब्यावर के समाज सेवी स्व. सेठ रामेश्वर लाल अग्रवाल की धर्म पत्नी थीं।

कुंतीदेवी गोयल (साहित्य के लिए) : जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री सतीशचंद्र गोयल ने अपनी धर्मपत्नी कुंती देवी गोयल की स्मृति में यह अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार की स्थापना की थी। वर्ष 2000 के पुरस्कार के लिए उपनिषद विषय पर रचनाएं आमंत्रित की गईं। 1999 का पंचम कुंती गोयल अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार अमेरिका के डा. डेविड फ्रोली (पंडित वामदेव शास्त्री) को दिया गया। पुरस्कार में पांच सौ डालर थे। 1999 में विषय था ''वेदों में विज्ञान''।

इन पुरस्कारों के अलावा

रामप्रसाद पोद्दार स्मृति पुरस्कार, भगवानदास गोयनका पुरस्कार, मंगलाप्रसाद सेक्सरिया, राधामोहन गोकुल जी, हजारीमल डालमिया, श्री राममूर्ति प्रतिभा अलंकार, जयदयाल डालमिया, सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया, तारादेवी राष्ट्रोत्थान, शिवचन्द्र भरतिया, रत्नाकर, केशवदेव गोयनका, महेन्द्र जाजोदिया, वासुदेव डालमिया, जानकीदेवी बजाज, राजेश स्मृति, मामराज अग्रवाल, लाला लाजपतराय, रघुनाथराय सर्राफ, दीपचंद जैन साहित्य पुरस्कार, नरसिंगदास गुप्ता पुरस्कार,

वासुदेव डालमिया पुरस्कार, रूपरामका लोकगीत पुरस्कार, आदि पुरस्कार विभिन्न संस्थाओं व ट्रस्टों द्वारा दिये जाते हैं। इसके अलावा और भी पुरस्कार हो सकते हैं।

अग्रवाल समाज के प्रतिष्ठानों द्वारा समय–समय पर विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन कर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया जाता है –

1. अखिल भारतीय गुजरमल मोदी स्वर्णकप हॉकी प्रतियोगिता

2. सर शादीलाल मेमोरियल हॉकी प्रतियोगिता

3. श्रीराम हॉकी प्रतियोगिता

4. रमा जैन ब्रिज प्रतियोगिता

5 .बी डी गोयनका ट्राफी ।

कला संग्रहालय

दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान संग्रहालय : कला के क्षेत्र में दीवान बहादुर राधाकृष्ण जालान व उनके संग्रहालय का नाम प्रमुखता से जाना जाता है। पटना–बिहार में इस संग्रहालय की स्थापना की गई है। इसमें 7वीं से लेकर 17वीं सदी तक के चीनी मिट्टी के बर्तन, प्याले, सुराहियां तथा तिब्बती, हिंदी, मैथिली, संस्कृत के हजारों हस्थलिखित ग्रंथों का विशाल संग्रह है। सुनहरे खूबसूरत अक्षरों में लिखी कुरान एवं गुलिस्तां की प्रति उपलब्ध है। कुरान जिस पर औरंगजेब व उसकी बेटी जेबुन्निसा के हस्तारक्षर हैं। कई सौ वर्ष पुराने राजस्थानी संगीतज्ञों के वाद्ययंत्रों के भंडार के साथ–साथ मुगलकालीन बर्तन भी हैं। विशेष पत्थर संग ए सब से बनी अनगढ़ मूर्तियां, हाथी दांत की बनी टीपू सुल्तान की पालकी तथा नेपोलियन तृतीय का शानदार पलंग यहां की शान हैं। अष्टधातु तिब्बती हाथी घंटा जिसके बजने से अनोखी ध्वनि निकलती है यहां उपलब्ध है।

पद्मविभूषण रायकृष्ण दास : आपने हिंदू विश्वविद्यालय में भारत कला भवन की स्थापना की। यह देश के सबसे बड़े संग्रहालयों में से एक है। आपने मूर्तिकला, भारत की चित्रकला व भारतीय चित्र चर्चा नामक पुस्तक लिखी।

साहू पुरातत्व संग्रहालय : सुप्रसिद्ध साहू जैन परिवार द्वारा देवगढ़ (उत्तर प्रदेश) में साहू पुरातत्व संग्रहालय एवं साहू भारतीय कला जैन अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई जहां जैन मूर्तियों एवं ग्रंथों का अद्भुत संग्रह है साथ ही विद्ववानों के लिए शौध व उच्च अध्ययन की व्यवस्था है।

पोद्दार हवेली संग्रहालय : सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों के लिए संकलित आनंदीलाल पोद्दार की स्मृति में कांतिकुमार पोद्दार द्वारा उनकी हवेली

में संग्रहालय की स्थापना की गई जिसमें ऐतिहासिक महत्व के ग्रंथों, बहियों ,वसनों, चित्रों तथा प्राचीन वस्तुओं का बेजोड़ संग्रह है।

मूर्ति संग्रहालय : सेठ सूरजमल जालान की प्रेरणा तथा सहयोग से सीकर में स्थापित संग्रहालय जिसमें हर्ष पर्वत के देवी – देवताओं की प्राचीन मूर्तियों का संग्रह है।

मेहनसर संग्रहालय : तोताराम शिवदत्तराय मसकरा मेहनसर (अलसीसर) की हवेली में परम्परागत दुर्लभ चित्रों का संग्रहालय है। इस संग्रहालय में स्वर्णनाक्षरों में लिखित रामायण तथा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से संबंधित चित्रों का भी शानदार संकलन है।

जगदीश व कमला मित्तल म्यूजियम : हैदराबाद में स्थित इस म्यूजियम में अमूल्य भारतीय कला का अनमोल संग्रह है। मिनियेचर पेंटिंग्स ड्राईंग्स, टैक्सटाइल्स, मेटलवेयर, टेराकोटा, लकड़ी पर खुदाई, कांच हाथीदांत और मुगल पीरियड की धातुओं के बर्तन भी हैं। इसमें प्रथम शताब्दीं ईसा पूर्व से 1990 ईस्वी तक की रैंज है। इस म्यूजियम में माननीय राष्ट्रपति, मुख्यमंत्री व अंतरराष्ट्रीय कला संग्राहक व स्कालर्स, बेरार की महारानी, जेलीन केनेडी आ चुके हैं। इसके लिए मित्तल को पद्श्री अवार्ड भी मिल चुका है। मित्तल ने पेंटिंग व कला की औपचारिक पढ़ाई शांतिनिकेतन में की।

अभिषेक पोद्दार : आप भारत में प्रसिद्ध कला संग्राहक हैं। बैंगलुरू में विशाल कला संग्राहलय की स्थापना तथा प्राचीन व नवीन मूर्तियां, पेंटिंग्स,रेखाचित्र, प्रसिद्ध कलाकारों की मंहगी कलाकृतियां आदि का संग्रह।

विश्व स्तरीय लाइब्रेरी : इंदौर, मित्तल कार्प लिमिटेड व डेली कॉलेज द्वारा 50,000 पुस्तकों की एक विश्व स्तरीय लाइब्रेरी रमेश मित्तल ऐजूकेशन सेंटर द्वारा शीघ्र ही खोली जा रही है। यहां पूरे विश्व की पुस्तकें पढ़ने

को मिलेंगी। प्रारंभ में 2.5 करोड़ रूपये का निवेश किया जा रहा है। इसकी बिल्डिंग 34000 वर्ग फीट में बनाई जा रही है। इस लाइब्रेरी में विश्व इतिहास, कला व संस्कृति की दुर्लभ पुस्तकें भी उपलब्ध करवाई जा रही हैं। मित्तल ने स्वयं 200 पुस्तकें दान की हैं।

मारवाड़ी पुस्तकालय : मारवाड़ी सार्वजनिक पुस्तकालय चांदनी चौक, दिल्ली में हल्दीराम के बराबर में स्थित है। इसकी स्थापना 1915 में सेठ केदारनाथ गोयनका ने की थी। वे दिल्ली क्षेत्र के आठवें अध्यक्ष थे। सेठजी ने एक ऐसे संस्थान की आवश्यकता महसूस की जिसमें शिक्षा का प्रसार हो और जनसाधारण को शीघ्र सामयिक समाचार प्राप्त हो सकें। उद्देश्य यह भी था कि पराधीनता के उस वातावरण में स्वाधीनता आंदोलन की गतिविधि भी यहां से चलाई जा सके। स्थापना के बाद से ही राष्ट्र के शीर्ष राजनेता, बुद्धिजीवी, शिक्षाविद और समाज सेवियों का यह विजिट का केंद्र हो गया। इसकी आगन्तुक पुस्तिका में महात्मा गांधी, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, मदन मोहन मालवीय, मैथिलीशरण गुप्त, डा हरिवंशराय बच्चन आदि के हस्ताक्षर मौजूद हैं। 16 साल बाद 1931 में सेठ जी ने इसका प्रबंध मारवाड़ी समाज के युवा एवं कर्मठ कार्यकताओं को सौंप दिया। लाईब्रेरी में दुर्लभ पुस्तकों, पत्रिकाओं व जर्नल्स का संग्रह है, साथ ही 18वीं व 19वीं सदी की कई अंग्रेजी की पुस्तकें हैं। इसमें करीब 32000 पुस्तकों, 2000 पत्र–पत्रिकाओं, 700 संदर्भ ग्रंथों व 21 पांडुलिपियों का संग्रह है। दिल्ली विकास प्राधिकरण ने 1994 में पुरातन भवन एवार्ड भी दिया। 1953 से इसका संचालन मारवाड़ी चौरिटेबिल ट्रस्ट कर रहा है, वर्तमान में ट्रस्ट के अध्यक्ष अरूण कुमार सिंघानिया हैं व सचिव शंकर लाल गुप्ता हैं।

बाबू सीताराम साह : **(श्री काशी अग्रवाल समाज के संस्थापक)** : जन्म सन् 1877 में। 1901 में जम्मू और कश्मीर के महाराज श्री प्रताप सिंह बहादुर के प्राईवेट सैकेट्री रहे। आप सेंट्रल हिंदू कॉलेज व बनारस विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रशासनिक पदों पर रहे। प्राचीन चित्रों से

इन्हें विशेष अनुराग था। मुगल चित्रकारी के ये बड़े भारी विशेषज्ञ थे, अनेक उच्चकोटि के प्राचीन चित्रों का इनका अपना संग्रहालय है।

राजकुमार अग्रवाल : (चांदी की अद्‌भुत कलापूर्ण वस्तुओं का ऐतिहासिक संग्रह) : आपके संग्रहालय में चांदी के 500 बहुमूल्य, प्राचीन, ऐतिहासिक और अद्वितीय आभूषणों, बर्तनों और उपयोगी वस्तुओं का खजाना है। यह धरोहर न केवल चांदी जैसी मूल्यवान धातु के रूप में महत्वपूर्ण है बल्कि इसलिए भी कि वह इन वस्तुओं को किसी समय प्रयोग किए जाने का इतिहास को भी बयान करती है, यह वस्तुएं मध्य कालीन और आधुनिक इतिहास के जमींदारों, नवाबों और संपन्न लोगों के शानदार रहन–सहन का लेखा–जोखा प्रस्तुत करती हैं। इसके अतिरिक्त आपके पास कोणार्क के भव्य रथ मंदिर, दक्षिण भारतीय चांदी की टोपी, मथुरा व वृंदावन की पिचकारी, भगवान पशुपति के शिवलिंग का कवर, इंदौर के होलकर राजघराने का छत्र, पुराने जमाने की इत्रदानियां, फोटोफ्रेम, सिक्के आदि भी शामिल हैं। आज आपके पास लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड और विश्व रिकार्ड भी है।

चित्रकला के क्षेत्र में योगदान

रविन्द्र गुप्ता : आपने सर्वप्रथम नेताजी सुभाषचंद्र बोस का 6 फीट का रेखाचित्र 1997 में अपने खून से बनाया तत्पश्चात् 89 अन्य शहीदों एवं राष्ट्र भक्तों के चित्र भी अपने रक्त से ही बनाए। जिन महानुभावों ने भी इसे देखा वो अभिभूत हो गया। संसार में शायद यह ऐसा अनूठा प्रयास है कि सारे चित्र अपने रक्त से बनाए गए हैं। इन चित्रों तथा शहीद प्रर्दशनी को स्थाई रूप देने के लिए साध्वी ऋतम्भरा जी द्वारा स्थापित वात्सल्य ग्राम में एक पृथक भवन की व्यवस्था कर इन चित्रों को प्रदर्शनी का रूप दिया गया। रवि गुप्ता के चित्र राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। रवि गुप्ता जी ने 15 पुस्तकें शहीदों पर लिखीं तथा स्वतंत्रता

सेनानी सचित्र कोश की रचना की।

वयोवृद्ध कला शिल्पी भवानी मित्तल : आप 86 वर्ष की वृद्धावस्था की उम्र में अपनी भी चित्रकला के प्रति पूरी तरह समर्पित रहे हैं। 72 साल तक आप चित्रकला को समर्पित रहे आपके चित्रों के पारखी तात्कालिक राजा महाराजा, विशिष्ठ राजनेता, समाज सेवी आदि रहे हैं। महाराजा ओरछा और महाराजा मैसूर के कला संग्रहालयों में आपकी पेंटिग को सम्मानजनक स्थान मिला हुआ है। आपके चित्रों की प्रदर्शनी का आयोजन ललित कला अकादमी (रविन्द्र भवन) में किया गया। आप लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट के पुरातन छात्र रहे हैं। आपकी कला की प्रदर्शनी सन् 1940 से लगातार देश के कई शहरों में लगी है।

रामगोपाल अग्रवाल : चित्रकारी, एनामिलिंग, मेटल इंग्रेविगे के अद्वितीय कलाकार : इनकी कला कृतियों के सौंदर्य व आकर्षण ने बीकानेर महाराजा गंगासिंह को भी मोहित कर दिया। आप बीकानेर रियासत की खास सेवा में लिए गये, बीकानेर गंगा रिसाले का चिह्न जिसमें लचकता ऊंट, मीनाकारी का फ्रेम, आपने बीकानेर टकसाल के लिए रूपये की डाई, रियासत की खास मोहर, जोधपुर राज्य के राज चिह्न, जय जंगल घर बादशाह, मंडावा, बिसाऊ के हनुमान की डाई के लेटर पैड आदि अपकी कला के नमूने थे। बुलगानिन महारानी एलिजाबैथ व जनरल बेबूर जैसे अनेक अतिथियों को दी गई सरकारी भेंट आपके द्वारा निर्मित की गई। लार्ड माउंटबेटन को दिया गया चांदी का महल इंग्लैंड में है। कला के क्षेत्र में रामगोपाल जी ने पहाड़, नदियां, नाव, हाथी, घोड़े आदि राज कन्यांओं के चित्र आदि मुंह बोली दृश्यावली उपस्थित की।

प्रोफेसर प्रमोद नारायण अग्रवाल : सूखी लकड़ियों में जान फूंकने वाले कलाकार : आप रूड़की विश्वविद्यालय के भूकंप अभियांत्रिकी विभाग के विभागाध्यक्ष रहे। लकड़ियों द्वारा कलाकृतियां बनाने की कला को ड्रिफ्ट वुड पिकपस कहा जाता है लेकिन अग्रवाल ने

अपनी इस कला को ड्राई स्टेम स्किल्पचर नाम दिया है। इसमें किसी साधारण लकड़ी या टहनी को अपने कलात्मक प्रयास से नया रूप देना पड़ता है। आपके द्वारा बनाई गई कलाकृतियों में जहां अनेक प्रमुख राजनेताओं की आकृतिया उकेरी गई हैं वहीं जनसाधारण के दैनिक क्रियाकलापों के साथ–साथ वन्य प्राणियों पर आधारित कलाकृतियां भी इसमें सम्मलित हैं। आपने बच्चों के लिए एक पुस्तक भी तैयार की है।

हनुमान प्रसाद जी पोद्दार : गीताप्रेस गोरखपुर व कल्याण के माध्यम से अनेक देवी–देवताओं एवं प्राचीन धार्मिक साहित्य से संबंधित हजारों चित्रों का निर्माण तथा उनका विशिष्ट शैली में प्रकाशन जिसे पोद्दार चित्र शैली भी कहा जाता है। इसके अलावा गीताप्रेस में चित्र गैलरी का निर्माण।

गौरव अग्रवाल : रेखांकन के विश्व प्रसिद्ध जानेमाने चित्रकार। विभिन्न देवी–देवताओं, पशु–पक्षिओं, मानवीय आकृतियों आदि के चित्रांकन तथा अमूर्त शैली के चित्रों के विशेषज्ञ।

चंद्रप्रकाश गुप्त (जयपुर) : अद्भुत कल्पना शक्ति से युक्त सृर्जनात्मक प्रवृति के कलाकार तथा प्रयोगधर्मिता द्वारा समकालीन कला जगत के लिए नए आयाम सथापित। यथार्थवादी चित्रों के विशेषज्ञ।

उमाशंकर गुप्त : सुप्रसिद्ध व्यंग्य चित्रकार। अनेक पत्र–पत्रिकाओं के व्यंग्य चित्रों का प्रकाशन। इसके साथ ही चित्रमयी गीता प्रवेशिका तथा संपूर्ण गीता चित्रांकन के लिए विख्यात।

रमेश गर्ग : माता और शिशु चित्रांकन के लिए प्रसिद्ध चित्रकार। चित्रकला को राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में योगदान।

काका हाथरसी (प्रभुलाल गर्ग) : प्रसिद्ध हास्य कवि होने के साथ–साथ

आपने 150 तैलीय चित्रों का निर्माण किया।

सुमंगला अग्रवाल : प्रसिद्ध चित्रकार। आपकी चित्रों की प्रदर्शनियों का दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, लखनऊ आदि बड़े शहरों में प्रदर्शन तथा व्यापक स्तर पर सराहना मिली।

रीमा बंसल : प्रसिद्ध भारतीय कलाकार। चित्रकारी में दक्षता प्राप्त। विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत। आपकी चित्रकला का देश के कई शहरों में प्रदर्शन।

रंगोली गर्ग : रंगोली गर्ग की पेंटिंग्स की दूसरी प्रदर्शनी 2013 में मुंबई के ताज डैकन होटल में सफलता के साथ संपन्न हुई। ये भारत में लड़कियों को मिले कम महत्व को दर्शाती हैं व ये भारतीय सुंदरता को भी अपनी पेंटिंग में दिखाती हैं। कम उम्र में ही आपने कला के क्षेत्र में काफी नाम कमाया है।

सत्यनारायण गोयल : सुविख्यात कलाविद, देश के जाने माने कलाप्रेमी, प्रेस छायाकार तथा साहित्य और समाज सेवा के लिए समर्पित।

पीयूष गोयल : आप कार्टून बनाते हैं जो विभिन्न अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं और चित्रकला (मार्डन आर्ट) में भी सिद्धहस्त हैं। अभी देश आजाद नहीं हुआ नामक पेंटिंग आर्ट गैलेरी में बहुत सराही गई। अमेरिका में भी आपकी पेंटिंग सराही गई है।

सुबोध अग्रवाल : राजस्थानी लोक कथा कोष के संग्रहकर्ता व संपादक। इस कोष के खंड दो का लोकार्पण गुजरात के राज्यपाल श्री नवलकिशोर जी ने किया था। अध्यक्षता राजस्थान के लोकनिर्माण मंत्री श्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ ने की।

राकेश अग्रवाल - आई ए एस : आप प्रशासनिक अधिकारी के साथ–साथ

एक अच्छे चित्रकार भी हैं। आपकी पेंटिंग्स की प्रदर्शनी ललित कला अकादमी , दिल्ली ने लगाई।

तरुन्ना अग्रवाल - चित्रकार : ये ऑयल पेंटिंग बनाती हैं तथा लंदन की रहने वाली हैं। हॉल ही में शत्रुघ्नसिन्हा के बेटे कुश से इनकी शादी हुई है।

अग्रवाल इतिहास के गौरवपूर्ण निर्माता

करते हैं जो अनुपम कार्य, बन जाता इतिहास है।
मस्तक धूल लगाने उनकी, झुक जाता आकाश है।।

महाराजा अग्रसेन : विश्व में सच्चे लोकतंत्र व समाजवाद के संस्थापक ''एक ईंट–एक रूपया'' के जनक।

डा. भगवान दास : **भारत रत्न** - देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित।

ऋषि लाल अग्रवाल : (हिंदी आशुलिपि – ऋषि प्रणाली के जनक) – एक अच्छी हिंदी संकेत लिपि (हिंदी : शार्टहैंड – ऋषि प्रणाली) का जनक (आविष्कारक) आपको माना जाता है।

बाबू मुकुंददास गुप्त '**प्रभाकर**' : हिंदी में रेलवे टाईम टेबल के जनक। स्वतंत्रता सैनानी व साहित्कार।

लाला श्रीनिवास दास : हिंदी के पहले उपन्यासकार। आपका परीक्षागुरू हिंदी का पहला उपन्यास था। यह सन् 1882 में लिखा गया।

बाबू गोपाल चंद्र उपनाम गिरधरदास : हिंदी भाषा के प्रथम नाटककार, नहुष के रचनाकार जो हिंदी भाषा का पहला नाटक था।

श्री बालेश्वर अग्रवाल : हिंदुस्तान समाचार समिति के संस्थापक। यह देश की पहली भाषायी संवाद समिति थी।

रायबहादुर श्री सूर्यमल शिवप्रसाद झुंझुनुवाला : ऋषिकेश (हरिद्धार) के गंगानदी पर प्रसिद्ध ''**लक्ष्मण झूले**'' के निर्माता।

सेठ सूरजमल जालान (बंसल-रतनगढ़ निवासी) : काशी में मर्णिकाघाट पर धर्मशाला व हर की पैड़ी पर श्राद्ध घाट व पुल का निर्माण करवाया।

राष्ट्ररत्न शिवप्रसाद गुप्त : महान् स्वतंत्रता सैनानी व दानवीर, काशी में विश्व के सबसे प्रथम भारतमाता मंदिर तथा काशी विद्यापीठ के संस्थापक, दैनिक आज पत्र तथा ज्ञान मंडल के संस्थापक। भारत माता मंदिर का उद्घाटन महात्मा गांधी ने किया था।

ऑनरेबुल लाला सुखवीर सिंह : हरिद्वार में विश्वप्रसिद्ध ऋषिकुल आयुर्वेदिक औषधालय के जन्मदाता, ऑल इंडिया हिंदू महासभा के संस्थापक व लंबे समय तक वैश्य महासभा के मंत्री रहे।

श्री मूंगालाल गोयनका : विश्व प्रसिद्ध मुंबई की संस्था ''भारतीय विद्या भवन'' की स्थापना की ।

अग्रवाल उपकारक : 19 वीं सदी में अजमेर से निकला यह पत्र अग्रवाल समाज का प्रथम पत्र था।

सुरेन्द्र गोयल : प्रथम एयर वाईस मार्शल, इन्हें अंग्रेज सरकार ने एम वी आई पदवी से सम्मानित किया।

रायबहादुर नौरंगराय खेतान : जयपुर राज्य के केंद्रीय कारागृह में प्रथम अग्रवाल पुलिस अधीक्षक।

लाला झमकूमल : 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सैनानी, वैश्य समाज की पहली अग्रविभूति जिन्हें अंग्रेजों ने फांसी दी।

सेठ चतुर्भुज पौद्दार - (बंसल गौत्र) : पहले मारवाड़ी व्यापारी जिन्होंने संपूर्ण देश में बीमा व्यवसाय को फैलाया।

ऑनरेबल सर शादीलाल : भारत के इतिहास में प्रथम भारतीय के रूप में किसी उच्च न्यायालय में नियुक्त होने वाले प्रथम मुख्य न्यायाधिपति।

मेजर जनरल द्वारका प्रसाद गोयल : प्रथम भारतीय जो ब्रिट्रिश सेना में मेजर जनरल बने।

सर गंगाराम : अंग्रेजी राज्य के प्रथम भारतीय सुपरीटेंडेंट। पंजाब में लिफ्ट सिंचाई योजना के जनक तथा हरित क्रांति लाने वाले प्रथम इंजीनियर। पूर्व आई. सी. एस., भारत सरकार के कैबिनेट सेक्रेट्री रहे व कई राज्यों के राज्यपाल तथा पंडित नेहरू के निजी सचिव रहे। तीन विश्वविद्यालयों के कुलपति रहने का सौभाग्य। बिजनौर, उ.प्र., निवासी।

डा. आत्माराम : भारत के महानतम् अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिकों में प्रमुख।

श्री प्रकाश : पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त तथा चार राज्यों के राज्यपाल रहे।

पद्मश्री हनुमान बक्स कनोई : आधुनिक आसाम की कामधेनु।

बाबू बालमुकुंद : गुजराती भाषा के महान् साहित्कार।

जगन्ननाथ दास ''रत्नाकर'' : हिंदी साहित्य के नक्षत्र।

केदारनाथ अग्रवाल : हिंदी के प्रगतिवादी काव्य' के आधार स्तंभ।

सेठ रायबहादुर गुजरमल मोदी : मोदी नगर (उत्तर प्रदेश) के संस्थापक।

हनुप्रसाद पोद्दार : आध्यात्मिक जगत की महान् धार्मिक विभूति।

गीतामूर्ति जयदयाल गोयन्दका : गीता प्रेस गोरखपुर के कर्मयोगी व कल्याण के संस्थापक, महान धार्मिक विभूति।

राधाकृष्ण जालान : गीताप्रेस के संस्थापक व पटना स्थित जालान संग्रहालय के संस्थापक।

विश्वम्भर सहाय विनोद जी : पत्रकारों के पितामह।

बाबू शिवप्रसाद गुप्त : राष्ट्ररत्न से सम्मानित अग्रविभूति।

लाला मटोलचंद अग्रवाल (गाजियाबादी) : बहादुर शाह जफर के अनन्य मित्र तथा अंग्रजों से युद्ध में बहादुरशाह जफर को अपने जीवन में की गई कमाई देशहित में देने वाले में दानवीर भामाशाह।

लाला हुक्मीचंद अग्रवाल : आपने बहादुर शाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त किया तथा अंग्रजों से हुए युद्ध में भाग लिया।

विष्णुशरण दुबलिश, मेरठ : महान् क्रांतिकारी – चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, असफाखउल्ला खां, राजेन्द्र सिंह लाहेड़ी, मनमथनाथ गुप्त आदि के सहयोगी तथा काकोरी कांड में अंग्रेजों का खजाना लूटने वाले।

श्रीमती तारा अग्रवाल (कानपुर) : चंद्रशेखर आजाद की जान बचाने वाली। जब आजाद इनके घर आए तब पुलिस भी आ गई। तारा जी ने आजाद को अपना नौकर बनाया और राखी की थाली सजाकर उनके हाथ में थमा कर घर से निकल गई। आपके पति श्री प्यारे लाल अग्रवाल भी महान् स्वतंत्रता सैनानी थे।

मोती लाल बगड़िया : नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सहयोगी , आपका घर आजाद हिंद फौज का कार्यालय बन गया। आपको अंग्रेजों ने गिरफ्तार

कर जेल में डाल दिया।

मास्टर अमीरचंद तथा लाला हनुमंत सहाय : 1912 के लार्ड हॉर्डिंग बम कांड के प्रमुख। अंग्रेजों ने इनकों फांसी पर लटका दिया।

सेठ रामजीदास व राजाराम गुड़वाले : 1857 की क्रांति में भामाशाह की भूमिका निभाने वाले।

लाला लाजपत राय - शेरे पंजाब : स्वतंत्रता संग्राम के महान सैनानी। साईमन कमीशन का विरोध करने वाले।

रुड़मल गोयनका : नेताजी सुभाषचंद बोस की सहायता करने वाले।

लाला हुकमचंद अग्रवाल : बहादुरशाह जफर की मदद करने के जुर्म में उनके घर के सामने अंग्रेजों ने फांसी दी।

मुरलीधर अग्रवाल (अंबाला) : 1885 में कांग्रेस की स्थापना के बाद अंग्रेजों द्वारा सबसे पहले राजबंदी।

सेठ रामप्रकाश अग्रवाल : तांत्या टोपे को अपना सर्वस्व धन समर्पित करने वाले।

जमनालाल बजाज : गांधी के पांचवे पुत्र, महान् दानवीर, स्वतंत्रता सैनानी व आजीवन कांग्रेस के कोषाध्यक्ष। स्वाधीनता आंदोलन के प्रथम भामाशाह व एशिया में सबसे बड़ी चीनी मिल के संस्थापक।

गणपत राय धानुका : आधुनिक आसाम के पितामह।

काका हाथरसी : हास्य रसावतार व हास्य कवि सम्राट।

श्री रामरिख मनहर : ठहाके बांटने वाले हास्य सम्राट।

जमना लाल बजाज : दानवीर सेठ लच्छीराम तोलाराम चूड़ीवाला – देवभाषा संस्कृत की शिक्षा व प्रसार हेतु संस्कृत पाठशालाओं व ऋषिकुल विद्यापीठ की स्थापना करने वाले ।

डा. बी. के. गोयल : भारत के प्रसिद्ध हृदयरोग विशेषज्ञ – चिकित्सा जगत में तीन नागरिक उच्च अलंकारों से सम्मानित होने का कीर्तिमान – पद्मश्री, पद्मभूषण तथा पद्मविभूषण ।

नवीन जिंदल : भारत में जन–जन तक तिरंगा फहराने का अधिकार दिलाने वाले व 300 फीट ऊंचा तिरंगा फहराने वाले अग्रणी व्यक्तित्व।

डा. रामनारायण अग्रवाल : अग्नि मिसाइल प्रणाली के जनक।

पद्मश्री डा. प्रेमशंकर गोयल : भारत में सेटेलाइट क्रांति के अग्रणी व्यक्ति। आपने आर्यभट्ट उपग्रह की परंपरा में भास्कर प्रथम, द्वितीय, रोहिणी श्रृंखला–3, इंसेट द्वितीय आदि उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण में अहम भूमिका निभाई।

अमित सिंघल - (न्यूयार्क) : गूगल सर्च इंजन के संस्थापक।

सुभाष चंद्रा : मनोरंजन एवं मीडिया जगत के बादशाह। सुप्रसिद्ध एस्सेल समूह के प्रवर्तक। आपने ही सर्वप्रथम 1992 में सेटेलाइट आधारित जी टी वी चैनल की निजी क्षेत्र में स्थापना की।

सुनील भारती मित्तल : भारत में दूरसंचार क्रांति के जनक भारती एयरटेल की स्थापना।

सीताराम जिंदल : दानवीरों में अग्रणी व भारत में एक–एक करोड़ रूपयों

के सात बड़े सीताराम जिंदल पुरस्कारों के संस्थापक।

राहुल बजाज : भारत में ऑटों क्षेत्र के अग्रणी व्यक्ति।

हरविलास अग्रवाल : चाय बागान क्षेत्र में प्रथम भारतीय।

सत्यनारायण गोयनका : विपश्यना ध्यान पद्धति के विश्व में सबसे बड़े परमाचार्य तथा विश्व के सबसे बड़े पैगोड़ा के निर्माता।

बिट्ठलदास मोदी : भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विशेषज्ञ, 1940 में विशाल आरोग्य मंदिर तथा 1962 में प्राकृतिक चिकित्सा विद्यालय की स्थापना गोरखपुर में की।

मेहर मित्तल : पंजाबी फिल्मों के सर्वश्रेष्ठ कामेडियन।

अमित सिंघल : मेंटल केलकुलेशन में विश्व कीर्तिमान।

डा. सुदर्शन अग्रवाल : भारत में आधुनिक रेडियोलॉजी के प्रवर्तक।

डा. हर्षवर्धन : विश्व स्वास्थ्य संगठन के सर्वोच्च महानिदेशक पद पर पहुंचने वाले प्रथम भारतीय।

विमल जालान : अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष के भारत के प्रथम अधिशाषी निदेशक तथा भारतीय रिजर्व बैंक के गर्वनर रहे।

मनमोहन अग्रवाल : पहली सदी की पहली तिथि से अनंत वर्षों के केलैंडर का निर्माण।

मोती लाल केजड़ीवाल : बिहार के गांधी और सांथाल प्रदेश के जनसेवक।

अशोक सिंघल : विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष।

नरेश गोयल : भारत की सबसे बड़ी निजी जेट एयरवेज के संचालक।

अनंत अग्रवाल : विश्व में ऑनलाईन शिक्षा के सबसे बड़े प्रसिद्ध शिक्षाविद।

मोदी टेलस्ट्रा : भारत में सर्वप्रथम मोबाइल सेवाओं का प्रारंभ

प्रो. सतीशचंद्र अग्रवाल : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रथम अध्यक्ष।

डा. कैलाश मानव : विकलांगों के निशुल्क ऑप्रेशन की व्यवस्था करने वाले तथा भारत में प्रसिद्ध नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक ।

जगमोहन डालमिया : क्रिकेट के प्रथम एशियाई ख्याति प्राप्त व्यक्ति जिन्हें अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद का अध्यक्ष बनने का गौरव मिला।

ललित मोदी : भारत में क्रिकेट को अंतरराष्ट्रीय ऊंचाइयों पर पहुंचाने वाले व क्रिकेट लीग के प्रथम संस्थापक।

विजयपत सिंघानिया : माइक्रोसॉफ्ट विमान द्वारा इंग्लैंड से भारत की यात्रा करने वाले प्रथम व्यक्ति ।

अजय अग्रवाल : बोफोर्स के विरूद्ध याचिका दायर कर भारत की राजनीति में क्रांति लाने वाले ।

अनुपम मित्तल : विश्व की सबसे बड़ी साइट "शादी डॉट कॉम" के संस्थापक।

प्रभुदयाल हिम्मतसिंघका : प्रसिद्ध सॉलीसिटर व विधिवेता, संविधान

निर्मात्री सभा के सदस्य, कुशल सांसद तथा बंगाल से तीन बार लोकसभा व राज्यसभा के सांसद रहे ।

डा. रघुवीर : उच्चकोटि के विद्वान, भाषाविद् तथा हिंदी कोष के रचनाकार, भारतीय संविधान सभा के सदस्य, श्रेष्ठ सांसद, राष्ट्रभाषा हिंदी के अनन्य समर्थक। आप जनसंघ के अध्यक्ष भी रहे ।

पद्मभूषण केशव प्रसाद गोयनका : इंपीरियल बैंक के प्रथम भारतीय अध्यक्ष। (वर्तमान में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया)

पद्मश्री लाला चरतराम : दिल्ली क्लाथ मिल के संस्थापक ।

पद्श्री प्रभुदयाल डावड़ीवाला (अग्रवाल) : भारत में ट्रांसपोर्ट व्यवसाय में अग्रणी, टी सी आई के संस्थापक।

पद्मविभूषण हरिशंकर सिंघानिया : अंतरराष्ट्रीय चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रथम भारतीय अध्यक्ष ।

पद्मश्री हर्ष वर्धन नैवटिया : भारत में उत्कृष्ट एवं आधुनिक सामाजिक आवासीय गृह निर्माण योजनाओं के जनक ।

गौतम हरि सिंघानिया : भारत में प्रथम एवर सुपर कार क्लब की स्थापना।

के. के. जाजोदिया : भारत में टी. किंग नाम से प्रसिद्ध। 171 साल पुरानी असम टी कंपनी व डंकन मैकेनिकल समूह के चेयरमैन ।

प्रदीप कुमार गुप्ता : राजीव गांधी के अंगरक्षक के रूप में इन्होंने अपने जीवन का उत्सर्ग कर दिया ।

मेजर विवेक गुप्ता : कारगिल युद्ध के शहीद – मरणोपरांत महावीर चक्र

से सम्मानित ।

गणेश प्रकाश अग्रवाल : विश्व के 80 देशों की संस्था इंजीनियरिंग एन्वायरमेंट के अध्यक्ष ।

सात्विक अग्रवाल : भारत का पहला खगोल विज्ञानी जो अमेरिका के मंगल ग्रह अभियान से संबंधित प्रयोगों के लिए चुना गया।

विंग कमांडर सचिन गुप्ता : 18 जून 2013 को उन्हें हेलीकॉप्टर लेकर केदारनाथ में फंसे लोगों को निकालने के लिए भेजा गया। इन्होंने अपने अदम्य साहस से 237 लोगों को बचाया, 200 उड़ानें भरीं, 70 घंटे हवाई यात्रा की तथा 900 ग्राम राशन गिराया। गणतंत्र दिवस दृ 2014 को इन्हें वायु सेना मेडल प्रदान किया गया ।

पद्भूषण अनिल अग्रवाल : विश्व के महान् पर्यावरणविद् व वैज्ञानिक ।

जगदीश अग्रवाल : न्यूयार्क में प्रथम हिंदू मंदिर का निर्माण आपने करवाया।

लाला हरदेव सहाय : भारत गौ सेवक समाज के संस्थापक।

गोपाल अग्रवाल : इस्कान के संस्थापक स्वामी प्रभुपाद को अमेरिका में पहली बार अपने घर ठहराने तथा उनके प्रवचनों का आयोजन का श्रेय आपको है।

हरिकिशन जी अग्रवाल : अलग विदर्भ राज्य आंदोलन के जनक ।

डा. परमेश्वरी लाल गुप्त : पहले भारतीय हैं जिन्हें पुरातत्व खोज के लिए विश्व का श्रेष्ठ सम्मान मिला।

डॉ. मुनीश्वर गुप्त : भारत में डॉक्टर आफ मेडिसिन (एमडी) का शोध प्रबन्ध पहली बार हिन्दी में प्रस्तुत करने वाले – (सन् 1987)

न्यायमूर्ति श्री प्रेमशंकर गुप्त : हिन्दी में निर्णय देने वाले पहले न्यायाधीश।

वेद प्रताप वैदिक : अंतरराष्ट्रीय संबंध पर अपना शोधप्रबंध लिखने वाले प्रथम व्यक्ति थे।

देवेन्द्र अग्रवाल : उदयपुर में आपका महेशाश्रम उत्तर भारत का पहला मदर मिल्क बैंक है। यहां हर बच्चे को मां के दूध की गारंटी दी जाती है। राजस्थान सरकार ने आपको स्वास्थ्य विभाग में सलाहकार नियुक्त किया है ।

शंकर अग्रवाल : विश्व के महान् जादूगर ।

आत्माराम अग्रवाल : महात्माा गांधी मर्डर केस के न्यायाधीश, जिन्होंने इस केस की लाल किले से सुनवाई की।

विनीता सिंघानिया : सीमेंट मेन्युफेक्चर्स एसोसिएशन की प्रथम महिला अध्यक्ष ।

पद्मश्री डा स्वाति पीरामल : भारतीय चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अध्ययक्ष पद पर प्रथम महिला।

पद्भभूषण हरिशंकर सिंघानिया : अंतरराष्ट्रीय चेंबर ऑफ कॉमर्स के प्रथम भारतीय अध्यक्ष।

डा. वर्षा अग्रवाल : अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संतूर वादन में सम्मानित एकमात्र भारतीय महिला ।

जयप्रकाश अग्रवाल : 5000 घंटे तक चलने वाली GLSR FDL बल्वों का निर्माण करने वाली विश्व की पहली कंपनी के संस्थापक।

अतुल बंसल : दुनिया का श्रेष्ठ इंटीरियर डिजाइनर इनको माना गया है।

डा. भगवत शरण अग्रवाल : हिंदी साहित्य में हाइकू विधा के जनक। (यह एक जापानी काव्य विधा है जो तीन लघु पंक्तियों की अतुकांत होती है।)

सुश्री प्रीता डी बंसल : (अमेरिका आयोग की प्रमुख) आपको यू एस ए कमीशन ऑन इंटरनेशनल रिलीजियस फ्रीडम का प्रमुख चुना गया, इस प्रतिष्ठित आयोग के सर्वोच्च पद पर नियुक्त होने वाली प्रथम भारतीय महिला हैं।

राजेश अग्रवाल (मूल निवास इंदौर - अप्रवासी भारतीय) : लंदन के डिप्टी मेयर बनाए गए।

ये कौम है अग्रवालों की...

भारतीय फिल्मों का सफर सौ साल का हो चुका है। काफी कुछ देखने को मिला। अनेक लोगों ने इसमें अपना योगदान दिया है। अग्रवाल बंधुओं के योगदान को भी नहीं भुलाया जा सकता। काफी कुछ लिखा व छापा जा चुका है लेकिन अग्रवाल बंधुओं के योगदान को पहली बार उल्लेखित किया जा रहा है।

अग्रवाल वैश्य जाति विश्व की श्रेष्ठतम जातियों में शुमार है। इस जाति ने देश–विदेश में अपनी लोकप्रियता का अनूठा परचम फहराया है। इसलिए इस जाति को एक अलग ही सम्मान के साथ देखा जाता है। यह जाति कामयाबी का मूलमंत्र जानती है कामयाबी की कहानी लिखने वाली इस जाति के असंख्य व्यक्तियों ने छोटे और बड़े पर्दे पर अपने हुनर से बड़ी कामयाबियां हांसिल की है। एक नजर डालते हैं टी वी और फिल्म इंडस्ट्रीज में अपनी कला से धाक जमा चुके अग्र–वैश्य कलाकारों के जीवन पर – ये अभिनेता हैं, अभिनेत्री हैं, गायक कलाकार, निर्माता–निर्देशक, संगीतकार, कहानीकार आदि भी हैं–

फिल्म अभिनेता-अभिनेत्री एवं टी.वी. कलाकार

इन्द्रा बंसल : आपका जन्म 1932 में रावलपिंडी – पाकिस्तान में हुआ था। 1968 में आप ब्रह्मचारी फिल्म से मशहूर हुईं और इसी नाम से जानी जाती हैं। आपने 1954 से 1981 तक एक मशहूर अभिनेत्री के रूप में मुंबई फिल्म इंडस्ट्री में अभिनय किया। 1956 में चोरी–चोरी, इसके बाद कुछ मशहूर फिल्में जैसे – मैला आंचल, झूंठा कहीं का, वो कौन थी, आसिफ लैला, रफ्तार, कीमत, दिल दौलत दुनियां, मजदूर जिंदाबाद आदि। कुल मिलाकर 58 फिल्मों में अभिनय किया। आपकी लगभग सभी फिल्में हिट रहीं।

मंजू बंसल : इन्होंने अपने फिल्मी कैरियर के दौरान अभिनेता असरानी से विवाह कर लिया था। 1973 में नमक हराम व आज की ताजा खबर, 1978 में इनकी फिल्म सलाम बोंबे आई। आपकी कुछ फिल्में हैं – उधार का सिंदूर, नालायक, तपस्या, जुर्माना आदि। कुल 12 फिल्मों में अभिनय के साथ आपने मां की कसम फिल्म का निर्देशन भी किया। थियेटर्स में भी आप जानी पहचानी अभिनेत्री रहीं हैं ।

मनोरमा बंसल (टुनटुन) : फिल्म एवं दूरदरर्शन चैनल की प्रसिद्ध अभिनेत्री। 50 से अधिक फिल्मों व धारावाहिकों में आपने अभिनय किया है। सत्यंम शिवम सुंदरम, गोदान सोलहवां साल, दिल अपना और प्रीत पराई, कुर्बानी, कागज के फूल, श्री 420, चौहदवीं का चांद, उड़न खटोला, कुली आदि आपकी प्रसिद्ध फिल्में हैं।

नीना गुप्ता : हिंदी सिनेमा की लोकप्रिय अभिनेत्री, डायरेक्टर, प्रोड्यूसर व टी.वी कलाकार। सन् 1982 से आज तक सक्रिय। 42 हिंदी फिल्मों सहित अनेक टी वी सीरियलों में इन्होंने अभिनय के जलवे बिखेरे हैं। कुछ प्रसिद्ध फिल्में–गांधी, मंडी, जाने भी दो यारों, खलनायक, जज्बात, नजर, बलवान।

अनु अग्रवाल : जन्म – मलका गंज, दिल्ली। ये तमिल, असमिया व हिंदी सिनेमा की नामचीन अभिनेत्री रही हैं। इतना ही नहीं आप दिल्ली यूनिवर्सिटी से समाज शास्त्र में गोल्ड मेडलिस्ट भी रही हैं। कुछ लोकप्रिय फिल्में – रिटर्न ऑफ ज्वेलथीफ, कन्यादान, जन्म कुंडली, खलनायक, तमाशा, आशिकी आदि। महेश भट्ट द्वारा निर्देशित संगीत प्रधान फिल्म आशिकी राहुलराय के साथ किए गए अभिनय से प्रसिद्ध।

अर्चना गुप्ता - जन्म – आगरा। बहिन वंदना गुप्ता भी अभिनेत्री हैं। तेलगु फिल्मों से आपने शुरूआत की। अर्चना गुप्ता ने तेलगु में 1, कन्नड में 5, अंग्रेजी में 1, हिंदी में 3, तमिल में 2, मलयालम में 3,

रसियन में 1, फिल्मों में काम किया है। दक्षिणी भारत की आप लोकप्रिय अभिनेत्री हैं। हिंदी फिल्में – सांचा, अग्नि 3, फायर क्वीन्स, डेस्टिनी ऑन डांस।

काजल अग्रवाल : मुंबई के मारवाड़ी अग्रवाल परिवार से संबद्ध, जन्म–मुंबई। मॉडलिंग से फिल्म जगत में प्रवेश । दक्षिण भारत व हिंदी सिनेमा की लोकप्रिय अभिनेत्री तथा टी वी कलाकार। तेलगु फिल्मों से अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश किया। माता सुमन अग्रवाल तथा पिता विनय अग्रवाल। सिंघम और स्पेशल 26 इनकी प्रसिद्ध फिल्में रही हैं। मघाधीरा अब तक की सर्वश्रेष्ठ तेलगु फिल्म तथा काजल सर्वश्रेष्ठ तेलगु अभिनेत्री घोषित। तेलगु की अनेक फिल्मों में बेस्ट ऐक्टरेस का अवार्ड अनेक बार मिला। तीन बार फिल्म फेयर एवार्ड, जी सिनेमा एवार्ड,साउथ स्क्रीन एवार्ड आदि से सम्मानित। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में भी उल्लेख। इनकी तमिल फिल्में मारी, ब्रह्मेत्सहवम, मरमा मनीथंन, कवालाई वंदम, गुरूदा, पायमपुली आदि हिंदी फिल्में सरदार जब्बर सिंह, दो लव्जों की कहानी कन्नड ए के 97 आदि हैं।

आरती अग्रवाल : तेलगु फिल्म अभिनेत्री तथा प्रसिद्ध मॉडल जिन्होंने हिंदी फिल्मों में भी अभिनय किया। आरती अग्रवाल ने अब तक 21 फिल्मों में अपनी अभिनय प्रतिभा की छाप छोड़ी है। इनकी फिल्म '' आमे येवारू'' है। आपका स्वर्गवास वर्ष 2015 के शुरूआत में हो गया।

निशा अग्रवाल : जन्म–मुंबई। दक्षिण भारत व हिंदी सिनेमा की लोकप्रिय अभिनेत्री तथा टी वी कलाकार। तमिल, तेलगु व मलयालम फिल्मों से अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश किया। काजल अग्रवाल की बहिन हैं। अभी तक आपने 1 तमिल, 5 तेलगु व 2 मलयालम फिल्मों में काम किया है।

वंदना गुप्ता : लोकप्रिय अभिनेत्री तथा टी वी कलाकार हैं। आपने हिंदी में 3, मराठी में 6, अंग्रेजी में 1 फिल्मों में काम किया है। जी.टीवी. में

करीना–करीना, पांडे और पांडे, कलर्स टीवी, स्टार, सब तथा अन्य टीवी चौनलों के अनेक सीरियलों में काम किया।

स्मिता बंसल : जन्म–जयपुर। 1997 में मुंबई प्रस्थान। मशहूर टी वी व फिल्म अभिनेत्री। धारावाहिक – सरहदें, अमानत, आशीर्वाद, कहानी घर घर की, बालिका वधू, कोई अपना सा, सी आई डी, फियर फेक्टर, तुलसी जी हारर शो, संजीवनी, दाल में काला, ये मेरी लाइफ है आदि। हिंदी व मलयालम फिल्मों में भी अभिनय किया है। बेस्ट ऐक्टरेस इन सर्पोटिंग रोल में आपको आई टी ए अवार्ड मिला है। कर्ज आपकी मशहूर फिल्म रही है।

नेहा मरदा अग्रवाल : मशहूर टी वी अदाकारा, नेहा मरदा ने सीरियल बालिका वधू में गहना का रोल किया था तथा काफी प्रसिद्धि भी मिली। पटना के व्यवसायी आयुष्मान अग्रवाल से विवाह के पश्चात् नेहा सीरियल देवों के देव महादेव में जालंधर की बीबी का वृंदा के करेक्टर में आ रही हैं। आपने एक थी राजकुमारी, साथ रहेगा हमेशा, ममता, घर एक सपना, किस्मत कनेशन, मन की आवाज, साथ रहेगा ऑलवेज आदि टी वी सीरियलों में अभिनय किया।

ईशा गुप्ता : जन्म–नई दिल्ली, दिल्ली के सुप्रसिद्ध अग्रवाल परिवार से। बॉलीवुड फिल्मों की अभिनेत्री, टी वी कलाकार व मॉडल। 2007 में फैमिना मिस इंडिया में भाग लिया तथा तीसरे स्थान पर रहीं। मिस इंडिया कोंटेस्ट में भारत का प्रतिनिधित्व किया। पिताश्री एयर फोर्स से सेवानिवृत्त। आपने अनेक फिल्मों में अभिनय किया जिनमें प्रमुख हैं–राज 3 डी, जन्नत–2, चक्रव्यूह, गौरी तेरे प्यार में, हमशकल आदि। नेशनल ज्योग्राफी चैनल में आपने काफी काम किया। कलाकार नेहा गुप्ता– इनकी बहिन हैं। इनकी अगली फिल्म है – हमशक्ल।

सोनिया अग्रवाल : प्रसिद्ध मॉडल व तमिल तथा तेलगु फिल्मों की मशहूर अभिनेत्री। वर्ष 2001 से अभिनय में सक्रिय हैं। विद्यार्थी जीवन में टी वी कलाकार रहीं हैं। आइ टी एफ ए द्वारा आपको बेस्ट न्यू ऐक्टरेस का

एवार्ड मिला। इसके अलावा भी आपको कई एवार्ड मिले हैं। सोनिया अग्रवाल ने तेलगु में 2, कन्नड में 1, तमिल में 16, मलयालम में 1 फिल्मों में अभिनय किया है।

पूजा गुप्ता : भारतीय मॉडलिंग में एक जाना पहचाना नाम व फिल्म अभिनेत्री। जन्म–नई दिल्ली में। 2007 में फैमिना मिस इंडिया यूनिवर्स विनर। 2007 में ही मिस यूनिवर्स में भारत का प्रतिनिधित्व किया था जहां पूजा गुप्ता नवें स्थान पर रहीं। पूजा गुप्ता ने अभी तक कई फिल्मों में अभिनय किया है जिनमें प्रमुख हैं–शॉर्ट रोमियो, जी गोवा गॉन, फालतू, चितकबरे आदि। आपकी माताजी डाक्टर हैं।

नीतू अग्रवाल : दक्षिण भारतीय अभिनेत्री नीतू अग्रवाल की प्रथम तेलगु फिल्म ''प्रेम प्रणयम'' है। यह गांव के माहौल में एक लव स्टोरी है। नीतू अग्रवाल हिंदी सिनेमा में अभिनय करने की सोच रखती हैं।

श्रुति अग्रवाल : अभिनेत्री व प्रसिद्ध फैशन मॉडल। कुछ फिल्मों में भी अभिनय किया है। 2006 के किंगफिशर कैलेंडर में भी जगह बनाई। श्रुति अग्रवाल का जन्म कलिंगपोंग–पश्चिमी बंगाल में हुआ। जन्म दिवस 26 सितम्बर। हिमेश रेशमिया के साथ गुज्जू में अभिनय।

स्वेता अग्रवाल : मॉडल व अभिनेत्री। इन्होंने फिल्म ''शापित'' में अभिनय कर प्रसिद्धि पाई। जन्म–दिल्ली में। अन्य फिल्में– तंदूरी लव हिंदी में, मिरास तुर्की में तथा इसके अलावा तेलगु में 03 फिल्में की और टी वी सीरियल – शगुन में भी अभिनय किया।

विपाशा अग्रवाल : ये भारतीय मॉडल में एक जाना पहचाना नाम हैं तथा अभिनेत्री भी हैं इन्होंने अर्जुन रामपाल के साथ आई सी यू फिल्म से अपने कैरियर की शुरूआत की है। इनके मॉडलिंग कैरियर में काफी एंड्रोस्मेंट मिले हैं जिनमें से तरूण ताहिलयानी, मलिनी रामानी, प्रताप संस ज्वेलरी तथा टिफनी जैसे बड़े नाम शामिल हैं। आपने ताज ग्रुप,

फेयर एंड लवली, लक्स, गार्नियर आदि अनेक जाने माने प्रोडक्ट में मॉडलिंग की। आपने अनेक टी वी सीरियलों में भी अभिनय किया है जैसे – नागिन, घर की लक्ष्मी, तीन बहुरानियां, बंदिनी आदि।

रानी बंसल : जिन्होंने 2005 में रिलीज हुई अपनी मशहूर फिल्म बिल्यू अंब्रेला से पहचान बनाई। आपने पंजाबी फिल्म लाइन्स ऑफ पंजाब में भी काम किया जो 2007 में रिलीज हुई तथा अभी तक फिल्मी लाईन में सक्रिय अभिनय कर रही हैं।

मिताली अग्रवाल : प्रसिद्ध तमिल फिल्म अभिनेत्री व टी वी स्टार। आपने तमिल फिल्मों में काफी नाम कमाया है। अभी आपकी तमिल फिल्म अधियम–अंधामुम रिलीज हुई है। तमिल फिल्म इंडस्ट्रीज को इनसे से काफी उम्मीदें हैं।

स्वाति अग्रवाल : भारतीय फिल्म उद्योग में आप फ्रिलेंस एक्टरेस हैं। आप 2009 से सक्रिय हैं। तोमची, मैं करीना हूं (केटरीना कैफ के साथ) तथा जिंदगी फिल्मों में कार्य किया ।

साक्षी अग्रवाल : तमिल, हिंदी व अंग्रेजी भाषाओं की जानकार प्रसिद्ध मॉडल व अभिनेत्री जिन्होंने अनेक विज्ञापनों व कुछ तमिल फिल्मों व हिंदी फिल्मों में अभिनय किया है। ''राजा रानी'' में अतिथि भूमिका निभाई तथा तमिल फिल्म ''नो पार्किंग'' व कन्नड़ फिल्म ''हेड्डारी'' में ये हीरोइन थीं। आपने अनेक जानी मानी विज्ञापन कंपनियों में विज्ञापन किया है तथा कईयों की आप ब्रांड एंबेसेडर रही हैं। आपाको कन्नड फिल्म यूगन से प्रसिद्धि मिली। आपकी फिल्में थिरूटू वीसीडी, आथियां, काकाकापो भी रिलीज हुईं व सफल रहीं।

कृतिका सिंघल : जानी मानी टी वी कलाकार एवं कुछ फिल्मो में भी आपने अभिनय किया है। आपको प्रसिद्धि सर्वप्रथम टी वी सीरियल ''कसौटी जिंदगी'' से मिली। आपके फेमस टी वी सीरियल हैं– कातिल

जिंदगी, पुनर्विवाह, क्योंकि सास भी कभी बहू थी, झांसी की रानी में प्रमुख भूमिका आदि। सर्वप्रथम टेलीविजन पर ये ''स्टार वायस ऑफ इंडिया'' पर आई थीं। आपको अनेक एवार्ड प्राप्त हुए हैं जैसे –जी रिश्ते अवार्ड, बिग टेलीविजन एवार्ड, द ग्लोबल इंडियन फिल्म एंड टेलीविजन एवार्ड। आपका जन्म कानपुर में हुआ।

सुरीली गोयल : लॉसऐंजिल्स में डिजायनर तथा वॉलीवुड अभिनेत्री 'यशराज' फिल्म की ''सलाम नमस्ते'', ''तारा रामायन'', ''द लास्ट लीयर '' फिल्मों के साथ–साथ जान ए मन, व प्रीटि जिंटा व संजय लीला भंसाली द्वारा निर्देशित फिल्म सांवरिया में शानदार अभिनय।

छवि मित्तल : टी वी सीरियल अभिनेत्री। अपने पहले सीरियल '' तुम्हारी दिशा'' में सफल अभिनय। गृहस्थी, ब्यूटी पार्लर, लेफ्ट राइट, नागिन विरासत आदि धारावाहिकों में अभिनय के साथ–साथ फिल्म '' एक विवाह ऐसा भी '' में शानदार अभिनय किया। सहारा चौनल के एक चुटकी आसमान, झूम इंडिया और सास बहू में उत्कृष्ट अभिनय किया।

मेघा गुप्ता : प्रसिद्ध माडल एवं टी वी कलाकार–जन्म 1985. आपने अनेक फेमस टी वी सीरियलों में काम किया है जैसे– कुमकुम, ममता, सी आई डी, नच बलिये तथा आपका फेमस सीरियल था– मैं तेरी परछाईं हूं। आपको भी अनेक एवार्ड प्राप्त हुए हैं।

अदिति गुप्ता : भारतीय दूरदर्शन अभिनेत्री। 19 वर्ष की अवस्था में बालाजी टेलीफिल्मस् के किस देश में दिल मेरा में हरि की भूमिका के रूप में अभिनय। मूल रूप से फैशन डिजाइनर। सास भी कभी बहू थी, कसौटी जिंदगी की, रंग दे इंडिया आदि धारावाहिकों में अभिनय किया है।

पूर्ति अग्रवाल : 13 वर्षीय बाल कलाकार पूर्ति अग्रवाल ने ऐतिहासिक धारावाहिक महाराणा प्रताप में रूकइया बेगम का किरदार निभाया है।

आयना बंसल : सैंट्रल इंडिया 2012 टाइटल विनर हैं तथा अनेक छोटी फिल्मों में अभिनय किया है। ये आज भी अभिनय के क्षेत्र में सक्रिय हैं। आयना प्रसिद्ध मॉडल भी हैं।

सिमरन बंसल : ये अभिनय के साथ–साथ मॉडलिंग भी कर रही हैं।

केल ए गोयल : लीडिंग अभिनेत्री व्यवसायिक नाटकों में काम कर रही हैं। केल ने उड़िया शार्ट फिल्म दम में भी नताशा का रोल किया है। आप काफी समय से थियेटर करती रही हैं।

रीना अग्रवाल : आपने टी वी शो एजेंट राघव –क्राइम ब्रांच, महारक्षक आर्यन, बालिका वधू, सावधान इंडिया में अभिनय किया है व आमिर खान की फिल्म तलाश में भी अभिनय किया है।

अभिनेता

भारत भूषण : जन्म–मेरठ (1920–1992), अभिनेता, स्क्रिप्ट राइटर व प्रोड्यूशर। लगभग 40. फिल्मों में काम किया। बेजू बावरा, बरसात की एक रात, प्रसिद्ध फिल्म। फिल्म फेअर सहित अनेक एवार्ड आपको मिले। पिता – रायबहादुर मोतीलाल अग्रवाल।

रमेश गोयल : प्रसिद्ध अभिनेता श्री रमेश गोयल फतेहपुर सीकरी जिला आगरा के निवासी हैं। इन्होंने अभी तक लगभग 75 से अधिक फिल्में व 50 से अधिक टी वी सीरियलों में अपना दमदार अभिनय किया है। ये अकेले ही मुंबई गए, जेब में पैसे नहीं थे। संघर्ष पूर्ण जीवन रहा पर हिम्मत नहीं हारी। 1974 में जानेमन फिल्म में देवानंद के साथ काम किया। 1999 में आमिर खान की फिल्म सरफरोश में काम किया। 39 साल का आपका फिल्मी कैरियर है। आपने अनेक हिट फिल्में की हैं

जैसे – कुर्बानी, कुली, हमशक्ल, गेंगस्टर, मोहरा, आंटी नं–1, सलाम बोंबे आदि अभी 2012 में आपकी फिल्म दिल में कुछ काला है, रिलीज हुई थी। इन्होंने अनेक टी वी सीरियलों में भी अपने अभिनय की छाप छोड़ी है जैसे – मितवा,माता की चौकी,रामायण, चाहत, महायज्ञ, जन्नत, दर्पण आदि।

राजेन्द्र गुप्ता : जन्म–पानीपत में आपका परिवार व्यवसायिक परिवार है। 1985 में आप मुंबई आए। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न राजेन्द्र गुप्ता भारतीय फिल्म, टेलीविजन तथा थियेटर के मशहूर अभिनेता तथा डायरेक्टर हैं जिन्होंने 1990 में एक ही वर्ष में 40 से भी अधिक सीरियलों में काम करके लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवाया। आपने 32 से अधिक फिल्मों में काम किया तथा 20 से भी अधिक नाटकों का निर्देशन किया। हिंदी फिल्मों के साथ तमिल, तेलगू फिल्मों में भी अभिनय किया है।

अरूण गोविल : जन्म–12.01.1958, अलीगढ़ शिक्षा–मेरठ, यूपी में। सफल अभिनेता, निर्माता व निर्देशक के रूप में आप जाने जाते हैं। मशहूर धारावाहिक रामायण में भगवान राम की ऐतिहासिक भूमिका। महाराजा अग्रसेन फिल्म में अग्रसेन जी की भूमिका निभाई। अरूण गोविल ने 40 से अधिक हिंदी, भोजपुरी, उड़िया, तेलगु फिल्मों में अभिनय किया। विक्रम वेताल, जय हनुमान सहित आपने 31 धारावाहिकों में काम किया। अनेक एवार्ड प्राप्त किए।

टी.पी. जैन : आप अपने जमाने के मशहूर अभिनेता रहे हैं। आपने अनेक फिल्मों में अभिनय किया जिनमें से कुछ हैं– चोर और चांद (1993), सैलाब (1990), जान हथैली पे –(1987), तीसरा किनारा–(1986), अनोखा इंसान–(1986), अंगूर–(1982), आधा दिन आधी रात (1977), बहू की आवाज (1985), दो और दो पांच (1983), जजबात(1980), मधुमालती (1978) आदि। आपने कुल 34 फिल्मों में अभिनय किया।

बिपिन गुप्ता : आप हिंदी व बंगाली फिल्मों के जानेमाने अभिनेता थे। आपका जन्म 21 अगस्त 1905 को मेरठ(यू.पी) के बंगाली परिवार में हुआ, आपके पिता का नाम श्री त्रिलोकी नाथ गुप्ता था। आपका देहांत 9 सितम्बर 1981 को हुआ। आपने बेजू बावरा (1952), जागृति–1954, ममतर–1966, घराना, गृहस्थी, ससुराल, जीवन मृत्यु, खिलौना आदि हिंदी फिल्मों में काम किया। बात एक रात की(1958) में आपने खलनायक की भूमिका की। नूरी फिल्म में इन्होंने कपड़े के व्यापारी का रोल किया। आपकी पहली बंगाली फिल्म चोकर बाली थी। आपने लगभग 300 फिल्मों में अभिनय किया। आपने एक हिंदी फिल्म के डायरेक्टर प्रोडयूसर रहे। 1934 से 1936 तक आपने रेडियो स्टेशन में कार्य किया।

अनिरुद्ध अग्रवाल (अजय अग्रवाल) : मशहूर फिल्मी व टी वी कलाकार। जन्म–01.12.1949, देहरादून, उत्तरांचल। 1975 से अभिनय की दुनियां में कार्यरत। आपने तेलगु में 6, तमिल में 1, बॉलीवुड में 13, हॉलीवुड में 3, फिल्मों में काम किया। जी हॉरर शो –पूर्ण मंदिर, बंद दरवाजे, आज का अर्जुन व ताबीज से प्रसिद्धि मिली। 3 डी सामरी, तेरी मांग सितारों से भर दूं आदि फिल्मों से आपको बहुत प्रसिद्धि मिली। कई सीरियलों में भी काम किया।

मेहर मित्तल : पंजाबी फिल्मों के अभिनेता,निर्माता व निर्देशक। 100 पंजाबी फिल्मों में काम किया। जन्म –भटिंडा (पंजाब), चंडीगढ़ से लॉ की डिग्री ली तथा आठ वर्ष तक आपने वकालात की। 35 साल की उम्र में फिल्मों में काम करना प्रारंभ किया। आप बेस्ट कॉमेडियन एवं कॉमिक फिल्मों के श्रेष्ठ कलाकार हैं। दादा साहब फालके अकादमी पुरस्कार से मुंबई में सम्मानित। 1980 के दशक में शायद ही कोई ऐसी पंजाबी फिल्म हो जिसमें आपकी मुख्य भूमिका न रही हो।

मधुर मित्तल : आस्कर एवार्ड से सम्मानित वालीवुड फिल्म स्लमडॉग में मिलिनियर के विजेता दल में सहभागी। स्क्रीन–राइटर गिल्ड एवार्ड से

भी सम्मानित। स्लमडॉग के अलावा वन का टू का फोर, कहीं प्यार न हो जाए, सलामत इंडिया, कसौटी जिंदगी की, चमत्कार, दस्तक, जलवा आदि फिल्मों में काम करने के अलावा टी वी सीरियल शाका लाका–बूम बूम में शानदार अभिनय किया। आपने हालीवुड की फिल्म ''डालर आर्म'' में भी अभिनय किया। इसके अलावा मधुर दुनिया के कई देशों में एक हजार से अधिक स्टेज शो का हिस्सा बन चुके हैं । इनके स्लमडॉग मिलिएनर में उत्कृष्ट अभिनय के लिए ''स्क्रीन एक्टवर्स गिल्ड अवार्ड'' से भी सम्मानित किया गया है ।

देवकीनंदन अग्रवाल : राजस्थानी फिल्म खोटो सिक्को के कुशल अभिनेता।

अक्षत गुप्ता : मशहूर टी वी कलाकार। अनेक सीरियलों में काम किया। राजस्थानी सीरियल– केसरिया बालम, धारावाहिक –दो दिल बंधे एक डोरी में, पालम एक्सप्रेस, ममता, गृहलक्ष्मी आदि। अक्षत गुप्ता ने कुछ फिल्मों में भी अभिनय किया है।

दिनेश अग्रवाल : टी वी की दुनियां में नाम कमा रहा हिसार के बड़वाली गांव ढाणी का निवासी दिनेश अग्रवाल ने 'अफसर की बिटिया',' सपने सुहाने लड़कपन के' व 'मेरी भाभी' सीरियलों में अपनी अभिनय कला के जोहर दिखा चुके हैं। आपके पिता श्री पवन अग्रवाल हैं।

राजेश गोयल : चरित्र अभिनेता के रूप में जाना पहचाना चेहरा। 44 वर्षो तक आपने थियेटर की दुनियां में एक मुकाम हॉसिल किया। अनेक महान् साहित्यकारों की कृतियों को आपने मंच पर जीवित किया। हरियाणा के राज्य बनने व उसकी स्थापना से लेकर अब तक के कार्यकाल के मुख्यमंत्रियों के उतार चढ़ाव पर आधारित राजेश गोयल द्वारा अभिनीत टी.वी. सीरियल ''चीफ मिनिस्टर'' ने काफी ख्याति अर्जित की है। इन्होंने अपने अभिनय से इस सीरियल को जीवंत कर दिया। आपके आने वाली फिल्में भी जल्दी ही देखने को मिलेगी।

पवन अग्रवाल : आप आरती अग्रवाल के भाई हैं। आपकी पहली फिल्म मनसंथा है।

मनीष गोयल : टी वी कलाकार तथा बंगाली फिल्म प्रेमियों के दिलों पर राज करने वाले कुशल अभिनेता।

शैलेन्द्र गोयल : 1991 में आपने टी. वी. सीरियल खिलते रहेंगे दाने अनार के में मुख्यपात्र मुसद्दी लाल की भूमिका निभाई व अभी तक आपने अनेक टी वी सीरियलों में काम किया है।

बलवंत बंसल : दूरदर्शन सीरियल में टीपू सुल्तान अंग्रेज अफसर मेजर लारेंस की भूमिका निभाकर आपने टी वी की दुनियां में कदम रखा। महाभारत, रामायण, हम लोग, बुनियाद, भारत एक खोज, व अन्य अनेक सीरियलों में आपने अपनी अभिनय क्षमता का परिचय दिया है। आपकी गायन में भी गहरी रूचि है।

निर्माता, निर्देशक, कहानीकार, संगीतकार

ज्योति प्रसाद अग्रवाला : जन्म 17.06.1903 तमूलबारी–टी स्टेट आसाम में हुआ – स्वर्गवास 17.01.1951 कैंसर से। आप फिल्म निर्माता, निर्देशक, म्यूजिक कंपोजर, कवि , लेखक व नाटककार के रूप में फिल्मी लाइन में सन् 1932 से 1951 तक सक्रिय रहे। इनका परिवार 1811 में राजस्थान से आसाम पहुंचा, आपके पिता का नाम श्री परमानंद अग्रवाल था। आप असमिया फिल्म के जनक कहे जाते हैं। 1934 में चित्रलेखा मूवीटोन की स्थापना और पहली असमिया फिल्म जयमति का निर्माण किया। यह वह समय था जब फिल्म लंदन से धुलकर आती थी तथा वे प्रायः मूक होती थीं। जयमति भारत की पांचवी व असम की पहली बोलती फिल्म थी जिसे मार्च 1935 में सर्वप्रथम

कोलकाता में प्रदर्शित किया गया। इसके बाद आपने इंद्रमालती फिल्म का निर्माण किया। आपके नाम से ज्योति चितवन फिल्म व टेलीविजन इंस्टीट्यूट चल रहा है। आपके सम्मान में भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया है। आपका दूसरा नाम आसाम के रूपकंवर के नाम से प्रसिद्ध था। आपने स्वतंत्रता आंदोलन में भी भाग लिया।

देवेन्द्र गोयल : हिंदी फिल्म निर्माता व निर्देशक। जन्म–03.03.1919, मेरठ,यू.पी। स्वर्गवास–26.02.1979 मुंबई में। आप 1950 से 1978 तक फिल्म लाईन में सक्रिय रहे। दस लाख प्रसिद्ध फिल्म पर आपको सिल्वर जुबली एवार्ड मिला। श्री देवन्द्र गोयल ने 18 फिल्में निर्माता व निर्देशक के रूप में कीं। कुछ प्रसिद्ध फिल्में थीं – दस लाख, नरसिंह भगत, एक फूल दो माली, आंखें, एक महल हो सपनों का, दो मुसाफिर, अलबेली, प्यार का सागर आदि। आपने मराठी फिल्मों का भी निर्दशन किया था।

शंकरलाल गोयनका : पूर्वोत्तर की माटी के लाल – भारतीय रजत पटल पर चमकने वाले सितारों को सितारा बनाने वाले जो लोग हैं उनमें एक हैं सिनेमा व्यवसाय के वास्तविक हीरो श्री गोयनका और उनके इस स्टार मेकर स्टारडम की खातिर सन् 2009 में उन्हें दादा साहब फालके अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आप बचपन से ही फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े इसी में पले बड़े। आपने 1926 में शिलांग केल्विन नामक पूर्वोत्तर में प्रथम सिनेमा हॉल की स्थापना की। आपने 1932 व 1935 में गुवाहाटी व शिलांग में केल्विन सिनेमा हॉल का निमार्ण करवाया, 1966 में अंजलि नामक आधुनिक सिनेमा हॉल का निर्माण करवाया। आप पूर्वोत्तर क्षेत्र के विकास पुरूष बने। आप एक परिपक्व फिल्म वितरक, फिल्म निर्माण खासकर पूर्वोत्तर भारत की संस्कृति, भाषा, जनजीवन से जुड़े फिल्मों के खेवनहार बनकर उभरे। आपने फिल्म क्षेत्र को अपना जीवन दर्शन ही बना डाला। आपने बहुत सारी हिंदी फिल्मों का वितरण, असमिया फिल्मों का निर्माण और वितरण कर पूर्वोत्तर भारत के फिल्मों के मसीहा बन गए। आपने जीवनराम मुंगीदेवी

पब्लिक चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना की जिसके अंतर्गत पूर्वोत्तर के फिल्मी कलाकारों, कवियों और साहित्यकारों को उनकी कला के प्रति सम्मान व प्रोत्साहन तथा उल्कृष्ट योगदान हेतु वर्ष 2007 से हर वर्ष पुरस्कार प्रदान किया जाता है। शंकरलाल जी गोयनका की उपलब्धियों की लिस्ट बहुत लंबी है जिस पर शोधार्थी आने वाले समय में शोध करेंगे।

जी. एल. अग्रवाला : आप जीएल पब्लिकेशन लि. के अध्यक्ष व पूर्वोत्तर के सबसे बड़े हिंदी दैनिक अखबार पूर्वांचल प्रहरी के संपादक हैं। आप सांस्कृतिक गतिविधियों में भी शामिल हैं, उनमें टी.वी.सीरियल मैक्सीली का निर्माण और दूरदर्शन के लिए क्वीज–बीट का निर्माण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रूपकंवर ज्योति प्रसाद अगरवाला पर ऐतिहासिक डाक्यूमैंट्री फिल्म बनाई।

वेद अग्रवाल : प्रख्यात फिल्म अभिनेता, फिल्मी पटकथा, संवाद, कहानी लेखन में सिद्धहस्त। भारत भूषण की पीढ़ी के रचनाकार तथा उनके साथ नवरंग, आजाद, बरसात की रात, चकोरी आदि अनेक फिल्मों का निर्माण तथा उनका सफल निर्देशन आपने किया। सातवें दशक में आपकी गणना कुशल फिल्म लेखकों में की जाती थी। सरस्वती सम्मान से सम्मानित।

सरस्वती कुमार दीपक : आपने अग्रवाल परिवार में जन्म लिया। आप मशहूर गीतकार, कवि और फिल्मों के लेखक थे। आपने अनेक मशहूर फिल्मों के डायलॉग लिखे। आप 1931 से 1970 के दशक तक फिल्मी, लाईन में सक्रिय रहे। आपने पांडव वनवास (1973) में गीत भी लिखे और म्यूजिक भी दिया। आपने अनेक मशहूर फिल्मी गीतों की रचना की जिनमें कुछ हैं–चली जवानी ठोकर खाने (अभिमान–1954), सब कुछ करना इस दुनियां मे,सच्ची बातें बताने में, मेरी राखी की रखियों.. आदि। आपने गुंजन, अधिकार, नया कानून, अदा, आदि फिल्मों के गीत लिखे जो अपने जमाने में मशहूर हुए, आपने अनेक धार्मिक गीतों

व भजनों की भी रचना की। 1956 में धार्मिक फिल्मों के भी गीत लिखे। आपने अनेक मशहूर कविताएं भी लिखीं। वर्तमान में आप कुर्ला, मुंबई में रहते हैं।

रमेश गुप्ता : आप अपने जमाने के मशहूर सिंगर, गीतकार, संगीतकार अभिनेता व डायरेक्टर रहे। आपने कुछ फिल्मों में प्लेख्बेक सिंगर किया। आप हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में 1940 से 1960 के दशक तक सक्रिय रहे। फिल्म राजा (1943) से आपने शुरूआत की । इसके गीत आपने लिखे। 1943 में ही हिंदी फिल्म किशोर साहू का आपने निर्दशन किया व एक गाना भी गाया। आपके अनेक म्यूजिक एलबम भी रिलीज हुए हैं जो हिंदी व गुजराती में हैं।

देव गोयल : भारतीय फिल्म अभिनेता व कहानीकार देव गोयल की प्रसिद्ध फिल्म ''हम हैं राही कार के'' एक कॉमिक मिसएडवेंचर प्रेम कहानी है। फिल्म में संजय दत्त, जूही चावला व अनुपम खेर भी हैं। आप मशहूर फिल्म निर्माता देवेन्द्र गोयल के पोते और प्रोडयूशर डायरेक्टर ज्योतिन गोयल के बेटे हैं।

गोयल परिवार के प्रोडक्शन हाउस सन् 1948 से फिल्म बना रहे हैं। एक फूल दो माली, दस लाख, आदमी सड़क का और ईनाम दस हजार का जैसी कई फिल्में उनके नाम हें। देव की पहली फिल्म जहरीले थी।

ज्योतिन गोयल : फिल्म लाईन में 1969 से सक्रिय तथा निर्माता, निर्देशक व फिल्म लेखक के रूप में 1981 से लगातार सक्रिय हैं। निर्माता व निर्देशित फिल्में – ईनाम दस हजार, जहरीले, सफारी, बर्ड आईडल, हम हैं राही कार के आदि। फिल्म लेखक – तेरी मांग सितारों से भर दूं, सफारी, हम हैं राही कार के, बर्ड आइडल। एक फूल दो माली फिल्म में आपने अभिनय भी किया है।

दिनेश कुमार गुप्ता : सन् 1960 से सक्रिय श्री दिनेश कुमार गुप्ता डायरेक्टर, प्रोड्यूसर, फिल्म मेकर, टेलीविजन प्रोड्यूसर, स्क्रीप्ट राइटर व डाक्यूमेंट्री निर्माता हैं आपने भोजपुरी, तमिल, तेलगु सहित अनेक क्षेत्रीय, हिंदी व अंग्रेजी फिल्में निर्देशित की हैं। आपका जन्म 05. 01.1958 को खागरिया–बिहार में हुआ था। आपने 8 फिल्मों का निर्देशन, 7 फिल्में एडिटर, 8 फिल्मों के निर्माता तथा टी वी सीरियल के रूप कार्य किया है। ज्ञानू चला ससुराल, चुंबक, छींटे, चिठ्ठी आई है आदि आपकी प्रसिद्ध फिल्में हैं। आपने गुप्ता मूवीज की स्थापना की है।

संजय गुप्ता : बालीवुड में डायरेक्टर, प्रोड्यूसर व स्क्रीन राइटर के रूप में सन् 1984 से सक्रिय हैं। आपका जन्म 23.10.1969 को मुंबई में हुआ था। विश्व के सबसे बड़े फिल्मी व्हाइट फीदर फिल्म्स आर्ट हाउस की स्थापना आपने की। रोमांचक फिल्मों के निर्माण के लिए विशेष ख्याति प्राप्त हैं। आपने 11 फिल्में निर्देशक के रूप में, 8 फिल्में निर्माता के रूप में कीं तथा 12 फिल्मों की स्टोरी लिखी। मुसाफिर, कांटे (नोमिनेशन फिल्मफेयर एवार्ड) , दस कहानियां, जंग, आतिश, शूट आउट एट वडाला आदि मशहूर फिल्में बनाई हैं।

मथुरा प्रसाद अग्रवाल : फिल्म निर्माता, जिंदल गौत्र, जन्म–23.7.1935, आपने 1978 में सत्येन्द्र फिल्मस् व मोशन पिकचर्स निर्माता कंपनी की स्थापना की। सत्येंद्र फिल्मस् के अंतर्गत एक बहुत बड़े बजट की फिल्म ''दो वक्त की रोटी'' बनाई।

राजकुमार गुप्ता : आप एक सम्मानित फिल्म निर्माता, निर्देशक व स्क्रिप्ट राईटर हैं। आपका जन्म–1976, हजारी बाग, झारखंड में एक मध्यम परिवार में हुआ था। इन्होंने 2 फिल्मों का सहनिर्देशन, 3 फिल्मों का निर्देशन किया, 4 फिल्मों के आप राइटर रहे व कुछ फिल्मों का निर्माण भी किया। आप बारह आना, नो वन किल्ड जेसिका, घन चक्कर, आमीर फिल्मों के निर्माता रहे।

मनीष गुप्ता : बालीवुड में फिल्म निर्देशक व स्क्रीन राइटर। जन्म–मुंबई में। फिल्म लाईन में 2005 से सक्रिय हैं। स्क्रिप्ट राईटर के रूप में काम करते हुए आपने फिल्म सरकार से फिल्म निर्देशक के रूप में अपना कैरियर प्रारंभ किया। फिल्म सरकार में अमिताभ बच्चन, अभिषेक वच्चन व कैटरीना कैफ थीं। हौंसला आपकी लेटेस्ट मूवी है।

अमित गुप्ता : निर्देशक, स्क्रीप्ट राइटर, थियेटर अभिनेता हैं। आपने 2002 में संजय लीला भंसाली के साथ देवदास फिल्म का सहनिर्देशन किया। फिल्म चरस, बेचलर पार्टी का निर्देशन किया। डी. डी.वन पर आने वाले मशहूर सीरियल चौपाल, सबरंग, सारे जहां से अच्छा, खोजखबर आदि का सहनिर्देशन किया है। आपने विदेशों में भी काफी काम किया है साथ ही काफी विज्ञापन फिल्में भी की हैं जैसे– बजाज, नोकिया, स्वराज ट्रेकटर, बाइक्स आदि। थियेटरों में भी आपने अभिनय किया है। अमित गुप्ता का जन्म 25.05.1975 को मुंबई में हुआ था। अभी आप फिल्म सिटी रोड, मलाड, मुंबई में रहते हैं। आपने अनेक राष्ट्रीय एवार्ड जीते हैं।

अमित गुप्ता (एन आर आई) : फिल्मी लाईन में आप डायरेक्टर, ऐक्टर व राइटर के रूप में जाने जाते हैं। आपकी फिल्में हैं– रेजिस्टेंस, ब्रिटिश कॉमेडी फिल्म–जादू। 2012 में आपको फिल्म साज में बेस्ट ऐक्टर का अवार्ड अलीगढ़ में मिला, 2012 में ही आपको सलेक्टेड वर्ड किड्स इंटरनेशल अवार्ड मुंबई में मिला, 2013 में आपको यू एस ए में अंतरराष्ट्रीय एवार्ड भी मिला।

टी. पी. अग्रवाल : फिल्मी लाईन में आप डायरेक्टर व प्रोडयूशर के नाम से जाने जाते हैं आपने अनेक मशहूर फिल्मों का निर्माण किया है।

राहुल अग्रवाल : ये हिंदी फिल्म निर्माता व अभिनेता और स्टार एंटरटेनमैंट वर्ल्ड वाइड प्राइवेट लिमिटिड के डायरेक्टर हैं। ये प्रसिद्ध हिंदी फिल्म निर्माता तथा प्रोडयूशर ऐसोशिएशन के अध्यक्ष श्री टी. पी.

अग्रवाल के सुपुत्र हैं। इन बाप बेटे की जोड़ी ने फिल्म पुलिस गिरी का निर्माण किया, जिसमें लीड रोल संजय दत्त का था।

जतिन कुमार अग्रवाल : राजस्थानी फिल्मों के डायरेक्टर व प्रोडयूशर रहे हैं। इनकी सबसे सफल व प्रसिद्ध राजस्थानी फिल्म ''म्हारी प्यारी छन्नाना'' थी।

मनमोहन बंसल : हरियाणा के प्रसिद्ध फिल्म डायरेक्टर जिन्होंने 1982 में सबसे प्रसिद्ध **पहली हरियाणवी फिल्म बहूरानी** बनाई थी जो सफल वाणिज्यिक फिल्म भी थी।

धीरज अग्रवाल : निर्माता व निर्देशक के रूप में आपने वर्ष 2011 में जयदेव प्रसिद्ध फिल्म बनाई। प्रोत्साहक फिल्मों के विशिष्ट निर्माता तथा विशेष कार्यक्रमों उनका प्रदर्शन।

सनी अग्रवाल : राजस्थानी फिल्मों के प्रमुख निर्माता तथा एक्टर हैं जो राजस्थान के सीकर जिले के रहने वाले हैं। इनके द्वारा राजस्थानी की सामाजिक फिल्मों का निर्माण किया गया जिसमें इन्होंने एक्टिंग भी की है। इनकी प्रसिद्ध राजस्थानी फिल्में हैं – बापूजी ने चाहे बीनणी, जय जीण माता, म्हारा श्याम धणी दातार, कृपा करो सुंधा माता आदि। इनके द्वारा राजस्थान की ऐतिहासिक फिल्मों का निर्देशन भी किया गया है। सनी अग्रवाल अब मुंबई में रह रहे हैं। इन्होंने मराठी फिल्म कितने पास–कितने दूर में तथा गुजराती फिल्मों में भी एक्टिंग की है। इनको अनेक अवार्ड मिले हैं राजस्थानी फिल्मों में काम करने तथा निर्दशन करने के लिए जैसे – मरूधरा गौरव, कमरवीर पुरस्कार, राजस्थानी रत्न, धर्म रत्न तथा अन्य अनेक पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है।

विवेक अग्रवाल : मशहूर फिल्म निर्माता, अंग्रेजी फिल्म द लेंड गोल्डन विमन (The land golden women) के 2010 में राष्ट्रीय पुरस्कार

विजेता रहे हैं। दुनियां की यह पहली ऐसी फिल्म है जिसमें स्वेच्छिक मृत्यु (ऑनर किलिंग) के बारे में उल्लेख किया गया है। 2011 के अंदर बॉलीवुड में ''मौसम'' एक ऐसी फिल्म थी जिसने करोड़ो रूपयों का व्यापार किया। इस फिल्म के हीरो को बेस्ट एकटर का अवार्ड भी मिला।

मनोज अग्रवाल : बॉलीवुड फिल्म निर्देशक के रूप में एक जाना पहचाना नाम जो फिल्मी लाईन में 1986 से निर्देशक के रूप में सक्रिय हैं। राम जाने, खतरनाक, बहूरानी, बात बन जाए, वाह तेरा क्या कहना, हद करदी आपने, परदेशी बाबू आदि आपकी मशहूर फिल्में हैं जिन्हें आपने निर्देशित किया। मनोज अग्रवाल ने लगभग सभी मशहूर अभिनेता व अभिनेत्री के साथ कार्य किया।

मुकेश शाह व साहम शाह : फिल्म बाबर व द शिप ऑफ थिसियस के निर्माता एवं अभिनेता। उत्कृष्ट फीचर फिल्म निर्माण के लिए राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार (स्वर्ण कमल) से सम्मानित।

संदीप बंसल : इनकी फिल्म प्रोडयूसर के रूप में पंजाबी फिल्म बिक्कर बाई सेंटिमेंटल रिलीज हुई है! यह एक पारिवारिक फिल्म है।

आर-डी एवं कमल बंसल : सुप्रसिद्ध बंगला फिल्म बिबार के सफल निर्माता व निर्देशक। इस फिल्म में चेतन्य अग्रवाल तथा वर्षा बंसल की भी उत्कृष्ट प्रस्तुति रही है।

तोलाराम जालान : सुप्रसिद्ध फिल्म स्टूडियो फिल्मीस्तान के संचालक तथा अनेक उत्कृष्ट फिल्मों के निर्माता।

बृजभूषण गुप्ता : जाने माने फिल्मी लेखक व उपन्यासकार। ख्वाजा अहमद अब्बास की फिल्म दो बूंद के साथ बेरिस्टर तथा अनेक धारावाहिक जैसे – धार, सूर्यपुत्र शनिदेव, ओम नमः शिवाय आदि के

संवादों का लेखन आपने किया।

रोहित राज गोयल : टी वी सीरियलों के डायरेक्टर हैं। आप द्वारा निर्देशित ''दिया और बाती हम'' ने काफी प्रसिद्धि पाई है।

अशोक गुप्ता ने निर्देशक व निर्माता के तौर पर यार मेरी जिंदगी फिल्म बनाई जिसमें राहुल देव बर्मन ने म्यूजिक दिया। इसके अलावा आपने जय मां दुर्गे नामक फिल्म भी बनाई।

अर्जुन गुप्ता टी.वी. कलाकार तथा टी वी सीरियल निर्माता हैं जिन्होंने बेबी सेलर्स, कंपनी टाउन, चेक्ड आउट आदि सीरियल बनाए तथा 2012 में आपने टी वी सीरियल में अभिनय भी किया है।

महिम मित्तल : नोसा फिल्म सिटी बनने के बाद प्रथम कला फिल्म काफी हाउस का निर्माण किया।

उमेश अग्रवाल : आप अनेक वर्षों से टेलीविजन शो और डॉक्यूमैंट्री फिल्में प्रोडयूज व डायरेक्ट कर रहे हैं। उनका शो किरण जॉय ऑफ गिविंग' रिकॉर्ड पांच बार इंडियन टेलीफोन एवार्ड जीत चुका है व दो बार टी वी एकेडमी एवार्ड भी जीत चुका है। उनकी फिल्म The Whistle Blowers को बेस्ट इन्वेस्टीगेटिव फिल्म का नेशनल एवार्ड मिल चुका है। आपके द्वारा जय हो नाम से 60 मिनट की डाक्यूमेंट्री फिल्म की स्क्रीनिंग वाशिंगटन के वाइट हाउस में की गई।

अमित अग्रवाल - प्रोडयूसर : आपने वर्तक नगर फिल्म बनाई है।

नरेन्द्र गोयल : प्रख्यात निर्माता निर्देशक, दूरदर्शन पर सीरियल बनाते हैं।

पद्मविभूषण विजयपत सिंघानिया : आपने वो तेरा नाम था नामक फिल्म

का निर्माण कर कला जगत में अपनी छाप छोडी।

काका हाथरसी व इनके पुत्र डा लक्ष्मीनारायण गर्ग : आपने एक फिल्म जमुना किनारे 1983 में बनाई जो ब्रज संस्कृति पर आधारित है। इसके प्रोड्यूसर, डायरेक्टर डा लक्ष्मीानारायण गर्ग हैं व संगीत भी आपने ही दिया है। काका हाथरसी ने फिल्म जमुना किनारे में कविता पाठ एवं अभिनय किया था। ग्रामोफोन रिकार्डस – काका हाथरसी के स्वंय की आवाज में एच एम वी द्वारा तीन डिस्क रिकार्ड्स तथा अमरनाद बंबई द्वारा दो कैसेट बनाए गए।

अतुल गर्ग : सुप्रसिद्ध फिल्म निर्माता – 1992 में उज्जैन सिंहस्थ महोत्सव पर ''आदि कुंभ'' डाक्यूमैंट्री फिल्म का निर्माण किया। आपने अनेक फिल्मों व टी वी सीरियल का निर्माण किया।

ओम प्रकाश केजरीवाल : जन्म 23 फरवरी 1944, आप इतिहास खोजी हैं। बंबई फिल्मस् डिवीजन में भी कार्यरत थे। आपकी फिल्म लाईफ को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। आप ऑल इंडिया रेडियो दिल्ली में 1971 से 1974 तक समाचार संपादक के पद पर कार्यरत थे। आप भारत सरकार प्रकाशन विभाग में 1993 से 1996 तक डायरेक्टर रहे व 1997 से 1999 तक ऑल इंडिया रेडियो में डायरेक्टर जनरल रहे।

निशांत गोयल : कारेकोइज फिल्मस् के डायरेक्टर रहे हैं, आपको रेडियो, एडवर्टाइजिंग, टी वी फिल्मों का लंबा अनुभव है। आपने टाटा स्काई, वोडाफोन व रिलायंस मोबाइल फिल्मों का भी निर्देशन किया है। आपको कोरकोइज फिल्मस् के बोर्ड का डायरेक्टर नियुक्त किया गया। कोरकोइज फिल्मस् ने 10 वर्षों में 250 से अधिक फिल्मी बनाई हैं।

गायक कलाकार

मुकुल अग्रवाल : प्लेबेक सिंगर (पार्श्व गायक) अल्का यागनिक व उदित नारायण के साथ कई फिल्मों में गाने गाए हैं। फिल्में – दीवार, सपने साजन के, संग्राम, दिल तेरा आशिक, दिल ही तो है, आतिश आदि। गाने जैसे– कम से कम इतना कहा होता, दिल तेरा आशिक, एक लड़की का दीवाना मैं इत्यादि। बतौर एक्टर आपने रन, संगीत व तेरी कसम में काम किया। आप अनेक फिल्मों के एक्जिक्यूटिव प्रोडयूसर जैसे संगीत, इतिहास, तेरी कसम, राम बलराम आदि, एक्जिक्यूटिव कंट्रोलर जैसे मि.इंडिया व एक्जिक्यूटिव मैनेजर जैसे राम तेरा देश भी रहे हैं।

रोकी मित्तल : जन्म–12 फरवरी 1978, पिता–श्री प्रेमचंद मित्तल, गांव–बबलादना, खेथल–हरियाणा. 16 साल की उम्र में मित्तल कैसिट के नाम से कंपनी बनाई। 1998 में हरियाणवी डी जे बने। 2000 में एक गीतकार के रूप में काम करने लगे। 2010 तक इनके 500 एलबम प्रसारित हुए, उसमें हरियाणवी, पंजाबी हिमाचली, राजस्थानी, हिंदी, भोजपुरी आदि भाषाओं के गीत शामिल हैं। इन्होंने भक्तिमय लोकगीतों को भी लिखा है। अब तक इन्होंने 2500 गीत लिखे हैं। अब आपने अपना रूख देश भक्ति गीतों की ओर कर लिया है ।

नमिता अग्रवाल : उड़िया लोकगीत की महान गायक व भजन गायक कलाकार हैं। अपने हिट गानों के कारण से इन्होंने प्रसिद्धि हॉसिल की है। ईश्वर ने इनको यूनिक आवाज दी है। इनके पति श्री सीताराम अग्रवाल सार्थक म्यूजिक के मालिक हैं। नमिता अग्रवाल के भजनों का एलबम भी है। अब इन्होंने निवेदिता के नाम से आधुनिक एलबम व फिल्मों के गाने शुरू किये हैं। अपने पति के साथ इन्होंने 2013 में फिल्म यू एका तुम्हारा (मैं केवल तुम्हारे लिए हूं) प्रोडयूज की थी जिसे सर्वश्रेष्ठ उड़िया फिल्म, सर्वश्रेष्ठ उड़िया निर्देशन, सर्वश्रेष्ठ उड़िया

कलाकार महिला व पुरूष का फिल्मफेयर एवार्ड मिला था।

अस्मिता गर्ग : शर्मीले स्वभाव व कोमल आवाज की धनी 15 वर्षीय अस्मिता गर्ग ने पंजाबी फिल्म ''ओजीजे'' में दो गाने गाकर फिल्म गायकी की शुरूआत की है। अस्मिता ने पांच वर्ष की उम्र से ही शास्त्रीय संगीत की शिक्षा पटियाला में प्रारंभ की थी। इनका एक हिंदी एलबम ''रिंगा रिंगा द क्रेजी गर्ल'' और पंजाबी एलबम ''आवो नी सैंयो'' पहले ही रिकार्ड हो चुका है। अस्मिता एक धार्मिक एलबम भी बना रही हैं। इनका उद्देश्य सफल पार्शिव गायिका बनना है। अस्मिता पटियाला में एक प्रसिद्ध नाम है।

उमा गर्ग : गीत–भजन, गजल, ठुमरी, दादरा और ख्याल गायन में आपका विशेष नाम है। आपकी आवाज में ग्रामोफोन रिकॉर्ड तथा कैसेट तैयार हो चुके हैं। गायन के क्षेत्र में आपको शोभना अवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है। जमना किनारे गीत के लिए आपको श्रेष्ठ पार्श्व गायिका पुरस्कार मिला है।

अर्पित गुप्ता : बहुभाषी गायकी के धनी अर्पित गुप्ता हिंदी, मलयालम, तमिल, तेलगु, कन्नड़ तथा अंग्रेजी भाषा के सिद्धहस्त गायक कलाकार हैं। ये सात बार फिल्म फेयर अवार्ड के लिए नोमिनेटेड हुए। इसके अलावा आइफा एवार्ड, जी सिनेमा अवार्ड के लिए नोमिनेटेड हुए तथा कई स्क्रीन अवार्ड भी आपको मिले हैं।

रोकी मित्तल : गायक कलाकार व गीतकार हैं। बचपन से ही ये संगीत से प्रेम करते थे। आप हरियाणा के रहने वाले हैं। अपने फिल्मी संगीतकार के रूप में शुरूआत की। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के अभी तक आपके लगभग 500 एलबम आ चुके हैं। 2500 के लगभग आपने गीत लिखे हैं। अब आपने अपना देश भक्ति गीतों की तरफ अपना रूख किया है।

दीपांशु अग्रवाल : आपका जन्म गुड़गांव में हुआ तथा आप एक उभरते

कलाकार हैं। आपको तानसेन एवार्ड 2006 में मिला है। आपने कई स्टेज प्रोग्राम किए हैं। आप भारत के एक सफल प्लबैक सिंगर बनना चाहते हैं।

सचिन गुप्ता : इनका जन्म 12.8.1981 को नई दिल्ली में हुआ था। आप संगीतकार, गिटार प्लेयर व सिंगर हैं।

शिप्रा गोयल : आपने हंसी तो फंसी फिल्म में इश्क बुलावा गाना गाकर लोगों का दिल जीत लिया। आप फिल्म वैलकम बैक में भी गाना गा रही हैं। फिल्म हीरो में यादें तेरियां – गाना गाया। आपने अभी तक पंजाबी फिल्मों में 15 से अधिक गीत गाए हैं। शिप्रा संगीतकार परिवार से हैं।

अन्य

अदिति मित्तल : एकमात्र स्टैण्डअप इंग्लिश कॉमेडियन– आप अभिनेत्री, लेखक और टीचर हैं। टॉइम्स ऑफ इंडिया ने इन्हें भारत के 10 टॉप कॉमेडियन में रखा है। इन्होंने अपना शो 'मिस बिहेव्ड' बनाया। आपने अमेरिकन डाक्यूमेंट्री 'स्टैण्ड अप प्लेनेट' में काम किया। 'घंटा एवार्ड' व 'फिल्म फेल एवार्ड' की आप संस्थापक हैं।

प्रितिका अग्रवाल : ने विक्रम भट्ट की फिल्म ''हेट स्टोरी 2'' से वॉलीवुड में कोरियोग्राफर के रूप में एंट्री की है। इन्होंने इंग्लैंड के ट्रिनिटी लबान कॉलेज से कोरियोग्राफर की स्टडी की है। इन्होंने आज फिर तुम पे प्यार आया है व आईना फिल्म में भी कोरियोग्राफी की है। ये एक ट्रेनिंग स्कूल भी चलाती हैं।

अशोक कुमार अग्रवाल : एशियन सिनेमेटोग्राफर व डायरेक्टज टेक्नी उद्योग के दिग्गज भारतीय। फिल्म थै के लिए नेशनल एवार्ड। कई

फिल्मों में आप डायरेक्टर ऑफ प्रोडक्शन रहे हैं। आपने तमिल, हिंदी, तेलगू फिल्मों में सिनेटोग्राफर का कार्य किया है तथा अनेक एवार्ड जी जीते हैं। आपने अनेक अंग्रेजी फिल्मों में भी कार्य किया है।

शांति प्रसाद अग्रवाल : आप दूरदर्शन महानिदेशालय के कार्यक्रम नियंत्रक रहे ।

भारतेंदु प्रकाश सिंघल : आप केंद्रीय फिल्म प्रमाणिकरण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष रहे ।

ध्वनि मित्तल : मुंबई के मीडिया में चर्चित व सफल व्यक्तित्व। आप एक जानी मानी एंकर हैं। आप देश–विदेश में 1000 से अधिक शो कर चुकी हैं। स्टार प्लस के एक सीरियल में ये एक लीड रोल कर चुकी हैं। जी बिजनेस के रियलिटी शो कलर्स ऑफ यूथ को होस्ट किया है। इन्होंने 2008 में तमिल फिल्म दुराई में भी अभिनय किया है व विजय पाठक के साथ एक बॉलीवुड फिल्म में भी कार्य किया है। इनके कई बंगाली व पंजाबी विडियो भी आ चुके हैं।

अग्रवाल नहीं हैं

याना गुप्ता : प्रसिद्ध मॉडल व अभिनेत्री। राष्ट्रीयता–चेक गणराज्य।

जुबिन गर्ग : जन्म–जोरहट, आसाम। इनका जन्म ब्राह्मण परिवार में मोहिनी मोहन बोर्थाकुर के यहां हुआ । इनका जन्म का नाम जुबिन बोर्थाकुर था। इन्होंने अपना नाम ग्रेट गायक जुबिन मेहता की तर्ज पर जुबिन गर्ग कर लिया, गर्ग इनका गौत्र है। बोर्थाकर एक ब्राह्मण जाति है। आसाम में इस जाति का गौत्र गर्ग भी है।

नोट - इन कलाकारों ने अग्र वैश्य कुल में जन्म लिया व नाम कमाया है। इनकी निजी जिंदगी इनकी स्वयं की है।

अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित अग्रविभूतियां

ये सभी अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हैं।

सुरेश गोयल : बेडमिंटन 1967
(1969 में रेलमंत्री पुरस्कार भी मिला)

सुभाष अग्रवाल : बिलियर्ड व स्कूनर 1983

ओम बी अग्रवाल : बिलियर्ड व स्कूनर 1984
(डबलिन में आयोजित चैंपियनशिप जीतने वाले पहले भारतीय खिलाड़ी)

आशा अग्रवाल : एथलिट (मैराथन) 1985

संध्या अग्रवाल : क्रिकेट 1986

पुष्पेन्द्र कुमार गर्ग : नौकायन 1990

अशोक गर्ग : कुश्ती 1999

अभिजीत गुप्ता : शतरंज 2013

द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित अग्रविभूतियां
(सर्वोत्कृष्ट खेल कोच के रूप में)

सुभाष अग्रवाल : स्कूनर व बिलियर्ड 2010

अजय कुमार बंसल : हॉकी 2010

क्रिकेट टेस्ट अंपायर अग्रविभूतियां

श्री श्याम कुमार बंसल : 1964
एम.वाई.गुप्ता : 1985
श्री रामबाबू गुप्ता : 1986 से 1988

राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड

लेफ्टीनेंट कमांडर पुष्पेन्द्र कुमार गर्ग : नौकायन 1994–95

(**नोट** - अभिनन श्याम गुप्ता – अग्रवाल नहीं हैं। ये माथुर वैश्य हैं इनका जन्म इलाहबाद में हुआ। इनको अर्जुन पुरस्कार मिला। बेंडमिंटन खिलाड़ी हैं।)

क्रीड़ा व खेल जगत में अग्रवाल समाज के अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हुए जिन्होंने समय–समय पर अपने देश का नाम रोशन किया। समाज इन पर गर्व करता है। राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खेलों में अपना जलवा दिखाने वाली अग्रविभूतियों को हम जाने व पहचानें कि अग्रवाल बंधुओं की खेलों में भूमिका व योगदान क्या है?

स्नूकर व बिलियर्ड

सुभाष अग्रवाल : स्नूकर व बिलियर्ड के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी रहे हैं। बिलियर्ड में दो बार राष्ट्रीय चैंपियन का खिताब जीतकर व स्नूकर में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभा प्रदर्शित कर भारत को गौरवान्वित किया। आप विश्व स्नूकर चौंपियन रहे हैं।

ओम बी. अग्रवाल : स्नूकर व बिलियर्ड के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी रहे हैं। पहले भारतीय खिलाड़ी जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय चैंपियनशिप जीती। 1984 में आयरलैंड में विश्व अमेचर स्नूकर का खिताब व 1983 में राष्ट्रीय खिताब जीता। मात्र 38 साल की अवस्था में कैंसर से आपका 15 मई 1994 को स्वर्गवास हो गया।

कमल तुलस्यान : राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त खिलाड़ी, आपने स्नूकर में उल्लेखनीय प्रतिभा का परिचय दिया।

पूजा भरतिया : आपने महिला राष्ट्रीय स्नूकर में उल्लेखनीय प्रतिभा का परिचय दिया।

आदित्य अग्रवाल : आप मुंबई जिमखाना के हैं तथा ख्याति प्राप्त खिलाड़ी हैं।

अरूण अग्रवाल : आपने वर्ल्ड बिलियर्ड चैंपियनशिप 2012 में भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

धावक

आशा अग्रवाल : ने एशिया एवं ओलंपिक खेलों में मैराथन दौड़ में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आप की गणना भारत की प्रसिद्ध धाविकाओं में होती है। हांगकांग में आयोजित विश्व मैराथन दौड़ में विजय प्राप्त कर भारत का नाम रोशन किया। आपको 1985 का सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाडी घोषित किया गया व एयर इंडिया ट्राफी प्रदान की गई। 1988 में आयोजित हांगकांग अंतरराष्ट्रीय मैराथन में आपने अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया व तीसरा स्थान प्राप्त किया। 1983 में दिल्ली मैराथन में आपने स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

शतरंज

अभिजीत गुप्ता : जोहानसबर्ग में आयोजित राष्ट्रमंडल शतरंज चैंपियनशिप में ग्रैंडमास्टर और पूर्व विश्व जूनियर चैंपियन अभिजीत गुप्ता ने 11वें और अंतिम दौर में राष्ट्रमंडल शतरंज चैंपियनशिप का खिताब जीता। अभिजीत ने राष्ट्रमंडल ही नहीं बल्कि ओवरहाल खिताब भी जीता। उन्होंने लगातार छः बाजियां जीतीं।

अभिजीत की इस कामयाबी ने न केवल भारत का मान बढ़ाया बल्कि मेजबान देश दक्षिणी अफ्रीका के राष्ट्रपति जैकब जूमा को भी अपना कायल बना लिया। जूमा अभिजीत की शैली से इस कदर प्रभावित हुए कि वह भारतीय खिलाड़ी की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके। जूमा ने अभिजीत को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। इस दौरान रूस के विश्व चैंपियन गैरी कास्पारोव भी उपस्थित थे। अभिजीत भीलवाड़ा–राजस्थान के रहने वाले हैं। 2013 में इन्हें अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अभिजीत की बड़ी उपलब्धियां

– 13 वर्ष की उम्र में वर्ष 2002 में जूनियर नेशनल चैंपियन बने, सबसे युवा खिलाड़ी होने के नाते ''लिम्का बुक आफ रिकार्डस्'' में नाम दर्ज हुआ।
– 2000 में एशियन यूथ अंडर 12 चैंपियनशिप जीती।
– 2004 में राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप अंडर 16 जीती।
– 2005 में इंटरनेशनल मास्टर नोर्म हासिल किया।
– 2006 में अंडर 18 में जीता राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप खिताब।
– 2007 में राष्ट्रमंडल चैंपियनशिप का जूनियर खिताब जीता।
– 2008 में ग्रेंडमास्टर नोर्म हासिल की, इसी वर्ष अंडर 20 वर्ल्ड जूनियर चैंपियनशिप में खिताब।
– 2009 में इंटरनेशनल ओपन टूर्नामेंट के जूनियर वर्ग में स्वर्णपदक।
– 2011 में लंदन चैस क्लासिक ओपन में स्वर्णपदक जीता।
– 2012 में एशियन टीम चैंपियनशिप का खिताब जीता।

आर.के.गुप्ता : शतरंज चैंपियनशिप में उल्लेखनीय नाम।

बृजेश अग्रवाल : जूनियर शतरंज खेल में प्रतिभावान खिलाड़ी, आपने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया ।

किरण अग्रवाल : ने शतरंज में राष्ट्रीय चैंम्पियनशिप प्राप्त कर इस खेल में प्रथम अग्रवाल महिला होने का गौरव प्राप्त किया। आप राजनंद गांव की निवासी हैं तथा शतरंज में अंतरराट्रीय पहचान बनाई है। 1986 में मध्यप्रदेश का आपको विक्रम पुरस्कार प्राप्त हो चुका है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किरण स्कॉट लैंड लंदन, दुबई, सिंगापुर, ढाका आदि में भारत का प्रतिनिधित्व कर चुकी हैं। 1990 में युगोस्लाविया ओलंपिक में भाग लेने का आपको अवसर मिला। आपने अनेक देशों में शतरंज खेली है। किरण को शतरंज विरासत में मिली। आपके पिता श्री एम.डी.अग्रवाल भी शतरंज के ख्याति प्राप्त खिलाड़ी हैं।

अरूणिमा गोयल : 14 वर्षीय अरूणिमा गोयल ने चंडीगढ़ में शतरंज की चंडीगढ़ चैंपियनशिप में यू 17 गर्ल्स कैटेगिरी का टाइटल जीत कर कमाल किया है। इसके पहले भी अरूणिमा ने चंडीगढ़ जूनियर चैंपियनशिप का टाईटल जीता था।

तारिणी गोयल : अरूणिमा की बहिन तारिणी गोयल ने भी इसी चैंपियनशिप में यू–11 गर्ल्स कैटेगिरी में गोल्ड मेडल प्राप्त किया। विमेंस चैस चैंपियनशिप 2015 तीन में से तीन अंकों से जीते।

शतरंज के राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी : पंकज कुमार अग्रवाल हैदराबाद, रोहन अग्रवाल यूएसए, वंतिका अग्रवाल, राशि अग्रवाल, किरण अग्रवाल अंतरराष्ट्रीय, यश अग्रवाल व मनीष गोयल इंदौर, वैभव गोयल व कीर्ति गोयल पंजाब, लोकश गोयल व निशांत मित्तल व नितिन गर्ग हरियाणा, शुभम गोयल भोपाल, आदित्य मित्तल व आरूल गुप्ता अंतरराष्ट्रीय, दीपक सिंघल, महक सिंघल, विष्णु गर्ग दिल्ली, रचित गोयल, विपुल अग्रवाल, सात्विक गुप्ता–यू.पी.

बेडमिंटन

सुरेश गोयल : इनका भारत के सुप्रसिद्ध बेडमिंटन खिलाड़ियों में अग्रणी

नाम है। 15 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय चैंपियनशिप विजेता, 1967 से 1970 तक राष्ट्रीय चैंपियन और दो बार विश्व चैंपियनशिप का गौरव प्राप्त किया। 1970 में विश्व चैंपियन अरनाल कोटस् को हराकर बेडमिंटन जगत में भारत का नाम उज्ज्वल किया। 1960 में राष्ट्रीय चैंपियनशिप तथा कामनवेल्थ गेमों मे भारत का प्रतिनिधित्व किया। 1972 में आपको म्यूनिख ओलंपिक खेलों में खेलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अर्जुन पुरस्कार प्राप्त।

डा. अखिलेश दास गुप्ता - सांसद : आप बेडमिंटन के जाने माने खिलाड़ी हैं। आपने जूनियर बेडमिंटन खिलाड़ी के रूप में इंग्लैंड में पूर्ण प्रशिक्षण लिया तथा उत्तर प्रदेश स्टेट बेडमिंटन टीम के आप कप्तान रहे, आपने राष्ट्रीय डबल्स चैंपियनशिप सहित कई राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय मैच जीते हैं।

कुहू गर्ग : 78वीं सीनियर नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप में कुहू गर्ग मेडल जीतने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी रही हैं। कुहू ने अंडर 16 में कांस्य पदक जीता है। कुहू उत्तराखंड से हैं। इनको इंडियन जूनियर टीम में चुना गया है। ये बेडमिंटन एशिया यूथ यू 19 चैंपियनशिप 2013 में मलेशिया में भाग ले चुकी हैं। इन्होंने बैंकाक में जूनियर वर्ल्ड चैंपियनशिप में भी भाग लिया है। 2014 में बेल्जियम में हुए मिक्स डबल्स में पहला अंतरराष्ट्रीय खिताब जीतकर देश के लिए गोल्ड मेडल प्राप्त किया। ये जूनियर अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में मिश्रित युगल वर्ग का खिताब जीतने वाली भारत की जूनियर बैडमिंटन खिलाड़ी हैं। कुहू बीएसएफ के आईजी श्री अशोक कुमार गर्ग की पुत्री हैं।

महिमा अग्रवाल : बैडमिंटन में आपने काफी ख्याति अर्जित की है।

हर्षित अग्रवाल : सीनियर एंड स्टेट रैकिंग बेडमिंटन टूर्नामेंट में टॉप सीड खिलाड़ी।

टिंकू बंसल : चरखी दादरी – आपने हरियाणा स्टेट चैंपियनशिप के बैडमिंटन डबल गेम्स में स्वर्ण पदक जीता है। राष्ट्रीय स्पर्धा के लिए आपका चयन हुआ है, आपने कई स्पर्धाओं में अग्रवाल समाज का नाम रोशन किया है।

नौकायन

पुष्पेन्द्र गर्ग : नौकायन में विशिष्ट प्रतिभा। 1990 व 1994 में बीजिंग व हिरोशिमा में आयोजित एशियन खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व व कांस्य पदका प्राप्त। 1993 में विश्व चैंपियन। अर्जुन पुरस्कार व राजीव गांधी खेल रत्न अवार्ड से सम्मानित। भारतीय जलसेना में लेफ्टीनेंट कमांडर।

क्रिकेट

संध्या अग्रवाल : भारतीय क्रिकेट टीम की सफलतम कप्तान व विश्व रिकार्ड धारक। 1986 में इंग्लैंड के विरूद्ध एक पारी में 190 रन बनाकर विश्व रिकार्ड। अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित।

राजेन्द्र गोयल : जन्म 20.9.1942, आप हरियाणा के लेफ्ट आर्म स्पीनर रहे हैं। आपने रणजी ट्राफी में 600 विकेट लिए हैं। आप राइटहैंड बैटिंग भी किया करते थे। आपके पुत्र नीतिश गोयल भी क्रिकेट के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं।

विवेक अग्रवाल : इंडियन क्रिकेटर, जन्म – 03.10.1962 मेरठ (यू.पी.) में तथा स्वर्गवास 26.04.1993 आप दाएं हाथ के बल्लेबाज थे तथा हरियाणा की तरफ से खेलते थे। आप इंडियन एयरलाइन्स में कार्यरत थे।

संदीप गुप्ता : केन्या के प्रसिद्ध क्रिकेटर, बल्लेबाज व गेंदबाज व

विकेटकीपर। मेरिल अंतरराष्ट्रीय खेलकूद एवं 1999 के वर्ल्डकप में भाग लिया तथा मैन ऑफ द मैच रहे।

क्रिकेट के अन्य खिलाड़ी : मयंक अग्रवाल व सनी गुप्ता – ओपनर, हरमीत सिंह बंसल, करण गोयल व सुभाष अग्रवाल (आईपीएल) में रायल चैलेंजर व दिल्ली डेयरडेविल टीम में खेल रहे हैं। इन्होंने कई राज्यों में टी–20 मेच भी खेले हैं तथा बोलिंग भी करते हैं। 2010 मे मयंक अग्रवाल ने कर्नाटक प्रीमियर लीग शतक बनाया व मैन ऑफ दी सीरीज का खिताब प्राप्त किया। करण गोयल– ओपनिंग बेट्मैन–किंग्स इलेवन, पंजाब। प्रवीण गुप्ता (यूपी), गौरव गुप्ता (पंजाब) अनुपम गुप्ता, (बड़ौदा), समृद्ध, सुनील अग्रवाल उर्फ सेम अग्रवाल (इंग्लैंड) आप आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी व आक्सफोर्ड एमसीसीयू से खेलते हैं। आपका जन्म आगरा–यूपी में 13.7.1990 को हुआ था। आकाश गुप्ता (नेपाल), प्रशांत गुप्ता (यूपी) मनीष गुप्ता व अंकित अग्रवाल–बल्लेबाज व गेंदबाज (हिमाचल प्रदेश) माणिक गुप्ता व अश्विनी गुप्ता (जे एंड के) विनोद गुप्ता, अर्जुन गुप्ता व शिल्पा गुप्ता (दिल्ली), अभिषेक गुप्ता (मप्र), कुशल अग्रवाल, अर्जित गुप्ता (राजस्थान) आप दोनों ही राजस्थान की रणजी टीम से खेलते हैं। दोनों ही बल्लेबाज हैं। सनी गुप्ता – जमशेदपुर (बिहार) के क्रिकेटर हैं। तन्मय अग्रवाल – रणजी प्लेयर, हैदराबाद के ओपनर बैट्समैन। इसके अलावा अंकित अग्रवाल तथा संदीप गुप्ता ने भी क्रिकेट में नाम कमाया है।

टेबल टेनिस

नेहा अग्रवाल : इंडियन टेबल टेनिस की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी 2008 के बीजिंग ओलंपिक में भाग लिया। आप जूनियर नेशनल टी टी विनर रही हैं। आपने केवल सात साल की उम्र में ही टेबल टेनिस खेलना आरंभ किया। 2007 में ऐशियन चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। आपके कोच श्री संदीप गुप्ता हैं। आपका जन्म 1990 में दिल्ली

में हुआ। विजेता – नोर्थ व साउथ जोन सब जूनियर गर्ल्स व अन्य।

उत्कृर्ष गुप्ता : आप स्टेज टी टी एकेडमी, दिल्ली से हैं। आपने छोटी सी उम्र में अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिताब जीत कर देश का नाम रोशन किया है। इन्होंने 2014 में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता में एक गोल्ड व एक सिल्वर मैडल जीता है। नेशनल इंडिया टी टी चैंपियनशिप–ईस्ट जोन प्रतियोगिता में 2013 में आपने राष्ट्रीय स्तर पर एक व रिलायंस इंडिया जूनियर व केडिट ओपन टी टी चैंपियनशिप में तीन ब्रांज मेडल जीते हैं।

हिमांशु जिंदल : आप स्टेज टी टी एकेडमी, दिल्ली से हैं। आपने छोटी सी उम्र में अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिताब जीत कर देश का नाम रोशन किया है। 2014 में उत्कृर्ष गुप्ता के साथ हिंमाशु जिंदल की जोड़ी ने जूनियर सर्किट माल्टा जूनियर व केडिट ओपन प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीत कर एक रिकार्ड बनाया।

गिरीश अग्रवाल : अपंगों के लिए बैंकाक में संपन्न फॉर ईस्ट साउथ पेसेफिक गेम्स में भारतीय टी.टी. खिलाडी गिरीश ओमप्रकाश अग्रवाल ने कांस्य पदक अर्जित किया, आप लंबे समय से टी टी खेल रहे हैं और लगातर ईनाम प्राप्त कर रहे हैं। अपंगों के लिए जयपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्पर्धा में आप समूचे भारत में प्रथम रहे तथा नागपुर में संपन्न महाराष्ट्र स्तर की स्पर्धा में इन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया। आपने 1999 में चेकोस्लाविया टी टी चैंपियनशिप में भाग लिया।

टेवल टेनिस के अन्य खिलाड़ी : सीनियर प्लेयर रैंकिंग में मनीष गुप्ता–चंडीगढ़ से इनकी 27 वीं रैंकिंग है। ओसकार बंसल – चंडीगढ़ से इनकी 13 वीं रैंकिंग है। सौरभ अग्रवाल– उत्तर प्रदेश से इनकी 55 वीं रैंकिंग है। गरिमा गोयल– दिल्ली, तथा रिषभ अग्रवाल। इन सभी खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर पर नाम कमाया है।

लॉन टेनिस : यश अग्रवाल – अंडर 19 में जिला स्तरीय विजेता।

पोलो : नवीन जिंदल

ब्रिज : प्रदीप गोविला व सुशील बंसल का ब्रिज में एक जाना पहचाना नाम है।

हॉकी

अजय कुमार बंसल : हाकी के प्रतिष्ठित खिलाड़ी है। भारत सरकार द्वारा हाकी में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय द्रोणाचार्य पुरस्कार–2010 से सम्मानित किया।

कुश्ती

अशोक गर्ग : 24 से अधिक अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रमंडलीय कुश्ती स्पर्धाओं में भारत का सफल प्रतिनिधित्व। अनेक स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक विजेता। अर्जुन पुरस्कार प्राप्त।

राकेश अग्रवाल : नंबर एक पहलवान। दक्षिणी पूर्वी राज्यों की विभिन्न कुश्ती प्रतियोगिताओं में चैंपियन खिताब प्राप्त।

मुक्केबाजी (बॉक्सिंग)

रिशु मित्तल : मुक्केबाजी में रिशु मित्तल हरियाणा स्टेट चैंपियन रही हैं सितम्बर 2014 में 46 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीता था। दिसम्बर 2014 में ग्वालियर राष्ट्रीय खेलों में रिशु ने हरियाणा राज्य का प्रतिनिधित्व किया। 2012 व 2013 में बाक्सिंग में राज्य स्तर खेलों में रिशु ने कांस्य पदक प्राप्त किया। रिशु साधारण परिवार से हैं उनके माता पिता जीवित नहीं हैं। छोटी सी उम्र में ही इन्होंने यह उपलब्धि

हॉसिल की है।

सुनीता गोयल : दिसम्बर 2013, रांची में आयोजित आल इंडिया पुलिस गेम की मुक्केबाजी प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया। इससे पूर्व भी सुनीता मुक्केबाजी में राष्ट्रीय स्तर पर दो दर्जन से अधिक पदक जीत चुकी हैं। खेलों के कारण ही आप हरियाणा में पुलिस कांस्टेबल के पद पर तैनात हैं।

भारतीय शूटर

मलाइका गोयल : पंजाब की रहने वाली 16 वर्षीय मलाइका गोयल ने स्काटलैंड की राजधानी ग्लास्कों में आयोजित कामनवेल्थ गेम में 10 मीटर एयर पिस्टल प्रतियोगिता में रजत पदक प्राप्त किया। दिसम्बर 2012 में सीनियर नेशनल चैंपियनशिप में भी रजत पदक प्राप्त किया। फरवरी 2013 में देश के टाप 10 शूटर को हराकर नेशनल ट्रायल भी जीता, चीन में दिसम्बर 2012 में हुए ऐशियन एयरगन चैंपियनशिप में भी रजत पदक जीता। गोयल विश्व की 15 नंबर खिलाड़ी हैं। इन्होंने 2009 में शूटिंग प्रारंभ की आपके पिताजी पंजाब में पुलिस के सीनियर अधिकारी हैं।

नवीन जिंदल : सिंगापुर, चीन, जयपुर, दिल्ली, गोहाटी, इंदौर तथा विभिन्न देशों में आयोजित राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय नेशनल शूटिंग प्रतियोगिताओं में आपका शानदार प्रदर्शन रहा।

अंकुर मित्तल : यूनाइटेड अरब अमीरात में हुई चौथी एशियन शॉटगन चैंपियनशिप में 22 वर्षीय अंकुर ने भारत के लिए गौल्ड कप जीता। ग्लायसको कॉमनवेल्थन गेम्स में पांचवां स्थान प्राप्त किया। विश्व की प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में भी उन्हें 16 वां स्थान मिला था।

कर्राटे

ईशान अग्रवाल : भारत की श्रेष्ठ महिला कर्राटे खिलाड़ी हैं। आठ वर्ष की उम्र में ही कर्राटे में भाग लिया, भारत सहित अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय कर्राटे प्रतियोगिता में चैंपियन तथा विशिष्ट उपलब्धियों के लिए विभिन्न देशों जैसे सउदी अरब, अमेरिका, ईरान, थाइलैंड, यूनान, पाकिस्तान आदि द्वारा सम्मानित व अनेक पदक प्राप्त।

अल्का अग्रवाल : एथलेटिक्स तथा जूडो–कर्राटे के क्षेत्र में विशेष उपलब्धि प्राप्त।

गोल्फ खिलाड़ी

वंदना अग्रवाल : कोलकाता निवासी, प्रसिद्ध महिला गोल्फर। आपने इंडोनेशिया व सिंगापुर के टूर्नामेंट में भाग लिया।

जिम्नास्टिक

मंजूषा मित्तल : राष्ट्रीय जिम्नास्टिक में उल्लेखनीय प्रतिभा का प्रदर्शन।

बॉडी बिल्डिंग

सुमित सिंगला : हरियाणा एमेचयोर बॉडी बिल्डिंग एसोसिएशन द्वारा राज्य स्तरीय बॉडी बिल्डिंग प्रतियोगिता में सुमित सिंगला ने 70–75 किलोग्राम वर्ग में गोल्ड मेडल प्राप्त कर किया व इसी प्रतियोगिता में सुमित को मिस्टर हरियाणा का खिताब भी मिला है। सिंगला रायल जिम बराडा में प्रशिक्षित हैं। आपने 2009 में मिस्टर मुलाना खिताब जीता।

बास्केट बॉल

जयप्रकाश मित्तल : नागौर जिले की टीम व राजस्थान की बास्केटबॉल की टीम के खिलाड़ी रहे हैं। आपने राज्य स्तर पर नागौर जिले का प्रतिनिधित्व किया हैं।

भारोत्तोलन

शैलेन्द्र अग्रवाल : आप राजस्थान के रहने वाले हैं व वीर अर्जुन व्यायामशाला से संबंध रखते हैं। आपने राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय स्तर अनेक खिताब जीते हैं। वर्ष 2005 में जयपुर में आयोजित जिला सीनियर भारोत्तोलन में रिकॉर्ड के साथ आपने स्वर्ण पदक जीता था।

अन्य खेल एवं प्रतियोगिता में ख्याति अर्जित

देवेन्द्र एवं कपिल मोदी : पिता पुत्र की जोड़ी द्वारा आस्ट्रेलिया में आयोजित एनुअल हाईलेंड एंड इंटरनेशनल ड्रेसेज चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपने घोड़ों से सम्मानित प्रतियोगिता में भाग लिया।

गिरीश ओमप्रकाश अग्रवाल : बैंकाक में अपंगो के लिए आयोजित प्रतियोगिता में 39 देशों के 5700 खिलाड़ियों आपने पांचवा स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक प्राप्त किया।

संजय अग्रवाल : मारूति सुजुकी दक्षिण डेयर 2014 कार रेस में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

ख्याति प्राप्त अंतरराष्ट्रीय अंपायर

श्याम कुमार बंसल : आप एस के बंसल के नाम से जाने जाते हैं आपका

जन्म 7 जुलाई को दिल्ली में हुआ। वन डे तथा टेस्ट क्रिकेट में ख्यात नाम अंतरराष्ट्रीय अंपायर जिन्होंने सन् 1990 से 2000 तक 35 वन डे तथा सन् 1993 से 2001 तक 7 टेस्ट मैचों में अंपायरिंग की।

डा. रामबाबू गुप्ता : टेस्ट क्रिकेट में अंतरराष्ट्रीय अंपायर। 1986 में 06 टेस्ट मैंचों की अंपायरिंग की जो एक रिकार्ड है।

सुश्री अनुराधा बंसल : भारत की सबसे युवा अंतरराष्ट्रीय टेबल टेनिस अंपायर। अभी तक आपने 20 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैचों में अंपायरिंग की है । आप चंडीगढ़ में टेबल टेनिस ऐकेडमी चलाती हैं।

संतोष कुमार अग्रवाल : अंतरराष्ट्रीय रेफरी व हरियाणा की बाक्सिंग संघ के संस्थापक व महासचिव संतोष कुमार अग्रवाल को एशियन इंडोर एवं मार्शल आर्टस गेम्स–2013 के निर्णायक मंडल में शामिल किया गया। श्री संतोष कुमार अग्रवाल विभिन्न देशों में आयोजित कई अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में रेफरी रह चुके हैं।

प्रोफेसर डॉ. राजेंद्र गर्ग : महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, हरियाणा के शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रोफेसर डा राजेन्द्र गर्ग ब्राजील के रेसाइफ में होने वाली विश्व जूनियर कुश्ती चैंपियनशिप के लिए रैफरी चयनित हुए। आप एक मात्र भारतीय ओलंपिक रैफरी भी रहे हैं। फीला ने वर्ष 2013 में उनको ओलंपिक रैफरी के लिए पदौन्नत किया था आप मूल रूप से गांव सुडाना के रहने वाले हैं। डा गर्ग ने ग्रीक से अंतरराष्ट्रीय कोच की शुरूआत की। फीला द्वारा रैफरी चुने गए डा. गर्ग यह उपलब्धि हॉसिल करने वाल पहले भारतीय हैं आपने 23 बार देश का प्रतिनिधित्व किया।

राष्ट्रीय कोच

संदीप गुप्ता : टेबल टेनिस के राष्ट्रीय कोच। इन्होंने भारत में अनेक

अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों को कोचिंग दी जिसमें भारत की अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी नेहा अग्रवाल भी हैं। उल्लेखनीय है कि श्री संदीप गुप्ता ने ओलंपिक तथा राष्ट्रमंडल खेलों में भारत की तरफ से भाग लिया। 18–19 साल पहले आपने स्टेज टी टी एकेडमी, दिल्ली की योजना को मूर्त रूप देने में अपनी अहम् भमिका निभाई।

अशोक गर्ग : कुश्ती में अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त।

भारतीय खेलों के अग्रणी व्यक्ति

जगमोहन डालमिया : भारतीय क्रिकेट जगत में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त। आपको भारत में क्रिकेट को बुलंदियों में पहुंचाने का श्रेय है। आप क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष तथा 1996 में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अध्यक्ष बने। आप बी.सी.सी.आई. के सचिव व एशियाई क्रिकेट के अध्यक्ष भी रहे। बी.सी.सी.आई. ने आपकी गणना विश्व के श्रेष्ठ छः खेल प्रशंसकों में की। दिनांक 20.09.2015 को आपका हृदयघात से निधन हो गया।

ललित मोदी : विश्व के सबसे कुशल क्रिकेट प्रशासक। आपने इंडियन प्रीमियर लीग तथा चैंपियन लीग की स्थापना की। आप क्रिकेट जगत में विभिन्न पदों पर रहे।

सुभाष चंद्रा : जी टीवी के चेयरमैन। 2007 में विश्व के श्रेष्ठ खिलाड़ियों सहित इंडियन क्रिकेट लीग का गठन तथा छः बड़े शहरों में 20–20 मैचों का आयोजन।

स्नेह बंसल : दिल्ली एंड डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन की एक्जीक्यूटिव कमेटी के अध्यक्ष। आप बीसीसीआई के उपघ्यक्ष भी रहे हैं।

पुरुषोत्तम रुंगटा : भारतीय क्रिकेट की राजनीति के प्रमुख स्तंभ तथा राजस्थान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष। 1971 से 1975 तक भारतीय क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके हैं। 1962 से 1971 तक आपने बोर्ड में उपाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। आपने लंबे समय तक बोर्ड की वित्तीय समिति का अध्यक्ष पद कुशलता से संभाला। आप भाया जी के नाम से प्रसिद्ध हैं।

किशोर रुंगटा : भारतीय क्रिकेट बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष, एक दिवसीय मैचों का सफल अंतरराष्ट्रीय आयोजन। राजथान क्रिकेट संघ के अध्यक्ष तथा क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड के कोषाध्यक्ष व एक कुशल प्रबंधक।

यदुपति सिंघानिया : को यू पी क्रिकेट एसासियेशन (यूपीसीए) का अध्यक्ष बनाया गया। यू पी सी ए डेवलपमेंट कमेटी का चेयरमैन एस.के. अग्रवाल को बनाया गया व संदीप गुप्ता् अंपायर कमेटी के सदस्य बने। यदुपति अनेक वर्षों से सीमेंट उद्योग से जुड़े हुए हैं।

सुनील भारतीय मित्तल : भारती एयरटेल द्वारा 2018 के फुटबाल वर्ल्ड कप के लिए उत्कृष्ट भारतीय टीम तैयार करने के हेतु हरियाणा फुटबाल अकादमी, फुटबाल फैडरेशन का गठन किया गया है, जो प्रशिक्षण व अन्य सुविधाएं प्रदान करेंगी। भारती ट्रस्ट ने इस हेतु करोड़ों रूपयो की राशि की व्यवस्था की है ।

डा. अखिलेश दास गुप्ता - सांसद : आप बेडमिंटन के जाने माने खिलाड़ी हैं। वर्तमान में आप उत्तर प्रदेश ओलंपिक एसोसियेशन तथा भारतीय बेडमिंटन ऐसोसियेशन के अध्यक्ष हैं। आप विश्व बेडमिंटन महासंघ तथा बेडमिंटन एशिया महासंघ के उपाध्यक्ष रहे हैं।

केशव बंसल : (राजकोट–गुजरात)– गुजरात लॉयंस – आईपीएल टीम 2016 के मालिक, आप आईपीएल टीम खरीदने वाले सबसे कम उम्र के मालिक हैं (उम्र 24 वर्ष)। आप मोबाइल निर्माता कं. इंटेक्सा टेक्नोलॉजीज इंडिया लि. के निदेशक हैं। आपको वर्ष 2013 में युवा उद्यमी व 2016 में एमिटी लीडरशिप एवार्ड मिला है। आप स्क्वेश खिलाड़ी हैं तथा स्क्वेश में नेशनल खेल चुके हैं

संजीव गोयनका : आईपीएल टीम 2016 Rising Pune Supergiants के मालिक हैं। आपने बंगाल मे फुटबॉल के खेल को भी काफी प्रोत्साहित किया है। आप अनेक वर्षों तक फुटबॉल क्लब से जुड़े रहे।

मित्तल चैंपियन ट्रस्ट : स्टील किंग लक्ष्मी मित्तल द्वारा भारत में खेलकूद प्रतिभाओं को प्रोजेक्ट व प्रशिक्षण देने के लिए 2005–06 में स्थापित ट्रस्ट–, जिससे भारत ओलंपिक, एशियन व कामनवेल्थ आदि खेलों में अधिकतम पदक प्राप्त कर सके। इसी ट्रस्ट के परिणाम स्वरूप अभिनव बिंद्रा ने 28 साल बाद निशानेबाजी में स्वर्ण पदक जीता। बिंद्रा को ट्रस्ट की ओर से पांच करोड़ की राशि प्रशिक्षणार्थ दी गई ।

कोई भी रिकॉर्ड बनाना कठिन तपस्या है, वह रिकॉर्ड विश्व स्तर का हो तो गौरव की बात है।

यह गर्व की बात है कि रिकॉर्ड के प्रयास की अधिक संख्या में दुनियां के किसी भी अन्य देश की तुलना में भारत में ज्यादा रिकॉर्ड बने हैं। भारत के लोग वर्ल्ड रिकॉर्डस् में सबसे आगे हैं, हर 10वां विश्व रिकॉर्ड एक भारतीय के अंतर्गत आता है। रिकॉर्डस् की कहानी की दुनियां भारतीय रिकॉर्ड धारकों के बिना पूरी नहीं की जा सकती। रिकॉर्ड बनाने में अग्रबंधुओं का भी कोई जवाब नहीं। इन रिकॉर्डों में अग्रवाल समाज के गौरव भी शामिल हैं।

विश्व कीर्तिमान में अग्रवाल

गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस्

लक्ष्मी मित्तल : श्री लक्ष्मी मित्तल विश्व के ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में पांच–पांच कीर्तिमान बनाने का गौरव प्राप्त है।

– सबसे मंहगी शादी
– विश्व का सबसे मंहगा बंगला
– सबसे युवा स्वनिर्मित धनाढय
– विश्व में स्टील का सबसे अधिक उत्पादन
– सबसे लंबे कबाब का निर्माण

पद्मविभूषण विजयपत सिंघानिया - (रेमंड समूह के प्रमुख) : गरम गैस के गुब्बारे में सर्वाधिक ऊंचाई की उड़ान भरने का विश्व रिकॉर्ड। आपने 2 घंटे 16 मिनट बाद उल्हास नगर के ऊपर 69852 फीट की (21 किलोमीटर) उंचाई तक पहुंच कर विश्व रिकार्ड बनाया। आपका गुब्बारा 22 मंजिला ऊंचा था।

राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता : सर्वाधिक पैदल यात्रा कर विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का श्रेय। आपने एक लाख 75 हजार किलोमीटर पैदल यात्रा कर जापान का रिकार्ड तोड़ा। आपने भारत के साथ तिब्बत, चीन, पाकिस्तान, सोवियत संघ, कोरिया आदि की यात्रा की और इस यात्रा को पूरा करने में पांच साल छः माह लगे। आप गाजीपुर के निवासी हैं। आपने यह साहसिक अभियान 25 अप्रैल 1984 को बनारस से प्रारंभ किया। यह यात्रा 10 अक्टूबर 1989 को मुंबई के राजभवन पर संपन्न हुई ।

डा. अमित गर्ग - (मस्तिष्क गणना में कीर्तिमान) : अमेरिका में इंजीनियर के रूप में कार्यरत भारतीय गणितज्ञ एवं मस्तिष्कीय संगणक। आपने बिना किसी केलकूलेटर या अन्य सहायता के 10 अंको की संख्या को 10 अंकों की संख्या् से 4.5 मिनट के रिकॉर्ड समय में दस बार भाग देने का कीर्तिमान स्थांपित किया। इससे पूर्व यह रिकार्ड नीदरलैंड का 6.07 मिनट का था।

डा. राकेश कुमार अग्रवाल - (मोतियाबिंद के सर्वाधिक ऑपरेशन में कीर्तिमान) : अमरावती के सुप्रसिद्ध नैत्र रोग विशेषज्ञ डा. राकेश कुमार द्वारा 16000 से अधिक मोतिया बिंद ऑपरेशन कर गिनीज बुक के साथ–साथ लिम्का बुक में भी नाम दर्ज किया गया।

रमेश चंद्र अग्रवाल - (दैनिक भास्कर पत्र समूह के चेयरमैन) : आपने 2008 में इंदौर स्टेडियम में 3000 से अधिक लोगों को आमंत्रित कर एक घंटे में विश्व की सबसे बड़ी चाय पार्टी के सफल आयोजन का गिनीज बुक में रिकॉर्ड बनाया।

काजल अग्रवाल : विभिन्न भाषाई फिल्मों में अभिनय करके गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में नाम दर्ज करवाया। आपने टीवी चैनलों में सर्वाधिक अभिनय किया, दो बार फिल्म फेयर अवार्ड व अन्य अनेक एवार्ड प्राप्त किए।

अनन्त अग्रवाल : भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के फैलो एवं मेसाच्यूएटस इंस्टीट्यूट के वैज्ञानिक अनन्त अग्रवाल ने वायरस टेक्नोलोजी एवं माइक्रोफोन संरचना में नवीन खोज कर गिनीज बुक में अपना नाम लिखाया।

सुभाष चंद्र अग्रवाल : आर टी आई के कारण गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस. में नाम। इनको नेशनल आर टी आई अवार्ड भी मिला है।

श्रीमती मधु अग्रवाल : राष्ट्रहित व जनहित के विषयों पर समाचार पत्र पत्रिकाओं में निरंतर लेखन के कार्य करके समाज सेवा में जुड़ी रही हैं। वर्ष 2003 में समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों के लिए आपका नाम गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस में लिखा गया। आपके लेख विदेशी पत्र पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होते रहते हैं। आप सुभाष अग्रवाल जी की पत्नी् हैं।

डा. अशोक गर्ग : नेत्र रोग पर अंतरराष्ट्रीय स्तर की सर्वाधिक पुस्तकें लिखने पर गिन्नीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस। आपको नेत्र चिकित्सा में विशेष योगदान देने के लिए राष्ट्रीय चिकित्सा शिरोमणि सम्मान से भी अलंकृत किया गया।

दीपक गुप्ता - (लंबे समय तक गायन) : इंदौर के दीपक गुप्ता ने 101 घंटे लगातार गायन कर बनाया।

चन्द्रा मित्तल : विश्व की छः समुद्री धाराओं पर तैरकर कीर्तिमान बनाया।

मोनिका अग्रवाल : संख्याओं द्वारा विश्व की सबसे लंबी पेंटिंग बना कर गिनीज बुक में रिकॉर्ड बनाया। यह पेंटिंग 599.99 मीटर लंबी और एक मीटर चौड़ी है। ये इंजीनियर कॉलेज पूणे की छात्रा हैं।

सुनील भारती मित्तल - (भारती एयरटेल के चेयरमैन व प्रबंध निदेशक) : सत्य

सांई बाबा की सबसे बड़ी जीवनी लिखकर विश्व कीर्तिमान बनाकर गिनीज बुक रिकॉर्ड में नाम लिखाया।

मीनाक्षी अग्रवाल - (रासायनिक संकेतों का न्यूनतम समय मे उच्चारण तथा लेखन) : रासायनिक समय सारिणी के तत्वों का न्यूनतम समय मे उच्चारण कर तथा 91.65 सैकिंड के रिकार्ड समय में 118 संकेतों का लेखन कर दो बार विश्व में कीर्तिमान स्थापित किया है। आपका नाम गिनीज बुक रिकॉर्ड में लिखा गया है।

संजीव अग्रवाल - (साफ्टवेयर निर्माण एवं तकनीकी में कीर्तिमान) : संजीव अग्रवाल ने साफ्टवेयर में सेल्यूशन डवलपमेंट संबंधी यंत्रों एवं तकनीक का विकास कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। आपका नाम गिनीज बुक रिकॉर्ड में लिखा गया है। आप माइक्रोसॉफ्ट फ्रेमवर्क में विशेषज्ञ हैं।

अनिल मित्तल - (विश्व की सबसे बडी चावल डिश के निर्माण, उत्तम कोटि के चावल की आपूर्ति का कीर्तिमान) : इस कब्सा चावल डिश का निर्माण गल्फ घाटी में इदुल जुहा के अवसर पर 2.5 लाख डालर की लागत से किया गया। इसमें 2400 किलो चावल लगे। विश्व की सबसे बड़ी चावल निर्यात इकाई के आर बी एल द्वारा इसका निर्यात किया गया। गिनीज बुक में इसे विश्व कीर्तिमान के रूप में स्थान दिया गया।

डा. सोनिया बदरेशिया बंसल - (सर्वाधिक कैंसर स्क्रीनिंग) : विश्व प्रसिद्ध चर्मरोग विशेषज्ञ डा बंसल को एक ही दिन में सर्वाधिक कैंसर स्क्रीनिंग का विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का गौरव प्राप्त है। आप अमेरिका में एडवांस्डस डर्मेटोलॉजी लेजर एंड प्लास्टिक सर्जरी इंस्टीटयूट की संस्थापक तथा मेडिकल ऑफिसर हैं। आपने लेजर स्किन कैंसर पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आपका नाम गिनीज बुक में सम्मिलित है।

मनमोहन अग्रवाल, अनुज कुच्छल, हिमांशु गोयल - (विश्व के सबसे बड़े भित्ती

चित्र का निर्माण) : सन् 2010 में 12 घंटों में विश्व के सबसे बडे 240 फीट लंबे,120 फीट चौड़े, 40 फीट ऊंचे व 115.4 किलोग्राम वजन के ओरगामी जिर्राफ चित्र का निर्माण कर गिनीज बुक में रिकॉर्ड बनाया। आप आई आई टी खडगपुर के छात्र हैं।

पीयूष गोयल दादरीवाल - (मिरर लेखन) : पीयूष गोयल दादरीवाल, (गाजियाबाद) को मिरर लेखन पद्धति में धार्मिक ग्रंथ भगवत गीता को 318900 शब्दों में लिख कर विश्व कीर्तिमान स्थापित करने का गौरव प्राप्त है। इसके साथ ही उनको अक्षरों को उल्टा लिखने में भी विशेष महारत हांसिल है। 1991 में गिनीज बुक में इनका नाम दर्ज किया गया। हिंदी व अंग्रेजी के अलावा वे पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती जर्मन भाषा को उल्टा लिखने में सिद्धहस्त हैं।

अदिति सिंघल : ये माइंड मेमोरी ट्रेनर हैं। वैदिक गणित में आपको महारत हॉसिल है। आप लेखक व प्रेरणादाय वक्ता भी हैं। आप गिनीज रिकार्ड धारी हैं। लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस् में आपके नाम तीन राष्ट्रीय Memory and fastest Calculation के रिकार्ड हैं। सुधीर सिंधल के साथ आपने गणित की सबसे बडी कक्षा लेने का विश्व रिकार्ड बनाया है।

सुधीर सिंघल : इन्होंने 3245 छात्रों को एक से 99 तक के गणितीय पहाड़े पढ़ाने का, गणित की सबसे बड़ी कक्षा लेने का विश्व रिकार्ड बनाया है।

सुरेश कुमार अग्रवाल : विश्व की सबसे बड़ी एलीफेंट पेंटिंग में विश्व कीर्तिमान बनाया।

अशोक अग्रवाल - सर्वाधिक घंटों का संग्रह : विश्व के 169 देशों के 450 घंटों का संग्रह कर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है।

डा. विवेक सिंगला - 2500 से ज्यादा गणेश मूर्तियों का संग्रह : आप जींद के रहने वाले व पेशे से दंत चिकित्सक हैं। आपने 2500 से अधिक गणेश जी की मूर्तिया का संग्रह कर रिकार्ड बनाया व गिन्नीज बुक में नाम दर्ज करवाया, हर मूर्ति का दूसरे से कोई मेल नहीं है।

विश्वबंधु गुप्ता : भारत का नाम गुब्बारेबाजी में अंतरराष्ट्रीय जगत में गौरवान्वित करने वाले आप सर्वोपरि हैं, आपके प्रयासों से ही भारत में बैलूनिंग क्लब ऑफ इंडिया की स्थापना हुई। इस क्लब का उद्घाटन नील आर्मस्ट्रांग द्वारा किया गया। श्री विश्वबंधु गुप्ता की इस खेल में रूचि का ही परिणाम है कि उनके नाम अनेक राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय रिकार्ड बने हैं। आप पहले भारतीय थे जिन्हें गुब्बारा उड़ाने का लाईसेंस मिला। आपने 253 किलोमीटर लंबी नौ घंटे की लगातार उड़ान का भारतीय रिकार्ड बनाया। इसके अलावा आपने रिवर्डवार और ओलीवर होम्सल के साथ तिब्बत के ले स्थल की सर्वाधिक ऊंचाई से उड़ान भरने का विश्व रिकार्ड बनाया। आपके नेतृत्व में इस क्लब ने भारत में कई मेलों के साथ–साथ तीन क्रासकंट्री अभियान और पांच अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का अयोजन किया।

गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड

सुश्री सौम्या अग्रवाल : उज्जैन के स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में सौम्या ने एक मिनट में 160 रोप जंपिंग कर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया है। पहले यह रिकार्ड 158 का था। 2016 वर्ल्ड जंपरोप चौंपियनशिप, पुर्तगाल में सौम्या ने एक रजत व एक कांस्य पदक जीत कर भारत का तिरंगा पुर्तगाल में फहराया।

लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अग्रबंधु

लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस् का प्रकाशन 1990 से प्रारंभ किया

गया। 2015 तक इसके 28 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। यह भारतीयों और भारत से संबंधित अद्‌भुत चीजों को रिकार्डस् में दर्ज करने वाली भारतीय मूल की रिकार्ड पुस्तक है।

जादूगर सम्राट शंकर अग्रवाल : आपने 1988 में जादू की दुनियां में प्रवेश किया और मात्र 13 वर्ष में ही 11523 स्टेज शो करके लिम्का बुक रिकॉर्ड में नाम दर्ज किया। कैलिफोर्निया के जादूगर विलसन के 9025 शो के रिकॉर्ड को तोड़कर।

सुरभि गर्ग - (भवाई नृत्य में कीर्तिमान) : भीलवाड़ा की प्रसिद्ध भवाई (चकरी) नृत्य में लगातार बिना रूके 1000 राउंड (चक्र) लगाकर विश्व कीर्तिमान स्थापित किया इसलिए इनका नाम लिम्का बुक में दर्ज है।

बेबी जूही अग्रवाल : विलक्षण प्रतिभा की धनी बालिका जूही अग्रवाल ने तीन वर्ष की उम्र में कार चलाकर दुनिया को आश्चर्य चकित कर दिया। साढ़े तीन वर्षीय उम्र में ये अच्छी तरह कार चलाती थीं और तैराक की भांति तैरना भी जानती थीं। इस उपलब्धि के लिए इनको चैतन्य व लिम्का बुक एवार्ड 1993 प्रदान किया गया। जूही श्री प्रमोद कुमार की पुत्री हैं। इस उम्र में इन्होंने हैदराबाद में 20 किलोमीटर तक आंखों पर पट्टी बांध कर कार चलाई थी।

अशोक कुमार मगन लाल गर्ग - (खरगोन - म.प्र.) : आपने सूक्ष्म कलाकारी के क्षेत्र में अद्‌भुत प्रतिभा का प्रदर्शन किया, आप चावल के दाने पर अटल बिहारी बाजपेयी, महाराजा अग्रसेन, आदि के चित्र बना चुके हैं। इसके अलावा चावल के दाने पर 105 बार राम नाम, राष्ट्रीय गीत, चालीस, हाथियों के चित्र आदि का चित्रांकन कर सूक्ष्म आकृतियों के क्षेत्र में अपनी विशेष पैठ स्थापित कर चुक हैं, 1995–96 व 1996–97 में लिम्का बुक रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवा चुके हैं। इसके अलावा 0.44 X 0.35 X 0.35 एम एम माप की आपकी सूक्ष्म नोट बुक है, छोटी बांसुरी, पोस्ट कार्ड के खाली 1/7 भाग पर 10801 बार राम नाम

लेखन, लकड़ी की नक्काशी कर 101 शिवलिंग का निर्माण जैसे अद्‌भुत कार्य भी कर चुके हैं।

कुंजबिहारी गुप्ता : जयपुर निवासी, आपके आविष्कार सन लाइफ कैलेण्डर को लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में शामिल किया गया। इस कैलेण्डर से करोड़ों वर्ष तक के तिथि–वार का पता लगाया जा सकता है, यह कैलेंडर देश में पहली बार तैयार हुआ जिसमें लीप संबंधी किसी प्रकार की त्रुटि नहीं है।

अभिजीत गुप्ता : आप विश्व शतरंज चैंपियन रहे। आपने नेशनल जूनियर अंडर 19 शतरंज चैपिंयनशिप में 13 वर्ष 10 दिन की अवस्था में सर्वाधिक युवा शतरंज चैंपियन होने का कीर्तिमान लिम्का बुक में स्थापित किया।

आकाश गुप्ता : आपने निरंतर 113 घंटे गिटार बजा कर विश्व रिकॉर्ड बनाया। आप तीन बार यह रिकॉर्ड बना चुके हैं। इसके साथ ही आपने सबसे कम समय में 678 गणितीय समस्याओं का हल कर विश्व गणित मेराथन तथा रायरो स्पेस के क्षेत्र में भी कीर्तिमान बनाया है। इसलिए आपका नाम लिम्का बुक में दर्ज है।

सुभाष चंद्र अग्रवाल एवं मधु अग्रवाल - (सार्वजनिक हित के मामलों में सर्वाधिक पत्र) - आप दोनों ने सार्वजनिक हित के मामलों पर समाचार पत्रों में सर्वाधिक पत्र प्रकाशन का पुरूष एवं महिला वर्ग में अलग–अलग विश्व कीर्तिमान बनाया और दोनों का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस् में दर्ज है।

दीपक बंसल : आपने सी एस आई टी आदि विभिन्न श्रेणियों की गेट परीक्षाओं में चार बार उच्च स्थान प्राप्त कर तथा इंजीनियरिंग, टेक्नोलॉजी, कंप्यूटरिंग, गणित प्रबंधन आदि विषयों की एम के, एम एस, एम बी ए आदि स्नात्कोत्तर परीक्षाएं कम उम्र में प्रतिष्ठित संस्थाओं

से उत्तीर्ण कर शैक्षणिक कीर्तिमान बनाने का गौरव प्राप्त कर लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवाया।

उल्लेखनीय है कि आपने एन सी, एस टी मुंबई, तथा सी डी ए बैंगलोर से भी परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं तथा लंदन स्कूल ऑफ इक्नौमिक्स एवं पोलिटेक्निक सांईस, यूनिवर्सिटी ऑफ मेनचेस्टर, बर्मिंघम, वैल्स आदि प्रसिद्ध संस्थानों से उच्चस्तरीय अध्ययन एवं शोध हेतु छात्रवृतियों के प्रस्ताव मिल चुके हैं। इसके साथ ही आपको विश्वविख्यात ओरकेल कॉर्पोरेशन, आई बी एम, विप्रो, मानव संसाधन विभाग व विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय आई टी संस्थानों में कार्य करने का गौरव प्राप्त है।

डा. वी.एस.बंसल - (सबसे बड़ी पथरी का ऑपरेशन) : यूरोलोजी रिसर्च इंस्टीटयूट के प्रबंध निदेशक डा. बंसल ने 13 सेंमी. बडी गुर्दे की पथरी का सफल ऑपरेशन कर कीर्तिमान स्थापित किया।

डा. पुरुषोत्तम लाल जिंदल - (सर्वाधिक एंजियोप्लास्टि) : मैट्रो हॉस्पीटल ग्रुप के चेयरमैन डा जिंदल द्वारा सर्वाधिक एंजियोप्लास्टी करने व इस क्षेत्र में नई विधियों के लाने हेतु इनका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज किया गया।

डा. के. के. बंसल - (सर्वाधिक ब्रेन ट्यूमर्स का निकालना) : सुपसिद्ध न्यूरो विशेषज्ञ डा बंसल ने एक ही पारी में रोगी के दिमाग से सर्वाधिक टयूमर्स निकालकर कीर्तिमान स्थापित किया।

डा.राकेश कुमार अग्रवाल - (मोतियाबिंद के सर्वाधिक ऑपरेशन में कीर्तिमान) : अमरावती के सुप्रसिद्ध नैत्र रोग विशेषज्ञ डा राकेश कुमार द्वारा 16000 से अधिक मोतिया बिंद ऑपरेशन कर लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्डस् में नाम दर्ज किया गया।

डा ए.के. गुप्ता : होम्योपैथी चिकित्सा के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए।

अशोक कुमार गर्ग - सूक्ष्म कलाकृति निर्माण : सूक्ष्म कलाकृति विशेषज्ञ अशोक कुमार गर्ग ने 0.44, 0.35, 0.03 मिलीमीटर माप की बांसुरी का निर्माण कर लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस् में नाम दर्ज करवाया। सूक्ष्म कलाकृति के क्षेत्र में आपने अंतरराष्ट्रीय पहचान कायम की है। श्री गर्ग ने चावल के दानों पर भी अनेक सूक्ष्म कलाकृति बनाई हैं।

मेमोरी गुरु सुधांशु मित्तल - अदभुत स्मरण शक्ति : स्मरण शक्ति के क्षेत्र में अदभुत प्रर्दशन कर तीन बार लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में स्थान बनाने का गौरव आपको प्राप्त है।

श्रीमती छाया गुप्ता - सबसे बड़ा अभिवादन पत्र : 135.14 मीटर लंबे व 1.45 मीटर चौड़े अभिवादन पत्र के निर्माण द्वारा कीर्तिमान स्थापित लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज। यह अभिवादन पत्र भारतीय सांस्कृतिक परम्परा से संबंधित है।

राजेन्द्र गुप्ता, अभिनेता : दो बार लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में नामांकित। 1990 में एक ही वर्ष में 40 से भी अधिक सीरियलों में काम करके लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में अपना नाम दर्ज करवाया।

अशोक अग्रवाल - (विश्व की सबसे बड़ी शब्द पहेली हल करने का बौद्धिक कीर्तिमान) : अशोक अग्रवाल ने नोएडा द्वारा विश्व की सबसे बड़ी शब्द पहेली को हल कर लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में विशेष कीर्तिमान बनाया।

महावीर प्रसाद सर्राफ, मुंबई - (जनसेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान) : आपके द्वारा स्थाापित ट्रस्ट के माध्यम से किए गए विभिन्न जनसेवा कार्यों के कारण तीन बार लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस में नाम दर्ज करवाया। आपके द्वारा रेलवे स्टेनशनों पर सर्वाधिक प्याऊ बनवाना, सार्वजनिक स्थानों,

बगीचों, खेल के मैदानों, समुद्र तटों, स्टेशनों, नगरपालिकाओं, फुटपाथों पर हजारों की संख्या में बैंचों का निर्माण व अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाई गईं।

तुषार अग्रवाल - (एशियन कार रैली में कीर्तिमान) : 2012 में आयोजित द्वितीय एशियन इंडिका कार रैली में इंडोनेशिया से सिंगापुर तक नौ देशों की 21 दिवसीय यात्रा में सफलता पूर्वक ड्राईविंग कर कीर्तिमान बनाया व लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज करवाया। इससे पूर्व भी आप 15 देशों की 51 दिवसीय कार रैली में भी सफल ड्राईविंग कर लिम्का बुक में नाम दर्ज करवा चुके हैं।

आकाश गुप्ता - (सर्वाधिक पैन संग्रह) : जयपुर के आकाश गुप्ता 1992 से पैन संग्रह कर रहे हैं। इसलिए आपका नाम लिम्का बुक में लिखा गया।

वरुण सिंघल व प्रीति सिंघल - फिल्यूमिनी (माचिस संग्रह) में कीर्तिमान : जुलाना (जिंद) के इन बच्चों ने 12100 माचिस का संग्रह करके 1995 में लिम्का बुक ऑफ में अपना स्थान बनाया।

अभय गोयल : लिम्का बुक रिकार्डस में 13 वर्ष की सबसे कम उम्र मे प्यानोवादक के रूप में इनका नाम लिखा गया है।

पी. आर. अग्रवाल - (आंतरिक परिधानों के निर्माण में कीर्तिमान) : ये अंदर का मामला है, होजरी के निर्माण में प्रसिद्ध रूपा एंड कंपनी के चैयरमेन एवं प्रबंध निदेशक पी आर अग्रवाल एवं रजनीश अग्रवाल ने सर्वाधिक ब्रांडेड उत्पादन कर हौजरी क्षेत्र में विशेष कीर्तिमान स्थापित किया है। इसके लिए उनका नाम लिम्का बुक में शामिल किया गया।

मधुमेह डॉट कॉम : संपादक एवं मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉ. राकेश अग्रवाल की मधुमेह डॉट कॉम को लिम्का बुक ऑफ नेशनल एवार्ड के वर्ष 2005 के संस्करण में शामिल किया गया है।

पदमश्री वीरेन्द्र प्रभाकर : पत्रकारिता के क्षेत्र में लंबे समय तक कार्यरत फोटोग्राफर के रूप में नाम दर्ज करवाया ।

पूर्णिमा गोयल (इंदौर) : अमेरिका की ब्लैंक बैल्टे ग्रो परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर लिम्का बुक में नाम दर्ज।

ऐश्वर्या अग्रवाल (इंदौर) : पुत्री सुनील गोयल, मात्र तीन वर्ष की उम्र में स्केटिंग में कीर्तिमान बनाकर लिम्का बुक में नाम दर्ज ।

नवीन अग्रवाल - बिजनौर यूपी : ने पोस्कार्ड पर उर्दू में ''मेरा भारत महान'' के 28503 अक्षर लिखकर कीर्तिमान स्थापित किया है। आपने यह कार्य आठ दिन में पूरा किया। इससे पहले अंग्रेजी में सुरभि शब्द के 18286 अक्षर 20 घंटे में तथा सुंदरकांड से 1800 अक्षर पोस्टकार्ड के एक ओर लिख चुके हैं। आपने लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में देव वर्मा का 18090 अक्षर पोस्टकार्ड के दोनों ओर लिखने का रिकार्ड भी तोड़ा है।

श्रुति गुप्ता : ऊंचाई 17198.16 फीट (लगभग 5242 मीटर) व तापमान शून्य डिग्री, पर 7 मिनट तक सबसे अधिक ऊंचाई पर कथक नृत्य कर विश्व रिकार्ड बनया। स्थान था हिमाचल स्थित लाहौल स्पीति का बायलाचा पास। आमतौर पर यहां सांस लेना भी मुश्किल होता है। पटियाला की श्रुति गुप्ता के इस रिकार्ड को 2016 के वर्ल्ड रिकार्ड्स में शामिल करेगा।

सुधीर सिंघल : इन्होंमने गणित की सबसे बडी कक्षा लेने का विश्व रिकार्ड बनाया है।

अदिति सिंघल : इन्होंने Memory and fastest Calculation में दो राष्ट्रीय रिकार्ड बनाए हैं।

स्वर्ण प्रकाश सिंघल - सूक्ष्म (सघन) लेखन में : 1. पोस्ट कार्ड के मुख पृष्ठ,

पर 102810 बार राम शब्द अंकित किया। 2. पोस्ट कार्ड पर 12 बार हनुमान चालीसा लिखा। 3. पोस्ट कार्ड पर सुंदर कांड, हनुमान चालीसा, हनुमान अष्टक व आरती लिखी। 4. पोस्ट कार्ड पर सुंदर कांड के साथ 6873 बार राम शब्द का अंकन किया। आपने पोस्ट कार्ड पर 16250 अक्षर लिखकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दावा पेश किया है। श्री सिंघल एक हाथ से विकलांग हैं, आप भरतपुर–राजस्थान के रहने वाले हैं। 1994 में लिम्बा बुक में आपका रिकार्ड दर्ज किया गया। 1996 व 1997 में आपको भरतपुर जिला कलेक्टर ने गणतंत्र दिवस पर सम्मानित किया।

राजकुमार अग्रवाल (नागपुर) : चांदी की अद्‌भभुत कलापूर्ण वस्तुओं का ऐतिहासिक संग्रह होने के कारण आपके पास लिम्का बुक ऑफ इंडिया और विश्व रिकॉर्ड हैं।

इसके अलावा निम्नअ अग्रबंधुओं ने भी लगभग 12 से 15 साल पहले रिकार्ड बनाकर लिम्का बुक ऑफ रिकार्डस् में दावा किया था।

कैलाश कुमार अग्रवाल ने पोस्ट कार्ड पर 30274 बार रामनाम लिखे हैं। अक्षरों को लैंस की सहायता से ही पढ़ा जा सकता है। लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड में दावा । आप बरेली के रहने वाले हैं।

प्रसन्न कुमार जैन (सर्राफ) ने पोस्टर कार्ड पर संपूर्ण सुंदरकांड लिखा है। आपने यह नंदकिशोर जी गोयनका को अग्रोहा में सौंपा था। आप शिवपुरी, मध्य प्रदेश के रहने वाले हैं।

ललित जैन : हनुमानगढ़ निवासी ललित जैन ने चावल के छोटे से दाने पर अंग्रेजी के 60 शब्द लिखे। आप चावल के दाने पर चित्रकारी भी करते हैं। आपको अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

121 तरह के गोलगप्पे बनाकर रचा वर्ल्ड रिकॉर्ड

बीकानेर। यदि आप 2–4 नहीं बल्कि 121 तरह के गोलगप्पे का स्वाद चखना चाहते हैं तो आपको बीकानेर आना पड़ेगा। यानी आपको 121 गोलगप्पे खाने को मिलेंगे और सभी का स्वाद बिल्कुल अलग होगा। क्यों चौंक गए न। ये सबकुछ एक ठेले पर मिलेगा। इन 121 तरह के इन गोलगप्पों का लोहा लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड मान चुका है।

धर्मेंद्र अग्रवाल हर ग्राहक की अलग–अलग डिमांड को पिछले 25 सालों से पूरा कर रहा है। शुरुआत में उसके ठेले पर इतने फ्लेवर नहीं थे, लेकिन हमेशा कुछ नया करने और अपनी पहचान बनाने के जज्बे के साथ धर्मेंद्र ने 121 तरह के गोलगप्पे का फ्लेवर बना दिया।

धर्मेंद्र के पिता लक्ष्मीनारायण अग्रवाल फीणी बनाने के जाने–माने कारीगर थे। उनकी बनाई फीणी दूर देशों तक जाती, लेकिन धर्मेंद्र ने अपने लिए कुछ अलग करने का रास्ता चुना। उसने हर उस फ्लेवर में पानी–पताशा बनाने की सोची जिससे मिठाइयां और आइसक्रीम तैयार होती हैं।

साल 2009 में एक–एक करके उसने आइटम बनाने शुरू किए। पहली बार बनने वाला हर आइटम वह अपनी मां के सामने रखता। मां ने फ्लेवर को पास कर दिया तो वह मार्केट के लिए तय हो जाता था। ऐसा करते–करते धर्मेंद्र ने 121 तरह के गोल–गप्पे तैयार कर लिए।

इन फ्लेवर में बनाए गोलगप्पे

बादाम, केसर, काला खट्टा, पिपरमिंट, गुलाब, केवड़ा, जलजीरा, नेपाली धनिया, पनीर, गन्ना, वनीला, मिल्क मैंगो, खस–खस, टूटी – फ्रूटी, अमरीकन क्रीम, काजू, बैले, चॉकलेट, मलाई, ऑरेंज, बनाना, मौसमी, रसभरी, लेमन, तरबूज, कोकोनट, स्ट्रॉबेरी, लीची, एप्पल, मैंगो, अनार, पाइनेपल, बील, संतरा, अंगूर, काला जामुन, पपीता, चीकू, काचरी, जावित्री, शाही जीरा, जायफल, पीपल, इलायची, लाल मिर्च, अजवाइन, सांख, साबूदाना, हींग, दानामैथी, तिरंगा, हल्दी, सरसों, सौंफ, सिंघाड़ा, जीरा, दालचीनी, राजगीर, कबीट, ज्वार, मूंग, फोगला, मोठ, तेजपत्ता, बाजरी, उड़द, मसूर, राजमा, काली मिर्च, अमचूर, लोंग, मक्की, चावल, बेसन, कोकला, चंदलिया, लहसुन, आंवला, टमाटर, पोदीना, प्याज, हरा धनिया, तौरी, बैंगन, आलू, मतीरा, कद्दू, खीरा, करेला, पालक, गाजर, नींबू, लौकी, परवल, ककड़ी, साजना, मटर, केरी, मोगर, भुइयां, ग्वार पाठा, पत्ता गोभी, हरिमर्च, कटलस, दही, छाछ, चेरी, नीम, मीठा पान, मद्रास पान, चाय, कॉफी व पीपला पान, भांग, भुजिया, पारले, ब्रिटेनिया 50–50, तुलसी, पाव–भाजी व मसाला डोसा के फ्लेवर में गोलगप्पे तैयार मिलते हैं।

2009 में बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

लिम्का बुक की ओर से 21 अप्रैल 2009 को धर्मेंद्र को वर्ल्ड रिकार्ड का सर्टिफिकेट जारी किया गया था।

Source : dainikbhaskar.com
Photo : Dinesh Gupta, Bikaner

इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस्
(Indian book of Records)

इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् के प्रकाशन का शुभारंभ वर्ष 2004 से बिश्वारूप रॉय चौधरी द्वारा किया गया। यह राष्ट्रीय रिकार्डों का संग्रह है जो ज्यादातर संगठित खेलों में शामिल नहीं हैं। रिकार्डस् में इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् की एक रक्षक के रूप में तुलना की गई है। यह बुक भारतीय रिकार्डों को रखने के लिए हमेशा हर भारतीय रिकार्डधारी की सहायता करेगी।

समाज के वे अग्रबंधु जिन्होंने विभिन्न कारनामों में एक रिकार्ड स्थापित कर इसमें अपना नाम दर्ज करवाया है।

मास्टर दिशिप गर्ग : संसार में सबसे कम उम्र के भजन गायक। दिशिप नैनीताल से हैं, आपने मात्र चार वर्ष की आयु में भजन गाना प्रारंभ कर दिया था, 11 वर्ष की उम्र में इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् में शामिल किया गया। अभी तक आपके भजनों के अनेक एलबम आ चुके हैं। 12 वर्ष की उम्र में ही टी सीरिज द्वारा आपके भजनों का एलबम जारी किया गया जिसका विमोचन 25.10.2008 को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री द्वारा किया गया। आपके पिता श्री उमेश गर्ग भी भजन गायक हैं।

पीयूष अग्रवाल ने PREVENWET नामक मशीन का आविष्कार किया। यह मशीन बरसात में कपड़ों को गीला होने से बचाती है। इस उपलब्धि के लिए इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकॉर्डस् में लिखा। जन्म – हजारीबाग– झारखंड।

नृसिंह लाल बंसल : वास्तु एवं विज्ञान से संबंधित सबसे अधिक पुस्तकें लिखना – 12 दिसम्बर 2014 इन्होंने 143 पुस्तकें तथा 1,054

ई–पुस्तकें लिखीं। ये सेवानिवृत्त अध्यापक हैं। जन्म – सोनीपत–हरियाणा।

आयुष गुप्ता : 3डी पेपर वर्णमाला (उर्दू) (3D PAPER ALPHABETS/URDU) कागज को फोल्ड करके उर्दू (अरबी) में स्वर व व्यंजन (Vowels and Consonants) बनाए। चार मिनट प्रति अक्षर (ALPHABETS) लगाकर उर्दू वर्णमाला बनाई। आपके द्वारा यह रिकार्ड हिंदू – मुस्लिम भाईचारा दिखाता है। जन्म – बरेली– उत्तर प्रदेश ।

शिवांशु मित्तल - चार्ट पेपर स्ट्रिप से एफिल टावर की प्रतिकृति : (MINIATURE EIFFEL TOWER USING CHART PAPER STRIPS) 2 सितम्बर 2014 को इन्होंलने चार्ट पेपर स्ट्रिप से 25.5 X 10.5 इंच आयाम (dimension) वाली एफिल टावर की प्रतिकृति 1100 चार्ट पेपर स्ट्रिप की सहायता से बनाई। जन्म– भिवानी।

अभिषेक बंसल - माचिस की तीलियों से एफिल टावर की प्रतिकृति : (MINIATURE EIFFEL TOWER WITH MATCHSTICKS) – 26 मई 2014 को इन्होंने 3000 माचिस की तीलियों की सहायता से 10 X 10 X 24.5 इंच आयाम (dimensions) वाली एफिल टावर की प्रतिकृति बनाई। जन्म – भिवानी।

सतीश सिंघल - पांच रुपये के सिक्कों को संग्रह : इन्होंने 6 मार्च 2014 तक पांच रूपये के 51 तरह के सिक्को का संग्रह कर रिकार्ड बनाया। जन्म – फरीदाबाद।

नितिन गुप्ता - लंबे समय तक लगातार सीटी बजाना : इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड के ऑफिस में 28 नवम्बर 2013 को इन्होंने 30 मिनट तक लगातार सीटी बजाई (दोपहर 12.30 बजे से 1.00 बजे तक) इस दौरान 120 सैंकिड का इन्होंने ब्रैक लिया। जन्म – जबलपुर।

सुशील गोयल - एक ही सीरीज के नोटों का अनोखा व दुर्लभ संग्रह : ONLY UNIQUE DENOMINATIONS PLEASE – इन्होंने 2003 के बाद तक के 001001 से 999999 तक की सीरीज के कुल 999 करेंसी नोटों का संग्रह, 000001 से 1000000 तक के 220 करेंसी नोटों का संग्रह तथा 010101 से 999999 तक की सीरीज के 99 करेंसी नोटों का संग्रह कर रिकार्ड स्थापित किया। जन्म – भीलवाड़ा।

ईश गोयल एवं ईशान गोयल : चंडीगढ़ के सबसे कम उम्र के जुडवां भाई जो पश्चिमी शास्त्रीय संगीत बजाते हैं। ईशान वेस्टन क्लासिकल गिटार तथा ईश वेस्टन क्लासिकल पियानों बजाते हैं। रिकार्ड तोड़ने वाले प्रदर्शन में इनको सम्मानित किया गया व इनका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् में लिखा गया।

सुनील गोयल : 2250 लोगों ने अपना स्वंय का सौर ऊर्जा संचालित ओवन बनाया (2,250 People Built their Solar Ovens Together) – जीवन के लिए सरलीकृत टेक्नोलॉजी (जालना– महाराष्ट्र) (Simplified Technologies For Life (Jalna, Maharashtra) के सुनील गोयल ने अपने साथियों के साथ मिलकर एक कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें 2250 प्रतिभागियों ने अपना स्वंय का सौर ऊर्जा संचालित ओवन बनाया जिसमें एक साथ 400 किलो तक सामग्री पकाई जा सकती है।

अमित सिंघल : पैदायशी रूप में शरीर पर भारत का मानचित्र । इनके शरीर पर एक असामान्य रूप से जन्म–चिह्न (नेवस : nevus) हैं जो कि मोटे तौर पर भारत के संपूर्ण मानचित्र जैसा दिखाई देता है। यह मानचित्र शरीर पर गर्दन, दांए कंधे, हाथ, छाती के आगे और छाती के पीछे के हिस्से तक फैला हुआ है। जन्म – मुजफ्फर नगर।

अदिति सिंघल एवं सुधीर सिंघल : सबसे बड़ा गणित का शिक्षण (LARGEST MATHEMATICS LESSON) – इन्होंने 1 से 99 तक के

गणितीय पहाडों के शिक्षण की सबसे बड़ी कक्षा का सफल आयोजन वर्ष 2012 में किया। जिसमें विभिन्न स्कूलों के 2312 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसका आयोजन ओम शांति रिट्रेट सेंटर–गुडगांव में किया गया।

अदिति सिंघल : इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् के द्वारा इनको वर्ष 2009 में The best memory tranee of the yeat–2009 का एवार्ड भी मिला है।

पीयूष दादरीवाला गोयल : **सबसे बड़ा विजिटिंग कार्ड** - इन्होंने 36 x 23 इंच का विशाल विजिटिंग कार्ड 15 जुलाई 2012 में बनाया। जन्म – उत्तर प्रदेश।

अनंत गर्ग - सबसे बड़ा टूथपेस्ट कलेक्शन : इनके पास 501 राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय टूथपेस्ट के कवर का कलेक्शन हैं। जन्म – बुलंदशहर।

अपूर्व अग्रवाल : इनके नाम से दो रिकार्ड हैं –
– सबसे बड़ा दाल समोसा : इन्होंने 2,450 ग्राम तथा 10.5 इंच (प्रत्येक तीनों भुजाएं) का दाल समोसा 12 जनवरी 2012 को बनाया । जन्म – बरेली।
– सबसे छोटा अखबार : इन्होंने 30 X 20 मिलीमीटर का सबसे छोटा अखबार 26 नवम्बर 2010 को बनाया है।

अदित्य गोयल - सबसे कम उम्र के पायलेट : ये 16 वर्ष की उम्र में पायलेट बने हैं (सामान्य उम्र 18 वर्ष है)। 10 मई 2011 को इन्होंने विद्यार्थी लाईसेंस प्राप्त किया। सरकार द्वारा मेडिकल चेकअप करने व इंटरव्यू लेने के बाद इन्होंने 10 जून 2011 को भारत सरकार द्वारा जारी किया गया Flight Radio Telephone Operator's License (FRTOL No.5506) भी प्राप्त किया। जन्म – नई दिल्ली।

निशांत मित्तल - सबसे कम उम्र के रेडियो चीफ एक्जीक्यूटिव ऑफिसर : ये

रेडियो मिस्ती (94.3 एफ एम के उद्घाटन दिवस पर 14 नवम्बर 2014 को सी ई ओ बने । जन्म – सिलीगुड़ी।

चारवी अग्रवाल - Created Miniature : कक्षा छठी में पढ़ते हुए छोटी उम्र में इन्होंने मिट्टी से कई तरह की आकृतियां बनाना प्रारंभ कर दिया। इन्हों ने स्वंन के द्वारा ईजाद की गई तकनीक जिसे 'Claytronics' कहा जाता है से 30 जून 2006 को 20 लघु 3–डी मूर्तियां (3&D sculptures) बनाईं।

स्वर्ण प्रकाश सिंघल - सूक्ष्म (सघन) लेखन में आपका नाम इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् के साथ–साथ लिम्का बुक में भी दर्ज है।

अर्पित गुप्ता - स्मारक सिक्कों का सबसे बडा संग्रह : Largest Collection of Commemorative Coins by a Minor (Male) इंदौर के इस छोटे बच्चे द्वारा 29 जनवरी 2015 तक के स्मामरक सिक्कों का बेजोड़ संग्रह किया गया है जिसमें 700 सिक्के हैं।

लेफ्टिनेंट कर्नल हेमेन्द्र बंसल - (सूक्ष्म लेखन) : जन्म – (भरतपुर)
– एक रूपये के स्टाम्प पर अधिकतम सूक्ष्म शब्द – आपने दिसम्बर 2007 में महात्मा गांधी के एक रूपये के स्टैंडर्ड डाक टिकट पर Love शब्द को 2506 बार लिखा इस प्रकार आपने कुल 12,530 शब्द लिखकर कीर्तिमान बनाया।
– मूंगफली के छिलके के आधे भाग पर अधिकतम शब्द – आपने 25 जुलाई 2008 को देहरादून में मूंगफली के छिलके के आधे भाग में Love शब्द को अंग्रेजी में 1310 बार लिखा जिसमें 5240 शब्द थे।

श्री नभ अग्रवाल : सबसे कम उम्र में प्रधानमंत्री की योजनाओं पर स्टोरी बुक लिखने वाले – जन्म – (नागपुर), आपने सबसे कम उम्र में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की योजनाओं और नीतियों के आधार पर ''धन्यवाद मोदी जी'' नामक स्टोरी बुक लिखकर कीर्तिमान स्थापित

किया। यह पुस्तक 22 नवम्बर 2015 को क्रासवर्ड, सिविल लाईन्स, नागपुर में लांच्ड की गई ।

संदीप टिबड़ेवाल - 52 तरह के पांच रुपये के सिक्कों का संग्रह : इन्होंने नवम्बर 2015 तक भारतीय पांच रूपये के विभिन्न प्रकार के सिक्कों का संग्रह कर कीर्तिमान बनाया है। 2016 के इंडियन बुक ऑफ रिकार्डस् शामिल किया गया है।

मोहित गर्ग : बिगेस्टर फैमिली ट्रीट "दादा नरूमल प्रतिबिंब " को इंडियन बुक ऑफ रिकार्ड– 2016 में शामिल किया गया। इसमें पूरे भारत में फैले लाला नरूमल गर्ग की 17 पीढ़ियों और 2250 परिवारों के रिकॉर्ड के साथ वंशावली बनाई गई है। अग्रवालों में बनाया गया इतना लंबा इतिहास पहला है।

गीता गोयल - सबसे अधिक मोर की डिजायन बनाना : जन्म – मेरठ, इन्होंने जनवरी 2016 में विभिन्नय प्रकार के फूलों का उपयोग कर 100 प्रकार की मोर की डिजाइन बनाई है। जुलाई 2014 से आप यह कार्य कर रही हैं, एक मोर की डिजाइन बनाने में 30 मिनट का समय लगता है।

अग्र बंधुओं द्वारा अर्जित अन्य उपलब्धियां

कुहू गोयल : आगरा निवासी कुहू गोयल का मात्र 11 वर्ष की उम्र में पहला उपन्यास प्रकाशित हो चुका है। लेखक जे.जे.रोलिंग की प्रशंसक तथा उपन्यास व एडवेंचर पुस्तकें पढ़ने की शौकीन कुहू ने 5वीं कक्षा पास की है। इस उपन्यास से पहले कुहू के कई लेख, कहानियां आदि स्कूल की मैगजीन में प्रकाशित हो चुके हैं। आगरा महानगर लेखिका मंच द्वारा कुहू गोयल का सम्मान भी किया गया है। कुहू को पढ़ने की आदत दादी से पड़ी है जिसके पास पुस्तकों का अच्छा संग्रह है।

दिव्यांश गुप्ता : 15 साल की उम्र तक 27 किताबें लिखने का रिकार्ड – 12वीं कक्षा के छात्र दिव्यांश ने खाली समय में पुस्तक लेखन का कार्य प्रारंभ किया, मात्र 15 वर्ष की उम्र में 27 किताबें लिख डाली, इनमें से 18 किताबों के प्रकाशन की रूपा पब्लिकेशन ने मंजूरी दी है। इस रिकार्ड का गिनीज बुक में भी दावा किया गया है। दिव्यांश ने सभी पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी हैं। इनमें ज्यादातर उपन्यास हैं। माय ब्लाइंड नेचर, द मिरर, रपलेंडिड हरियाणा, योर अनएक्सपेक्टेड लवर आदि प्रमुख हैं।

अक्षत सिंघल : सिंघल 12599 से बृहस्पति एवं मंगलवार ग्रह के बीच एक छोटे उपग्रह का नाम आपके नाम पर रखा गया। विश्व में सबसे कम आयु के कंप्यूटर इंजीनियर बनने का गौरव प्राप्त किया। अमेरिका में आयोजित इंटेल अंतरराष्ट्रीय विज्ञान एवं इंजीनियरिंग मेले में विभिन्न प्रकार के दस्तावेजों को कंप्यूटर में रखने की नई तकनीक प्रस्तुत कर साफ्टवेयर के क्षेत्र में क्रांति तथा अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में आपके विशेष योगदान को देखते हुए अमेरिका के मेसाच्यूरटस इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नाभलॉजी द्वारा लिंकन प्रयोगशाला में बृहस्पति एवं मंगलवार ग्रह के बीच एक छोटे उपग्रह का नाम आपके नाम पर सिंघल –12599

से नामकरण किया गया ।

डा. मोहन लाल अग्रवाल - अद्‌भुत घड़ी का आविष्कार : आप द्वारा मल्टी परपज बनाई घड़ी जो समय के अलावा तारीख, देसी तिथि, वार, संवत और दिन व रात के छोटे बड़े होने की जानकारी देती है साथ ही लग्न , पंचक, राशियों और ऋतुओं के बारे में जानकारी देती है।

अभिषेक जैन - विश्व का सबसे तेज कनिष्ठ टंकक : जालंधर के अड्डा गोराया ग्राम के निवासी, 13 वर्ष की उम्र में विश्व में सबसे तेज गति से टाइप करने वाले कनिष्ठ युवा बने। आपने बेल्जियम में 20 वर्ष तक की आयु वाले टाइपिस्टों की प्रतियोगिता में 109.2 शब्द प्रति मिनट टाईप कर यह गौरव प्राप्त किया।

अर्जित कंसल : माइक्रोसॉफ्ट पावर पाइंट–2010 वर्ल्ड चैंपियनशिप जीती। इन्होंने 2014 माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस स्पेशलिस्ट (एमओएस) वर्ल्ड चैंपियनशिप में यह जीत हॉसिल की, जिसमें 130 देशों के 4 लाख छात्र शामिल थे। कंसल फाइनल में पहुंचने वाले 123 प्रतिभागियों में शामिल थे। अवार्ड सेरेमनी में कंसल को 5000 डालर की स्कालरशिप दी गई। 16 साल के कंसल को कंपीटिशन के लिए साइबर लर्निंग ने स्पांसर किया।

अनिल गुप्ता : आपके नाम विश्व की सबसे छोटी हस्तलिखित गीता लिखने का विश्व् कीर्तिमान है जो दो सेंटीमीटर चौड़ी व तीन सेंटीमीटर मोटी है। इसमें 16 अध्यायों के 700 श्लोकों के 700 पृष्ठों में संस्कृत भाषा में लिखा गया है।

कुलदीप गोयल - छपाई में कीर्तिमान : युवा उद्यमी नोएडा ने छपाई तकनीक में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर वर्ल्डस् लेबल एसोसिएशन का 2004 का विश्व पुरस्कार प्राप्त कर इस क्षेत्र में प्रथम भारतीय होने का गर्व हांसिल किया। यह पुरस्कार इन्हें स्टीकर लेबल छपाई में विश्व स्तर

पर प्राप्त हुआ। इस स्पर्धा में विश्व के 600 प्रतिष्ठानों ने भाग लिया जिसमें 8 प्रतियोगी भारतीय थे। कुलदीप गोयल भारत में अनेक उच्च पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं।

आलोक गुप्ता : इन्होंने खाली समय में इतनी गणितीय गणना करने का अभ्यास किया कि अब वे एक अरब साल का चलता फिरता कैलेंडर बन गए हैं। इतना ही नहीं वे चालीस डिजीट की कोई भी गणना चुटकियों में कर लेते हैं। आलोक गुप्ता से किसी भी तिथि, वार और वर्ष में से कोई भी दो चीज बताकर तीसरी पूछ सकते हैं। उनका दावा है कि वे अनंत वर्ष तक की गणना कर सकते है। इस तरह की गणना के रिकॉर्ड्स नहीं होने के कारण गिनीज बुक में आपका नाम नहीं लिखा जा सका।

नवीन अग्रवाल : आपने 1996 में पोस्टकार्ड पर उर्दू में मेरा भारत महान् के 28503 अक्षर लिखकर कीर्तिमान बनाया, आपने यह कार्य आठ दिन में पूरा किया, आप इससे पहले अंग्रेजी में सुरभि शब्द के 18286 अक्षर 20 घंटे में तथा सुंदरकांड के 1800 अक्षर पोस्टकार्ड के एक ओर लिख चुके हैं।

सौरभ अग्रवाल - तीन पत्ती मोबाइल गेम के रचियता : इस गेम को करोड़ों लोगों ने डाउनलोड किया, आपने 2006 में आपनी मोबाइल गेंमिंग कंपनी बनाई आपके दो गेम तीन पत्ती और रमी गूगल प्लेसटोर के पांच टॉप गेम्स में है ।

प्रदीप कुमार गुप्ता : 1992 में आपने 27 वर्ष की उम्र में अखिल भारतीय साईकिल यात्रा के दौरान 8700 किलोमीटर की यात्रा कर मदुरई पहुंचे, यहां की अग्रवाल सभा ने आपका चांदी का मैडल पहनाकर व नकद पुरस्कान देकर भव्य स्वागत किया। यहां से इनकी आगे भी यात्रा जारी रही।

अतुल बंसल (डिजाइनर) : इन्हें दुनियां का श्रेष्ठ डिजाइनर माना गया है। इन्होंने दो माह में बनाया दुनिया का श्रेष्ठ इंटीरियर डिजाइन। आप मैनचेस्टर में पढ़े व बड़े हुए। अतुल शीलाबर्ड नामक डिजाइनिंग कंपनी के सी ई ओ हैं।

विनय कंसल : पर्यावरण संबंधी मुद्दों को ज्वलंत बनाए रखने तथा समाज मे खामोश पेड़–पौधों की भाषा को समझने के प्रति जागरूकता पैदा करने पर आपको डा.नजमा हेपतुल्ला, उप सभापति राज्य सभा द्वारा 11 वां रेड एंड व्हाइट बहादुरी पुरस्कार (सामाजिक साहसिक श्रेणी) प्रदान किया गया।

कीर्ति अग्रवाल : 12 वर्ष की उम्र में आपने शरीर से मारूति कार गुजारना व छाती पर पत्थर तुड़वाने जैसे रोमांचक कार्य करने वाली बालिका ।

– – –

यू.पी. का पहला बीज गोदाम बनाने वाले किसान सुधीर अग्रवाल

उन्नत खेती में सबसे महत्वपूर्ण घटक अच्छा बीज का उपलब्ध होना ही है। जहां बाजार में हजारों प्राइवेट कंपनियों द्वारा पैकिंग में बीज बेचा जा रहा है, वहीं पर सरकार प्रगतिशील किसानों को प्रशिक्षण देकर अच्छी किस्मों के आधार बीज तैयार करवाने पर ध्यान दे रही है। उत्तरप्रदेश के मथुरा जिले में भूरेका गांव के सुधीर अग्रवाल भी ऐसे ही आधार बीज उत्पादक प्रगतिशील

किसान हैं। उत्तर प्रदेश में पहला ग्रामीण बीज गोदाम बनाने और फसल बीमा के क्षेत्र में मथुरा को मॉडल जिले का गौरव दिलाने में भी सुधीर की खासी भूमिका रही। सुधीर की खासियत यह है कि वह खेत में सारे काम अपनी निगरानी में कराते हैं और उसके द्वारा तैयार बीज आसपास के राज्यों में भी अनेक किसानों को फायदा पहुंचा रहे है।

सुधीर ने दर्शनशास्त्र में एमए करने के बाद एलएलबी किया, लेकिन सरकारी नौकरी या वकालत की बजाय खेती में ही अपना कैरियर बनाया। अनुभवों के साथ ही कृषि वैज्ञानिकों एवं नाबार्ड के सहयोग से एक मामूली किसान से उठकर आज वह राष्ट्रीय स्तर के प्रगतिशील किसान के रूप में मशहूर हो चुके है। सुधीर ने पहले अपने खेतों में कृषि वैज्ञानिकों के बताये अनुसार तकनीक अपनाई और भरपूर उत्पादन लिया। तब पड़ोसी गांवों से भी किसानों ने आधार बीज उत्पादन कार्यक्रम में रूचि दिखाई। आज करीबी इलाके के 450 किसानों ने बीज उत्पादन में इनका साथ दिया और हर किसान पुरानी आय के अलावा प्रति हैक्टेयर 15 हजार रुपये ज्यादा कमा रहा है।

सुधीर अब तक नेशनल सीड कॉरपोरेशन, तराई बीज विकास निगम, कृभको आदि के सहयोग से गेहूं में एचडी 2285, आरआर 21, लोक–1, यूपी 2338, एचडी 2189 एवं एआईआर की नवीन प्रजाति एचडी 2643, एचडी 2664, एचडी 2888, एचडी 2894, एचडी 2932, डब्ल्यूआर 544, एचडब्ल्यू 2045 का आधारीय बीज उत्पादन कर चुके है। गेहूं के अलावा धान में भी आईआर 64, आईआर 36, नरेंग्र 359, पंत धान–10, पंत धान–12, क्रांति, पूसा, बासमती–1, पूसा सुगंध–2, पूसा सुगंध–3 आदि प्रजातियों के प्रामाणिक बीज का उत्पादन भी किया। निजी क्षेत्र में सुधीर ने महिको के सहयोग से पीआरएच–10 संकर धान प्रजाति का आधार बीज भी तैयार किया है।

सुधीर का गांव पूरा ही बीज उत्पादन में लगा हुआ है। गांव के बड़े किसान ही नहीं, छोटे मझोले किसानों को भी इसका फायदा मिल

रहा है।आज आलम यह है कि सुधीर द्वारा गठित प्रबंध सहायता समूहों की तर्ज पर पड़ोसी गांवों से भी किसान क्लब बन रहे है। किसान क्लबों के गठन के बाद फसल ऋण की साख सीमा दो हजार प्रति एकड़ की बजाय बैंकों ने बढ़ाकर दस हजार कर दी है। क्लबों द्वारा किसानों की समस्या निस्तारण हेतु त्वरित कार्यवाही भी की जाने लगी। जागरूकता बढ़ने के साथ देश का पहला ग्रामीण गोदाम मथुरा में बना और मथुरा ही फसली बीमा के क्षेत्र में देश का मॉडल जिला भी बना। वह मानते हैं कि किसानों को प्रगतिशील किसानों के खेत में जाकर प्रत्यक्ष सीख लेनी चाहिये और प्रगतिशील किसानों से भी अपील करते है कि वे अपने पिछड़े साथियों को समझा–बूझा कर उन्नत खेती के गुर जरूर सिखाये।

प्रस्तुति : मोईनुद्दीन चिश्ती

भारत में बैंकिंग व्ययवसाय की स्थापना में अग्रबंधुओं का योगदान -

एक जमाने में 10 में से 9 व्यापारी तथा बैंकर मारवाडी समाज के थे। किसी भी जाने माने मारवाड़ी की हुंडी भारत ही नहीं, विदेशों में भी सिकरती थी ।

प्रथम भारतीय मारवाडी बैंक के संस्थापक : बलदेवराज दूदेवाला

बैंक ऑफ इंडिया के संस्थापक : रामनारायण रूईया

यूनिवर्सल तथा भारत बैंक के प्रमुख संस्थापक : रामकृष्ण डालमिया

हिंदुस्तान कामर्शियल बैंक के संस्थापक : पद्मावत सिंघानिया व मंगतूराम जैपुरिया

पंजाब नेशलन बैंक के मुख्य संस्थापकों में से एक : लाला लाजपत राय

दी बैंक ऑफ राजस्थान के सहसंस्थापक : रवि जैपुरिया

इंपीरियल बैंक के प्रथम भारतीय अध्यक्ष : पद्मभूषण केशवप्रसाद गोयनका (वर्तमान में स्टेाट बैक ऑफ इंडिया)

वैश्य बैंक की स्थापना : मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

बनारस स्टेट बैंक की स्थापना : ठाकुरदास जी साह (बनारस) (काशी नरेश की गारंटी होने के कारण यह बैंक अच्छा चला।) **बाबू लक्ष्मीदास बी.ए.**- आप भी इस बैंक के संस्थापकों में से एक थे। आप इस बैंक के डायरेक्टर भी रहे।

मुंबई में यूनियन बैंक की स्थापना भी अग्रवाल समाज के व्यापारियों द्वारा की गई।

रिजर्व बैंक के गर्वनर : विमल जालान

इंपीरियल बैंक के प्रथम भारतीय चेयरमैन : बद्रीदास गोयनका (वर्तमान में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया)

लाला श्रीराम : आपको रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया के जनरल बोर्ड का डायरेक्टर नियुक्त किया गया।

पद्मभूषण हरिशंकर सिंघानिया : अंतरराष्ट्रीय चेम्बर ऑफ कामर्स के प्रथम भारतीय अध्यक्ष।

लाला जगमंदिर दास : आापने अपने भारतीय ढ़ंग के बैंकिंग व्यापार को अंग्रेजी ढंग में परिवर्तित किया तथा सन् 1856 में मैसर्स भगवान दास बैंकर्स के नाम से देहारादून में बैंक की शाखा खोली। बहुत अधिक सफलता मिलने पर आपने अनेक स्थानों पर इस बैंक की शाखाएं खोलीं। सन् 1930 में आपके बैंक की पूंजी 25 लाख रूपये थी।

बाबू देवी साद खेतान : 1925 में आपने इंडियन चेम्बर ऑफ कामर्स की स्थापना की। 1928 व 1930 में आप इसके अध्यक्ष रहे।

सेठ चमुर्भुज : पहले मारवाड़ी व्यापारी थे जिन्होंने बीमा व्यवसाय को संपूर्ण देश में फैलाया।

संविधान सभा के अग्रबंधु सदस्य

श्री श्रीप्रकाश : केंद्रीय विधान सभा के सदस्य। केंद्रीय मंत्रीमंडल में वाणिज्य मंत्री, असम, महाराष्ट्र आदि के राज्यपाल तथा पाकिस्तान में भारत के प्रथम उच्चायुक्त।

डा. रघुवीर : उच्च कोटि के विद्वान, भाषाविद एवं कोषकार। भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष। 1952 एवं 1956 में राज्य सभा के सांसद।

श्री प्रभुदयाल हिम्मत सिंहका : सॉलीसीटर एवं विधिवेता, बंगाल विधानसभा में तीन बार तथा 1952 से 1972 तक लोकसभा एवं राज्यसभा के लगातार सांसद रहे। स्वाधीनता आंदोलन से लेकर गांधी, नेहरू, लालबहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गांधी, मोरारजी देसाई, राजीव गांधी तक के शासन के साक्षी। कोलकाता के जनजीवन के आठ दशकों तक प्रभावित करने वाले मुख्य व्यक्तित्व। 102 वर्ष की आयु में निधन।

नेमिशरण जैन : स्वातंत्रता सैनानी, 1913, 1930 व 1942 में जेलयात्रा, सांसद एवं उत्तर प्रदेश विधान परिषद के सदस्य।

श्री पदमावत सिंघानिया : भारतीय ओद्यौगिक जगत के स्तंभ, आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका। भारत सरकार द्वारा डाक टिकट जारी ।

सेठ दामोदर स्वरूप

डा. रामचंद्र गुप्ता

श्री घनश्याम सिंह गुप्ता

देशबंधु गुप्ता

विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति (चांसलर) - अग्रबंधु

डा. भगवानदास : काशी विद्यापीठ

श्री प्रकाश : काशी विद्यापीठ

श्री रघुकुल तिलक : काशी विद्यापीठ व राजस्थान विश्वविद्यालय

कुलपति (वाईस चांसलर) - अग्रबंधु

डा. रायगोविंद चंद : वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय

डा. जयकृष्ण : रूड़की विश्वविद्यालय

श्री राधाकृष्ण : कानपुर विश्वविद्यालय

सत्येन्द्र नारायण अग्रवाल : भागलपुर विश्वविद्यालय

शीतल प्रसाद : आगरा विश्वविद्यालय

राजा ज्वाला प्रसाद : काशी विश्वविद्यालय

आचार्य जुगल किशोर : लखनऊ तथा कानपुर विश्वविद्यालय

डा. सर मोती सागर : काशी विद्यापीठ

गोपाल प्रसाद : मंगल विद्यापीठ

श्रीमती हेमलता अग्रवाल : कानपुर विश्वविद्यालय

सतीश चंद्र गोयल : जोधपुर विश्वविद्यालय

लेफ्टिनेंट कर्नल जी.सी.अग्रवाल : महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय

राधेश्याम चौधरी : कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय

गणपति चंद्र गुप्त : हिमाचल एवं कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय

डा. गंगाराम गर्ग : हिमाचल, कुरूक्षेत्र व गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय (तीन विश्वविद्यालयों के कुलपति रहे)

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार : गुरूकुल विश्वविद्यालय

डा. राजेन्द्र प्रकाश : गढ़वाल विश्वविद्यालय

डा. रंजन शाह : इलाहबाद विश्वविद्यालय

प्रो. रामसिंह : गुरूकुल विश्वविद्यालय

विमलेंदु तायल : महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय

डा. पीयूष रंजन अग्रवाल : पूर्वांचल विश्विद्यालय, जोनपुर

विनोद टीबड़ेवाल : जे. जे. टी. विश्वविद्यालय (जगदीश प्रसाद जबरमल टिबड़ीवाल विश्वविद्यालय, झुंझनु, राजस्थान)

अशोक मित्तल : लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी

पी. के. गुप्ता : शारदा विश्वविद्यालय

अपूर्व सिंघल : अमृता विश्वविद्यालय

डा. कृष्ण चंद्र सिंघल : एन. आई. एम. एस.(निम्स यूनिवर्सिटी, राजस्थान)

रमेश कुमार गोयल : बड़ौदा विश्वविद्यालय

तरसेम कुमार : एम. एम. विश्वविद्यालय, अंबाला

डा. स्वराजपाल : हैम्पटन विश्वविद्यालय

डी. डी. अग्रवाल : जे.जे.टी. विश्वविद्यालय

नंदकिशोर गर्ग : महाराजा अग्रसेन विश्वविद्यालय, बद्दी, हिमाचल प्रदेश

डा.(प्रो.) विश्वनाथ अग्रवाल : नालंदा खुला विश्वविद्यालय, बिहार

डा. ए.के. अग्रवाल : गुजरात टेक्नीकल यूनिवर्सिटी व गुजरात टेक्नोलोजीकल यूनिवर्सिटी

श्री जी के अग्रवाल : आगरा विश्वविद्यालय

डा. रामगोपाल गुप्त : विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन

डा. जे.पी.सिंघल : राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डा. राधारमण दास : जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

श्रीमती अलकादास गुप्ता : बाबू बनारसीदास विश्वविद्यालय, लखनऊ

बाबू संगम लाल अग्रवाल : प्रयाग महिला विद्यापीठ

रश्मि मित्तल : लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय, जालंधर

अग्रबंधु मुख्यमंत्री

वृष भानू : पेप्सू राज्य के प्रथम उप मुख्य मंत्री – 23 मई 1951 में
मुख्यमंत्री – 12 जनवरी 1955 से 01 नवम्बर 1956 तक
(PEPSU – पटियाला एंड ईस्ट पंजाब स्टेट यूनियन, यह राज्य 1948 से 1956 तक अस्तित्व में रहा तथा आठ प्रमुख शहरों को मिलाकर बनाया गया। 1956 में पेप्सू राज्य का विलय पंजाब में हो गया।)

श्री मोहनलाल सुखाड़िया - राजस्थान
13 नवम्बर 1954 से 13 मार्च 1967 तक व 26 अप्रैल 1967 से 9 जुलाई 1971 (कुल 3364 दिन मुख्य मंत्री रहे)

बाबू बनारसी दास गुप्ता - उत्तर प्रदेश – 28 फरवरी 1979 से 17 फरवरी 1980 तक

श्री बनारसी दास गुप्त - हरियाणा – दो बार मुख्य– मंत्री।
प्रथम – दिसम्बर 1975 ये 30 अप्रैल 1977 तक तथा द्वितीय – 1990 में।

श्री राम प्रकाश गुप्त - उत्तर प्रदेश – 21.10.1999 से 28.10.2000 तक

श्री रामकिशन गुप्ता - पंजाब – 7.7.64 से 5.7.66 तक आप दो साल तक सातवें सी एम रहे।
(आई एन सी (कांग्रेस), एम एल ए. रहे, जालंधर सिटी – नोर्थ ईस्ट)

श्री अरविंद केजडीवाल - दिल्ली
पहली बार – 18 दिसम्बर 2013 से 14 फरवरी 2014 तक तथा
दूसरी बार – 14 फरवरी 2015 से अब तक।

अग्रबंधु राज्य पाल

पद्मविभूषण श्री धर्मवीर : पंजाब –हरियाणा – 1966 – 67 तक ,
पश्चिमी बंगाल – 1967 से 1969 तक, मैसूर (कर्नाटक) – 1969 से 1972 तक

पद्मविभूषण श्री श्री प्रकाश : असम – 1949 से 1950 तक, मद्रास – 1952 से 1956 तक तथा मुंबई व महाराष्ट्र – 1956 में
(मुंबई के राज्यपाल रहते हुए आपने बड़ी कुशलता से महाराष्ट्र और गुजरात दो राज्यों की स्थापना करवाकर आंदोलन को राहत प्रदान की)

श्री प्रभुदास बी पटवारी : तमिलनाडू – 27 अप्रैल 1977 से 27 अक्टूबर 1980 तक

श्री राम प्रकाश गुप्त : मध्यप्रदेश – 07 मई 2003 से 01 मई 2004 तक

श्री सुदर्शन अग्रवाल - उत्तराचंल (उत्तराखंड) – जनवरी 2003 व
सिक्किम – 16 अक्टूबर 2007 से 08 जुलाई 2008 तक।
(आप 1972 में राष्ट्रपति चुनाव के प्रभारी बनाए गए, 1986 में भारत सरकार के केबिनेट सचिव रहे।)

श्री मोहन लाल सुखाड़िया : आंध्रप्रदेश – जनवरी 1976 से 16 जून 1976 तक, तत्पश्चात् तमिलनाडू – 16 जून 1976 से 27 अप्रैल 1977 तक।
(देश के पहले ऐसे राज्यपाल थे जिन्होंने दिल्ली में सत्ता परिवर्तन के साथ ही टेलीफोन पर अपने राज्यपाल पद से त्याग पत्र की पेशकश श्री मोरारजी देसाई से की)

रघुकुल तिलक : राजस्थान – 12 मई 1977 से 8 अगस्त 1981 तक

(आप 1958 से 1960 तक राजस्थान लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष भी रहे।)

श्री नवरंग लाल टिबड़ेवाल : राजस्थान (कार्यवाहक राज्यपाल) 1998 में
(राजस्थान के पूर्व मुख्य न्यायाधीश)

श्री मन्नानारायण : गुजरात – 26 दिसम्बर 1967 से 17 मार्च 1973 तक

अग्रवाल गौरव

बाबू मुकुन्द दास गुप्त ''प्रभाकर''

(हिंदी में रेलवे टाईम टेबल के प्रवर्तक)

श्री मुकुन्द दास गुप्त का जन्म 1901 में काशी के श्री गोविन्द दास अग्रवाल के यहां हुआ। पिता उन्हें मुंशी बनाना चाहते थे इसलिए अग्रवाल महाजनी पाठशाला में भर्ती करा दिया। वहां उनका मन नहीं लगा। 1921–22 में वे सत्याग्रह आंदोलन में कूद पढ़े। आपको बचपन से ही मातृभाषा हिंदी और मातृभूमि से अगाध प्रेम था। आपकी हिंदी के साहित्कारों के प्रति बड़ी आस्था थी। आपने विशारद एवं प्रभाकर जैसी हिंदी की परीक्षा उत्तीर्ण कर गौरव प्राप्त किया। साहित्यिक पुस्तकों को सस्ते मूल्य पर उपलब्ध करवाने के लिए आपने 'साहित्य सेवा सदन' नाम से एक संस्थान प्रारंभ की।

1921 में राष्ट्रीय आंदोलन के साथ–साथ देश की हिंदी सेवी संस्थाओं ने महामना मदनमोहन मालवीय व राजर्षि टंडन की प्रेरणा से रेलवे टाईम टेबल (समय सारिणी) हिंदी में छापने का निश्चय किया जबकि काशी नागरी प्रचारिणी सभा तथा हिंदी साहित्य सम्मेनलन प्रयाग जैसी संस्थाओं को सफलता नहीं मिली। श्री मुकुन्द दास गुप्त को यह बात बहुत खली और उन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना टाईम टेबल हिंदी में छापने का बीड़ा उठाया तथा अखिल भारतीय हिंदी टाईम टेबल का प्रकाशन 15 अगस्त 1927 को प्रारंभ कर दिया।

रेलवे टाईम टेबल (समय सारिणी) के हिंदी संस्करण का सर्वत्र स्वागत हुआ। मालवीय जी और टंडन जी ने इस पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। हिंदी संस्करण के प्रकाशन में अधिक खर्च आने से खूब

घाटा होने लगा परंतु हिंदी प्रचार की धुन में गुप्त जी पीछे नहीं हटे। चार वर्ष में 30 हजार का घाटा होने पर भी हिम्मत नहीं हारी। आखिर थकहार कर वे काशी से चले गए बाद में वे टाईम टेबल के पुनः प्रकाशन का संकल्प ले काशी लौटे परंतु घर नहीं आए। बैलिया बाग से टाईम टेबल के प्रकाशन में चुपचाप लगे रहे। 1935 में अखिल भारतीय टाईम टेबल का प्रकाशन करने के बाद ही उन्होंने माता पिता के दर्शन किए।

अपने दृढ़ संकल्प के कारण श्री मुकुन्द दास जी को घोर कष्ट उठाना पड़ा, वे सचमुच फकीर हो गए, चार पैसे रोज में उन्होंने शरीर की यात्रा चलाई। हिंदी टाईम टेबल की धुन में उन्हें पुस्तक प्रकाशन बंद करना पड़ा। हिंदी जगत और सरकार ने उनके इस महान सेवा कार्य पर यथोचिता ध्यान नहीं दिया, उन पर भारी कर्ज हो गया।

हिंदी टाईम टेबल भारतीय रेलों की समय सारिणी मात्र नहीं है बल्कि हिंदी को राजभाषा बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी था। एक बार महाराष्ट्र के भूतपूर्व राज्य पाल और काशी के विद्वान श्रीप्रकाश ने आपको एक पत्र लिखा कि मैंने आपके उपयोगी टाईम टेबल को प्रथम बार 1930 में देखा। हिंदी सेवी संस्थाओं ने उनका अभिनंदन किया। लगातार 50 वर्षो तक घाटे का सौदा करके वे इतने जर्जर हो गए कि उनका शरीर जवाब दे गया। 4 नवम्बर 1976 को 76 वर्ष की अवस्था में आपने प्राण त्याग दिए।

हिंदी को विश्व की भाषा बनाने का स्वप्न देखने वाले हिंदी प्रेमी, हिंदी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देने वाले श्री मुकुन्द दास गुप्त आज हमारे बीच में नहीं हैं लेकिन उनकी साधना रेलवे हिंदी टाईम टेबल के रूप में भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक हिंदी का अलख जगाती रहेगी।

ऋषि लाल अग्रवाल
(हिंदी आशुलिपि - ऋषि प्रणाली के जनक)

एक अच्छी हिंदी संकेत लिपि (हिंदी – **शार्टहैंड** – ऋषि प्रणाली) के **जनक** (आविष्कारक) आपको माना जाता है। आपके प्रयासों के फलस्वरूप हिंदी आशुलिपि सामने आई। ऋषि–प्रणाली हिन्दी – शीघ्र–लिपि' को 1948 में भारत सरकार द्वारा गठित हिन्दुस्तानी शार्ट हैन्ड एवं टाइपराइटिंग कमेटी ने संस्तुति करते हुये मान्यता प्रदान किया।

ऋषि प्रणाली संपूर्ण है और इसमें संकेत लिपि का कोई भी अंग छोड़ा नहीं गया है। श्री पुरूषोत्तम दास जी टंडन ने इस प्रणाली की भूरि–भूरि प्रशंसा की। प्रोफेसर ब्रजराज जी, एम ए, जो स्वंय भी शार्ट हैंड की एक पुस्तक लिख रहे थे परंतु फिर भी उन्होंने बड़ी दृढ़ता से अपनी राय दी कि यह प्रणाली सर्वथा योग्य प्रणाली है। हिंदी साहित्य सम्मेलन ने भी इस प्रणाली की तहेदिल से सराहना की। ऋषि प्रणाली की आपकी पुस्तक – 5 फरवरी 1938 को छपी। आप ऋषि कुटी, चक्र–जीरो रोड़, प्रयाग में रहते थे।

एक अच्छी हिंदी शॉर्ट हैंड प्रणाली का आविष्कार कर उसे प्रचारित करने का आरंभ 1922 ई. में हुआ। स्टेनोग्राफी (आशुलिपि) एक प्रकार का लघु लेखन है। यह किसी भाषा को तीव्र गति से लिखने की कला है।

लाला श्रीनिवास दास
(हिंदी के पहले उपन्यासकार)

लाला श्रीनिवास दास का जन्म 1851 में लाला मांगीलाल जी अग्रवाल के यहां हुआ था। आप भारतेंदु युगीन महान साहित्यकार और पत्रकार थे। आपका निधन 1887 में दिल्ली में हुआ था।

इस अग्रवाल विभूति का लिखा गया **उपन्यास परीक्षा गुरु** को हिंदी का पहला उपन्यास माना गया है। यह सन् 1882 में लिखा गया था और 1882 में ही सदादर्श प्रेस, दिल्ली द्वारा छापा गया। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रसिद्ध आलोचक डा. शशि भूषण सिंघल, प्राफेसर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के अनुसार 1882 तक उपन्यास शब्द प्रचलित नहीं हुआ था।

लाला श्रीनिवास कुशल महाजन और व्यापारी थे। अपने उपन्यास में इन्होंने मदनमोहन नामक रईस के पतन और फिर सुधार की कहानी सुनाई है। उपन्यास 41 छोटे–छोटे प्रकरणों में विभक्त है। पूरा उपन्यास नीतिपरक और उपदेशात्मक है।

बाबू गोपालचंद्र उपनाम गिरधरदास
(हिंदी के प्रथम नाटककार)

भारतेंदु हरिशचंद्र जी के अनुसार उनके पिता गोपालचंद्र जी, उपनाम गिरधरदास जी ने विशुद्ध नाटक रीति से हिंदी का पहला नाटक ''**नहुष**'' लिखा था। यह नाटक सन् 1857 में लिखा गया। गोपालचंद्र जी ने 48 ग्रंथों की रचना की। आप मात्र 28 वर्ष की उम्र में परलोक सिधार गए।

विश्व में इको-फ्रेंडली फोटोग्राफी का सबसे लोकप्रिय चेहरा हैं दिनेश गुप्ता

बीकानेर के फोटो जर्नलिस्ट दिनेश गुप्ता, देश और दुनिया के प्रेस से जुड़े फोटोग्राफरों में सबसे अलग मकाम रखते हैं। फोटो तो सभी खींचते हैं, पर दिनेश जैसे बिरले जो एक अनूठी दिव्य दृष्टि के साथ पैदा होते हैं, साधारण से साधारण दृष्टि से भी कैमरे की आंख से जो भी देखते हैं, वह एक क्लिक के बाद ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बन जाता है। वह देश के एकमात्र ऐसे फोटोग्राफर हैं, जो वर्षभर में आने वाले सभी दिवसों पर रंग–बिरंगे चेहरों से सजी–धजी फोटोग्राफी से देश की सभी फोटो एजेन्सियों का मन मोह लेते हैं। देश और दुनिया की प्रमुख फोटो एजेन्सियों सहित देश की हर पत्र–पत्रिका में उनके छायाचित्र प्रमुखता से छपते हैं।

प्रस्तुति : मोईनुद्दीन चिश्ती

आचार्य डा. रघुवीर (राष्ट्र एवं अग्रवंश गौरव महान् भाषाविद्)

स्वतंत्रता के बाद एवं संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा व राष्ट्रभाषा के पद पर प्रतिष्ठित करने पर यह आवश्यकता महसूस हुई कि हिंदी में अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के समतुल्य शब्दावली होनी चाहिए तभी वह भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपना स्थान सम्मुन्नत कर सकती है। अतः डा. रधुवीर ने मध्यप्रदेश के मुख्य मंत्री के संरक्षण में नागपुर में रहकर प्रशासनिक – शब्दकोश की रचना की और इस तरह प्रशासन में काम आने वाले अंग्रेजी शब्दों के समतुल्य हिंदी शब्दों का निर्माण कर हिंदी में अंग्रेजी के समकक्ष शब्दावली निर्माण कर प्रशासनिक स्तर पर एक बड़ी आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया। आपने चार लाख से अधिक हिंदी पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया। डा. रघुवीर का दृढ़ विश्वास था कि हिंदी का मूलाधार वस्तुतः संस्कृत ही है। इस मत के अनुसार ही उन्होंने अपने पारिभाषिक शब्दकोश में अंग्रेजी के शब्दों के समतुल्य शब्दों को संस्कृत के आधार पर ही गठित किया।

डा. रघुवीर भाषाविद् के अतिरिक्त प्रसिद्ध पुरातात्विक भी थे। उन्होंने भारतीय अवशेषों की खोज में भी अपना बहुत समय व्यतीत किया। आपने सरस्वती विहार की स्थापना की। 1956 में संस्था का शिलान्यास करते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. रोजन्द्र प्रसाद जी ने डा. रघुवीर व उनकी संस्था के कार्यों की प्रशंसा की ।

डा. रघुवीर जैसे धुन के पक्के राष्ट्रभक्तों की चिंतनधारा ने ही हिंदी को राष्ट्रभाषा के पद पर विभूषित किये जाने का मार्ग प्रशस्त किया। आपका जन्म 30 दिसम्बर 1902 को रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) में श्री मुंशीराम अग्रवाल के यहां हुआ जो पेशे से एक शिक्षक थे। आपने लंदन से पी एच डी की उपाधि प्राप्त की और अध्यापन कार्य में लग गए। आपने न केवल हिंदी का ही अध्ययन किया बल्कि उर्दू, फारसी, बंगला, संस्कृत व अंग्रेजी भाषाएं सीख कर उन पर

अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया। आपने संसार के प्रायः उन सभी स्थानों की यात्रा की, जहां भारतीय संस्कृति का कभी भी प्रभाव रहा था। उन स्थानों पर आचार्य जी की भेंट अनेक ऐसे विद्वानों से हुई जो वहां पर भारतीय संस्कृति के अध्येता एवं गवेषणकर्ता थे। आचार्य जी को इस दौरान अनेक दुर्लभ पांडुलिपियां एवं आलेख प्राप्त हुए जिनमें भारतीय संस्कृति, दर्शन एवं विचारों के अनमोल रत्न भरे हुए हैं। इन ग्रंथों पर शोध करने के लिए आपने अनेक देशी व विदेशी भाषाएं पढ़ीं।

डा. रघुवीर जी ने अथक मेहनत करके हिंदी में लाखों **पारिभाषिक शब्दों** की रचना की ताकि भारतीय भाषाएं विज्ञान की सक्षम वाहक बन सकें तथा इस प्रक्रिया में उपयुक्त शब्दावली की समस्या आड़े ना आ सके। आपने 14 मई 1963 को कार दुर्घटना में अपने प्राण त्याग दिए। आपका संग्रहालय अनमोल निधि है व विश्व के प्रत्येक विद्वान के लिए प्रेरणा दायक है। आपकी कामना थी कि इस भूतल से तब तक न जाऊं जब तक अंग्रेजी के 20 लाख शब्दों के हिंदी पर्याय पूर्ण न कर लूं।

श्री रामरिख मनहर
(ठहाके बांटने वाले हास्य सम्राट)

राजस्थान के शेखावाटी अंचल के चिड़ावा नगर में जन्में श्री रामरिख मनहर का पूरा नाम रामरिख मानमल जी हिम्मतरामका है। आपका बचपन चिड़ावा मे बीता। स्कूल के दिनों में नाटकों में अभिनय करना शौक था, कई पुरस्कार भी जीते। बंबई में व्यापार करने के लिहाज से आए पर मंच का शौक व्यापार पर हावी हुआ और दूसरों का मन हरने का संकल्प अप्रतिम बना। दुनियां के दुखों को देखकर आपने सांस्कृतिक मंचों से हंसी और ठहाकों को बांटने में ही जीवन का ध्येय माना। बात–बात में हास्य के घूंट, तीखी चुटकी, मुक्तकों और हंसी ठहाके के अपने निराले अंदाज से कवि सम्मेलनों का संचालन करने केवल हंसी खुशी देश विदेश में बांट रहे हैं। अपने इसी ध्येय के अंतर्गत सन् 1965 में उन्होंने साहित्यक संगम संस्था की स्थापना की। फिल्मों के बाद कवि सम्मेंलन को ही सर्वप्रिय बनाने का श्रेय उन्हें जाता है। सफल संचालक कमजोर कवि को भी सफल बना देता है, ऐसा आपका मानना है और इसी बात को आपने साबित कर दिखाया है। आप अनेक वर्षों तक मंगलदीप नाम की बेजोड़ साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन व संपादन करते रहे हैं।

राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति डा. कर्ण सिंह ने उन्हें साहित्य श्रीकांत की उपाधि से सम्मानित किया। विशेष दंडाधिकारी, ठिठोती आदि पदवियों–सम्मानों से विभूषित मनहर जी को लायंस क्लब, कर्णावती, अहमदाबाद से वाग्र विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। सामान्य जनता ने आपको हास्य सम्राट माना है।

काका हाथरसी - नाम - प्रभुलाल गर्ग

काका ने स्वयं लिखा है – दिन अट्ठारह सितंबर, अग्रवाल परिवार, उन्नीस सौ छः में लिया, काका ने अवतार।

आप हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती व मराठी भाषाओं के ज्ञाता थे।

रुचि - हास्य –व्यंग्य–काव्य, संगीत नाटय एवं चित्रकला।

संस्थापक - संगीत, फिल्म संगीत, नाटय म्यूजिक मिरर तथा हास्य रस पत्रिकाएं एवं संगीत प्रेस और संगीत कार्यालय हाथरस।

कृतित्व - हास्य – व्यंग्य के रचनात्मक साहित्य की अनेक पुस्तकें, संगीत–कला पर चार ग्रंथों एवं तुकांत–कोश व राग–कोष के रचयिता, 150 तैलीय चित्रों के चित्रकार, संगीत, फिल्म संगीत तथा मन की मौज मासिक पत्रिकाओं के संपादक संगीत संबंधी 150 पुस्तकों के प्रकाशक।

ग्रामोफोन रिकार्डस - स्वंय की आवाज में एच एम वी द्वारा तीन डिस्क रिकार्ड्स तथा अमरनाद बंबई द्वारा दो कैसेट।

फिल्म - राजश्री प्रोडक्शन, बंबई द्वारा निर्मित फिल्म जमुना किनारे में कविता पाठ एवं अभिनय।

प्रदाता - प्रतिवर्ष हास्य – व्यंग्य के कवि को 10 हजार रूपये का काका हाथरसी पुरस्कार।

विशिष्ट उपलब्धियां - 1966 में काका हाथरसी हीरक जयंती समारोह में भारत सरकार के तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री द्वारा सम्मानित,

1967 में तक्तं शरणं गच्छामि समारोह में तत्कालीन राज्यपाल एवं कलकत्ता की 108 संस्थाओं द्वारा सम्मानित, 1974 में थाईलैंड व सिंगापुर में कविता पाठ, चंडीगढ़ द्वारा अग्रश्री की उपाधि से विभूषित, 1976 में ठिठोली पुरस्कार द्वारा हास्य रस के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में पुरस्कृत, 1976 में 70 वी वर्षगांठ पर भारत सरकार के कंद्रीय मंत्रियों द्वारा सम्मानित एवं 500 पृष्ठ के काका हाथरसी अभिनंदन ग्रंथ का विमोचन। 1979 में तत्कालीन उपराष्ट्रपति द्वारा कलारत्न की उपाधि से विभूषित, 1984 में अमेरिका एवं कनाडा में 40 काव्य गोष्ठियां। बाल्टीमोर(अमेरिका) के मेयर द्वारा 23 सितम्बर 1984 को आनरेरी सिटिजन शिप से सम्मानित। 1985 में पदमश्री से अलंकृत।

1946 में ''**काका की कचहरी**'' उनकी पहली पुस्तक प्रकाशित हुई। काका हास्य कवि सम्मेलनों में प्रसिद्धि पाने लगे थे। 1957 में पहली बार दिल्ली के लाल किले में आयोजित कवि–सम्मेलन में काका को आमंत्रित किया गया। सभी आमंत्रित कवियों से आग्रह किया गया था कि वे ''क्रांति'' पर कविता करें क्योंकि सन् सत्तावन की शताब्दी मनाई जा रही थी। अब समस्या यह थी कि काका ठहरे हास्य–कवि अब वे क्रांति पर क्या कविता करें? क्रांति पर तो वीररस में ही कुछ हो सकता था। जब कई प्रसिद्ध वीर–रस के कवियों के कविता–पाठ के बाद काका का नाम पुकारा गया तो काका ने मंच पर क्रांति का बिगुल कविता सुनाई। काका की कविता ने अपना झंडा ऐसा गाड़ा कि सम्मेलन के संयोजक गोपालप्रसाद व्यास ने काका को गले लगाकर मुक्त कंठ से उनकी प्रशंसा व सराहना की। इसके बाद काका हास्य–काव्य के ऐसे धुवतारे बने कि अंत तक जमे रहे। 18 सितंबर को जन्म लेने वाले काका हाथरसी का निधन भी 1995 में 18 सितंबर को ही हुआ।

अग्रवाल गौरव
कुछ बात है - हस्ती मिटती नहीं हमारी

हनुमान प्रसाद पोद्दार : आपने भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान **भारत रत्न** विनम्रता से लेने से मना कर दिया।

डा. वासुदेवशरण अग्रवाल : आपको 1957 में सरकार ने पद्मभूषण से सम्मानित करना चाहा किंतु आपने विनम्रता से मना कर दिया।

श्री श्रीप्रकाश : नेहरू जी आपकी योग्यता के कायल थे और चाहते थे कि बंबई के राज्यपाल के पद से अवकाश के बाद वे भारत के उपराष्ट्रपति या विदेश में राजदूत का पद संभालें किंतु आपने स्वेच्छा से मना कर दिया। आप लाल बहादुर शास्त्री जी व कमलापति त्रिपाठी जी के राजनीतिज्ञ गुरू भी रहे।

लाला कंवरसेन : आधुनिक भारत के महान् भागीरथ, राजस्थान की सबसे बड़ी इंदिरा गांधी नहर (मरू गंगा) परियोजना के कर्णधार । पंजाब में भाखड़ा बांध के निर्माता व आपके प्रयासों से भाखड़ा हैडवक्स पाकिस्तान में जाते जाते बचा और बीकानेर रियासत भारत में रह सकी। इसके अलावा हीरा कुंड, दामोदर घाटी, कोसी, नर्मदा आदि परियोजनाओं के सूत्रधार भी आप ही रहे।

ज्योति प्रसाद अगरवाला : असम के ''**रूपकंवर**'' – स्वाधीनता सैनानी, असमिया फिल्मों के जनक। 1934 में पहली असमिया फिल्म का निर्माण। **जयमति भारत** की पांचवी व असम की पहली बोलती फिल्म थी। इन्होंने ज्योति संगीत की शुरूआत की और बालसाहित्य के लिए अनुपम रचना **ज्योति रामायण** की रचना की। आधुनिक असमिया साहित्य व संगीत के प्रणेता व प्रसिद्ध रंगकर्मी के रूप में पूर्वोत्तोर भारत में ''रूपकंवर'' के नाम से विख्यात हैं। 10 जनवरी को उनकी

पुण्यगतिथि के अवसर पर संपूर्ण असम में ''**शिल्प दिवस**'' के रूप में उन्हें' याद किया जाता है।

भारतेंदु हरीशचंद्र : आधुनिक हिंदी साहित्य के जन्मदाता तथा अग्रसेन साहित्य के पहले लेखक। आपने 105 ग्रंथों का निर्माण किया व अग्रवालों की उत्पत्ति नामक पहली पुस्तक जिसे आपने 1871 में छपवाया, तत्पश्चात सन् 1893 में इनके फूफेरे भाई बाबू राधाकृष्ण दास जी द्वारा प्रकाशित करवाया गया। बाद में इस पुस्तक का प्रकाशन श्री खेमराज कृष्णदास वेंकटेश्वेर प्रेस ने सन् 1920 में किया।34 वर्ष की आयु में आपका देहांत हो गया।

सेठ मिर्जामल पोद्दार (बंसल गौत्र) : देश के विभिन्न भागों में आपकी 52 कोठियां थीं। महाराजा रणजीत सिंह के विशेष कृपापात्र थे, महाराजा ने प्रसन्न होकर मोतियों का कंठहार तथा अनेक प्रमाण पत्र प्रदान किये। बीकानेर नरेश ने आपकी सेवाओं से प्रसन्न होकर तीन खून तक की माफी प्रदान की।

राधामोहन गोकुलजी : क्रांतिकारी राष्ट्र भक्त, अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चिंतक तथा लेखक, आपकी लिखी पुस्तकों से संसार के अनेक देशों के विचारकों ने समता, समाजवाद, स्वाधीनता तथा स्व्देश प्रेम की प्रेरणा ली। शहीदे आजम भगतसिंह ने लाहौर में जिस पिस्तौल से सांडर्स की हत्या का प्रयास किया वह पिस्तौ्ल राधामोहन जी द्वारा उपलब्धि करवाई गई।

राम मनोहर लोहिया : अजय पौरूष के धनी, भारत में समाजवादी आंदोलन के जनक, विरोधी दल के सशक्त नेता, गैर कांग्रेसी विचारधारा के जनक तथा चित्रकूट में **रामायण मेले** का प्रारंभ करने वाले। आजादी के आंदोलन में 40 बार जेल की यातनाएं सहन की। आपने अनेक पुस्तकें लिखीं ।

डी.एन. जटिया : देश में 1975 में ''**फिलाटेलिक कांग्रेस ऑफ इंडिया**'' की स्थापना की। डाक टिकटों के बारे में विशेषता ग्रहण की इसके आधार पर वे 1981 से 1987 तक ''**इंटर एशिया फिलाटेलिक फेडरेशन**'' के अध्यक्ष रहे। 1990 से 1998 तक ''**इंटरनेशनल फिलाटेनिक फेडरेशन**'' के अध्यक्ष बने। आप पहले भारतीय थे जिन्हें इंग्लैंड के जार्ज पंचम ने आर डी पी अर्थात ''**रोल ऑफ डिस्टीन्गविश्ड फिलटेलिक**'' से गौरवान्वित किया।

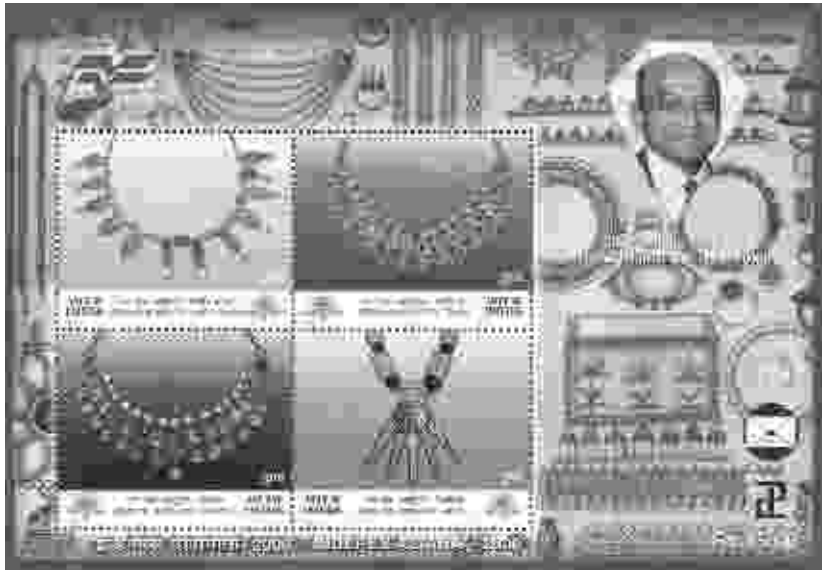

भारतीय डाक विभाग द्वारा देश के परंपरागत आभूषणों पर प्रकाशित एक मिनेचर शीट में महान् अग्रविभूति श्री देवकीनंदन जटिया का चित्र भी दिया गया है। श्री जटिया अंतरराष्ट्रीय फिलेटेलिस्ट फेडरेशन के अध्यक्ष बनने वाले प्रथम भारतीय के साथ–साथ गैर यूरोपीयन भी हैं। इसीलिए डाक विभाग ने आभूषणों की तरह ही इन्हें भी अपना एक विशेष रत्न मानते हुए राष्ट्र के प्रति दी गई सेवाओं का सम्मान किया है।

मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल : देशभर में महाराजा अगसेन जयंती एवं

इस अवसर पर आयोजित समारोह के आयोजन की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन आपसे ही प्राप्त हुआ, 1939 में 14 सदस्यों के सहयोग से आपने दिल्ली में ''**वैश्य को-ऑपरेटिव बैंक लि.**'' की स्थापना की, आपने 300 बीघा जमीन अग्रोहा में थेह के निकट खरीद कर अग्रोहा धाम बनाने में बहुत बड़ा कार्य किया ।

डा. एम विजय गुप्ता : भारत व कई अन्य देशों में मतस्य पालन के क्षेत्र में अग्रणी काम करने वाले प्रसिद्ध भारतीय कृषि वैज्ञानिक – आपको सीओल दक्षिण कोरिया में **सुनहाक शांति पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल (शिक्षा विशेषज्ञ) : जन्म 25 सितम्बर 1932, सिकंदराबाद, यू.पी. – आपने गणित व अन्य विषयों पर सौ से अधिक पुस्तकें लिखीं। जिसमें से कई पुस्तकें विभिन्न शिक्षा बोर्डों द्वारा स्वीकृत की हुई हैं।

पदमश्री प्रेमलता अग्रवाल : विश्व की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई कर सर्वाधिक उम्र की पर्वतारोही महिला का कीर्तिमान स्थापित करने वाली भारत की पहली महिला। अत्यधिक ढलान के लिए प्रसिद्ध आस्ट्रेलिया महाद्वीप की सर्वाधिक ऊंची चोटी कासेज पिरामिड तथा विश्व की सात महाद्वीपों की ऊंची चोटियों पर विजय का कीर्तिमान स्थापित करने वाली एकमात्र महिला।

गोविंद अग्रवाल : जाने माने इतिहासकार, 92 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास, आप चुरू, राजस्थान के रहने वाले थे। आपके 350 शोध पत्र प्रकाशित हुए व राजस्थानी कथा कोश (दो खंड), राजस्थानी लोक कथांवा, राजस्थानी लोकगीत, राजस्थानी कहावत कोश सहित 22 पुस्तकों का लेखन किया।

बी के अग्रवाल - विख्यात फोटोग्राफर : नई दिल्ली। की एकेडमी ऑफ विजुअल मीडिया ने फोटोग्राफिक दुनियां में रिमार्केबिल योगदान के लिए आपको ''लाईफ टाइम एचिवमेंट एवार्ड 2006 दिया। आंध्रप्रदेश से ये एवार्ड प्राप्त करने वाले आप पहले फोटोग्राफर थे। आपकी 800 से भी अधिक फोटोज विभिन्न राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में प्रदर्शित हो चुकी हैं और इन पर उन्हें 125 से अधिक एवार्ड मिल चुके हैं। विशाखापट्टनम में आपका विशाखा कैमरा क्ल्ब है।

श्री श्याम कृष्ण गुप्ता (गर्ग गौत्र) : सिविल इंजीनियर – जन्म – जगाधरी। अपने सेवाकाल में आपने अंडमान निकोबार द्वीप समूह में सड़कों तथा पुलों का निर्माण करवाया। पोर्टब्लेयर स्थित कालापानी की जेल के दो खंड तुड़वाकर आधुनिक नए अस्पताल का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन 1961 में लाल बहादुर शास्त्री जी ने किया तथा दूसरे खंड का उद्घाटन 1963 में डा. जाकिर हुसैन द्वारा किया गया। 1968 से 1971 तक काठमांडू (नेपाल) में त्रिभुवन विश्वविद्यालय में लाइब्रेरी भवन, छात्रावास तथा क्रीड़ा स्थल का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन नेपाल नरेश महेन्द्र शाहदेव द्वारा किया गया ।1975 से 1979 तक तंजानिया देश में दार सेलाम, अरूशा तथा इरिंगा में ग्रेन साइलोज का निर्माण करवाया। 1984 से 1987 तक आई एस बी टी, दिल्ली के यमुना पुल के निर्माण में योगदान दिया। आप कई तकनीकी पदों पर रहे।

आत्मा राम अग्रवाल : महात्माम गांधी मर्डर केस के न्यायाधीश, जिन्होंने इस केस की लाल किले से सुनवाई की। यह अंतरराष्ट्रीय महत्व की घटना है। श्री आत्मा चरण ने अपनी न्यायप्रियता का श्रेष्ठ उदाहरण सबके समक्ष रखा। इनके पिता श्री राधाचरण डिप्टी कलेक्टर ने अपने पिता श्री लक्ष्मीनारायण अग्रवाल के नाम पर दो धर्मशालाएं बनवाईं, जो सदर तहसीलदार के सभापतित्व में चलती हैं। फर्रूखाबाद निवासी।

डा. बालकृष्ण गोयल : आपको पद्मश्री, पद्मभूषण व पद्मविभूषण जैसे तीनों नागरिक सम्मानों से सम्मानित किया गया। आप राष्ट्रपति व राज्यपालों जैसे उच्च पदों पर आसीन व्यक्तियों के मानद चिकित्सक रहे।

डा. पुरुषोत्तषम लाल जिंदल : (भारत में एंजियो प्लास्टी के जनक) पद्मभूषण व पद्मविभूषण जैसे नागरिक सम्मानों से सम्मानित किया गया। 2005 में आपको मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया का सर्वोच्च एवार्ड डा बी सी राय एवार्ड प्रदान किया गया।

डा. यतीश अग्रवाल : विज्ञान भूषण से सम्मानित (उ.प्र. सरकार के हिंदी संस्थान द्वारा) आपका चिकित्सा जगत में विशेष स्थान है। आपको आत्माराम एवार्ड, डा. मेघानाथ साह एवार्ड, शिक्षा एवार्ड, राष्ट्रीय विज्ञान एवार्ड, हिंदी अकादमी साहित्य सम्मान, इंदिरा गांधी नोबल एवार्ड, राजीव गांधी नोबल अवार्ड व इंडियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च एवार्ड से सम्मानित किया जा चुका है।

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार : आप 1936 में उच्चतर शिक्षा के लिए यूरोप गए। वहीं पर अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास की रचना की और इसी ग्रंथ पर अग्रवाल समाज पर शोध पूर्ण सामग्री लिखने पर उन्हें पेरिस यूनिवर्सिटी से डी लिट् की उपाधि मिली ।

अग्रवाल समाज की विभूतियों पर भारत सरकार द्वारा प्रकाशित डाक टिकट

क्र.सं.	नाम	जन्म	अवसान	कीमत	टिकट जारी करने की तिथि	प्रसारित संख्या
1.	लाला लाजपत राय	02.10.1865	16.11.1928	15 पैसे	28.01.1965	20 लाख
2.	डा. भगवान दास	12.01.1869	18.09.1958	20 पैसे	20.01.1969	30 लाख
3.	सेठ जमना लाल बजाज	04.11.1889	11.02.1942	20 पैसे	04.11.1970	30 लाख
4.	काशी विध्या पीठ स्वर्ण जयंती के अवसर पर जारी	स्थापित 1921	स्वर्ण जयंती 1971	20 पैसे	10.02.1971	30 लाख
5.	भारतेंदु बाबू हरीशचंद्र	09.09.1850	05.01.1885	25 पैसे	09.09.1976	30 लाख
6.	महाराजा अग्रसेन	एकम, प्रथम नवरात्रा		25 पैसे	24.09.1976	80 लाख
7.	सर गंगा राम	13.04.1851	10.07.1927	25 पैसे	04.09.1977	30 लाख
8.	डा. राम मनोहर लोहिया	23.03.1910	12.10.1967	25 पैसे	12.10.1977	30 लाख
9.	डा. राम मनोहर लोहिया	पुनः प्रकाशित		2 रूपये	23.03.1997	04 लाख
10.	श्री मोहन लाल सुखाड़िया	31.07.1916	02.02.1982	60 पैसे	02.02.1988	10 लाख
11.	राष्ट्ररत्न बाबू शिवप्रसाद गुप्त	28.06.1883	24.04.1944	60 पैसे	28.06.1988	10 लाख
12.	श्री श्री प्रकाश	03.08.1890	23.06.1971	2 रूपये	03.08.1991	06 लाख
13	श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार	17.09.1892	22.03.1971	1 रूपया	10.09.1992	06 लाख
14.	डा. देवकी नंदन जटिया	1930	2000	15 रूपये	11.12.2000	50 हजार

15.	श्री बाबू गुलाब राय	17.01.1888	13.04.1963	5 रूपये	22.06.2002	04 लाख
16.	श्री नरेन्द्र मोहन	10.10.1934	28.09.2002	5 रूपये	14.10.2003	04 लाख
17	डा. इन्द्र चंद शास्त्री	27.05.1912	03.11.1986	5 रूपये	27.05.2004	04 लाख
18.	श्री ज्योति प्रसाद अग्रवाला	17.06.1903	17.01.1951	5 रूपये	17.06.2004	04 लाख
19.	सर पदमपत सिंघानिया	03.02.1905	18.01.1979	5 रूपये	03.02.2005	06 लाख
20.	श्री रामचरण अग्रवाल	02.12.1919	25.07.1977	5 रूपये	25.07.2009	04 लाख
21.	श्रीमती दिनेश नंदिनी डालमिया	16.2.1928	25.10.2007	5 रूपये	11.10.2009	04 लाख
22.	श्री गौरीशंकर डालमिया	12.11.1910	16.06.1988	5 रूपये	12.11.2009	04 लाख
23.	श्री कमलापत सिंघानिया	07.11.1884	31.05.1937	5 रूपये	01.12.2010	04 लाख
24.	श्री लक्ष्मीपत सिंघानिया	23.11.1910	1976	5 रूपये	15.11.2010	13 लाख
25	श्री देशबंधु गुप्ता	1938		5 रूपये	14.06.2010	03 लाख
26	श्री पूर्ण चंद गुप्ता	1912	1986	5 रूपये	02.01.2012	30 लाख
27	श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी	18.12.1906	29.06.1992	5 रूपये	31.07.2012	04 लाख
28	श्री बाबू बनारसीदास	08.07.1912	03.08.1985	5 रूपये	31.12.2013	04.1 लाख

ये अग्रवाल नहीं हैं

इनके नाम से भी डाक टिकट छपे हैं। भूलवश हम इन्हें अग्रवाल मान लेते हैं। ये वैश्य समुदाय से हैं, सभी वैश्य (गुप्ता या गुप्त) अग्रवाल नहीं होते।

मैथिलीशरण गुप्त - गहोई वैश्य ।

सियारामशरण गुप्त - मैथिलीशरण गुप्त के अनुज, गहोई वैश्य।

जयशंकर प्रसाद गुप्त - कान्यकुब्ज हलवाई - मोदनवाल - यससेनी वैश्य, जन्म–वाराणसी, सुंघनी साहू देवीप्रसाद जी हलवाई वैश्य के यहां हुआ। 1900 में हलवाई युवक दल संगठित किया।

स्व. श्री चंद्रभानु गुप्त - भू.पू. मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश। माहौर वैश्य – अलीगढ़।

श्री श्याम लाल गुप्त - पार्षद जिन्होंने विश्व विजयी तिरंगा प्यारा नामक राष्ट्रगीत लिखा था, आप दौसर वैश्य हैं, आपने दौसर वैश्य महासभा, कानपुर की स्थापना की।

महात्मा गांधी - गुजरात के म्योढ वैश्य (मोढ़)

भामाशाह - कावड़या वैश्य (ओसवाल–जैन), आजकल दानवीर को भामाशाह कहते हैं।

आरती गुप्ता (शाह) - इन पर भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया।

अग्रवाल समाज की अलंकृत विभूतियां

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त सर्वोच्च नागरिक सम्मान में प्रथम स्थान ''भारत रत्न'' द्वितीय स्थान ''पद्म विभूषण'' तृतीय स्थान ''पद्म भूषण'' तथा चतुर्थ स्थान ''पद्म श्री'' का है। महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा प्रदत्त इन सभी नागरिक सम्मानों को अग्रवाल समाज की महान् विभूतियों ने समय–समय पर अपने महत्वपूर्ण व उल्लेखनीय कार्यों के फलस्वरूप प्राप्त किया है। सम्मान प्राप्त अग्र सपूतों ने राष्ट्र के विकास में तथा देश सेवा में अपना अतुलनीय योगदान देकर जहां भारत माता का नाम संसार में रोशन किया, वहीं अग्रवाल समाज का सिर सम्मान के साथ ऊंचा किया है। समाज गौरवान्वित हुआ है। समाज की इन महान् विभूतियों से प्रेरणा लेकर हम भी समाज का गौरव बनाए रखेंगे।

वर्ष	नाम	क्षेत्र
	भारत रत्न	
1955	श्री भगवान दास	साहित्य शिक्षा
	पद्म विभूषण	
1956	श्रीमती जानकी देवी बजाज	मध्यप्रदेश, समाज सेवा
1957	श्री प्रकाश	आंध्रप्रदेश, जन सेवा
1980	रायकृष्णदास	उत्तर प्रदेश, जनसेवा
1999	डा धर्मवीर	दिल्ली, जनसेवा

2005	डा. बालकृष्ण गोयल	महाराष्ट्र, औषधि

(ऐसी अग्रविभूति जिन्हें पद्म विभूषण, पद्म भूषण व पद्म श्री तीनों एवार्ड मिले।)

2008	श्री लक्ष्मी निवास मित्तल	राजस्थान, उद्योग
2009	डा. पुरूषोत्तम लाल जिंदल	उत्तर प्रदेश, औषधि चिकित्सा
2011	स्व.श्री एल.सी.जैन	दिल्ली, जन सेवा

पद्म भूषण

1954	श्री राधाकृष्ण गुप्ता	दिल्ली जनसेवा
1956	डा. कंवर सेन	राजस्थान प्रशासनिक सेवा
1962	श्री सीताराम सेकसरिया	आसाम, समाज सेवा
1968	श्री गूजरमल मोदी	उत्तर प्रदेश, उद्योग एवं व्यापार
1969	श्री केशव प्रसाद गोयनका	प.बंगाल, उद्योग व व्यापार
1970	लाला हंसराज गुप्ता	हरियाणा, समाज सेवा
1970	श्री भरत राम	दिल्ली, उद्योग
1971	श्री मंगतूराम जयपुरिया	दिल्ली, समाज सेवा
1972	डा. जयकृष्णा	उत्तर प्रदेश, प्रशासनिक सेवा
1983	डा. स्वराजपाल	यू.के., समाज सेवा
1988	श्री श्रेयांश प्रसाद जैन	महाराष्ट्र, समाज सेवा
1989	श्री गिरीलाल जैन	दिल्ली, साहित्य शिक्षा
1990	डा.बालकृष्ण गोयल	महाराष्ट्र, औषधि विज्ञान
1990	डा. एन आर झुंनझनुवाला	औषधि विज्ञान
1990	डा. मोती चंद	साहित्य – कला
1998	डा. श्रीमती हेमलता गुप्ता	दिल्ली, औषधि विज्ञान
2000	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	दिल्ली, अन्य
2000	डा. रामनारायण अग्रवाल	आंध्रप्रदेश, विज्ञान व इंजीनियरी

2001	श्री राहुल बजाज	महाराष्ट्र, उद्योग व व्यापार
2001	श्री बद्री नारायाण रामूलाल बारवाले	महाराष्ट्र, उद्योग एवं व्याापार
2003	श्री हरिशंकर सिंघानिया	दिल्ली, उद्योग एवं व्यापार
2003	डा. पुरूषोत्तम लाल जिंदल	उत्तर प्रदेश, औषधि चिकित्सा
2004	श्री विष्णु प्रभाकर	दिल्ली, साहित्य व शिक्षा
2006	श्री दिनेश नंदिनी डालमिया	दिल्ली, साहित्य व शिक्षा
2006	श्री जयवीर अग्रवाल	तमिलनाडू, औषधि चिकित्सा
2006	डा. लोकेश चंद्र	दिल्ली, साहित्य व शिक्षा
2006	श्री विजयपत सिंघानिया	महाराष्ट्र, (खेल) हवाई उड़ान
2006	श्रीमती देवकी जैन	कर्नाटक, समाज सेवा
2006	श्री शशि भूषण	दिल्ली, सार्वजनिक उपक्रम
2007	श्री सुनील भारती मित्तल	दिल्ली, उद्योग एवं व्यापार
2008	श्री सुरेश कुमार नेवटिया	दिल्ली, उद्योग व सामाजिक कार्य
2009	श्री शेखर गुप्ता	दिल्ली, पत्रकारिता
2010	डा. सत्यपाल अग्रवाल	कर्नाटक, चिकित्सा–विज्ञान
2012	सत्य नारायण गोयनका	महाराष्ट्र, समाज सेवा
2015	डा. अंबरीश मित्तल	दिल्ली, चिकित्सा–विज्ञान

पद्म श्री

1956	डा. मोहन लाल (नैत्र चिकित्सक) (केसरे हिंद) 1962 में निधन	उत्तर प्रदेश, चिकित्सा
1956	डा. एम.सी.मोदी	कर्नाटक, चिकित्सा
1959	डा. आत्माराम	प.बंगाल, औद्योगिक विज्ञान
1963	श्री बृजकिशन चांदीवाला	दिल्ली, समाज सेवा
1963	श्री सुमंत किशोर जैन	उत्तर प्रदेश, जन सेवा
1965	श्री हनुमानबक्ष कन्नोई	राजस्थान, औद्योगिक व्यवसाय

1966	सुमित्रा भरतराम	दिल्ली, कला
1966	श्री अरूण रामावतार पोद्दार	महाराष्ट्र, साहित्य शिक्षा
1968	श्री अमरनाथ गुप्ता	दिल्ली, समाज सेवा
1969	श्री कल्याण सिंह गुप्ता	दिल्ली, समाज सेवा
1969	श्री श्यामलाल गुप्ता	दिल्ली, साहित्य शिक्षा
1969	श्री रामलाल राजगढ़िया	दिल्ली, औद्योगिक व्यवसाय
1970	श्री फूलचंद देवरालिया अग्रवाल	प.बंगाल, औद्योगिक व्यवसाय
1970	श्री घनश्याम दास गोयल	कर्नाटक, समाज सेवा
1971	श्री देवी सहाय जिंदल	दिल्ली, औद्योगिक व्यवसाय
1972	श्री बद्री प्रसाद बाजोरिया	उत्तर प्रदेश, समाज सेवा
1972	श्री प्रभुदयाल डाबरीवाला	प.बंगाल, समाज सेवा
1972	श्री ईश्वर चंद्र गुप्ता	चंडीगढ़ जन सेवा
1972	श्रीमती सुरेन्द्र बंशीधर गुप्ता	दिल्ली समाज सेवा
1973	श्रीमती सुलोचना मोहनलाल मोदी	महाराष्ट्र समाज सेवा
1974	श्री इंद्र कुमार गुप्ता	दिल्ली जन सेवा
1974	डा. जोगेन्द्र लाल गुप्ता	दिल्ली औषधि
1975	श्री सूरजमल अग्रवाल	दिल्ली समाज सेवा
1975	श्री बिशन स्वरूप बंसल	उत्तराखंड जन सेवा
1976	श्री ओमप्रकाश मित्तल	दिल्ली जन सेवा
1976	सेठ किशनदास (रोहतक निवासी–अग्रवाल)	हरियाणा जन सेवा
1977	श्री श्रीराम भरतिया	उत्तर प्रदेश समाज सेवा
1981	हरिकृष्ण जैन	दिल्ली समाज सेवा
1982	डा. निरंजन दास अग्रवाल	पंजाब औषधि
1982	श्री विरेन्द्र प्रभाकर	दिल्ली कला
1982	श्री गोपाल कृष्ण सर्राफ	प. बंगाल औषध
1983	डा. रघुवीर शरण मित्र	उत्तर प्रदेश साहित्य शिक्षा
1984	डा. बालकृष्ण गोयल	महाराष्ट्र औषध
1985	श्री ओम बी. अग्रवाल	प.बंगाल क्रीड़ा

1985	श्री प्रभुलाल गर्ग–काका हाथरसी	उ.प्रदेश साहित्य शिक्षा
1986	श्री अनिल कुमार अग्रवाल	दिल्ली शिक्षा (पर्यावरण)
1987	डा. सरोज कुमार गुप्ता	प.बंगाल औषधि
1990	श्री रामनारायाण अग्रवाल	आंध्रप्रदेश विज्ञान इंजीनियरिंग
1990	श्री जगदीश चंद्र मित्तल	आंध्रप्रदेश कला
1991	श्री भारत भूषण	उ.प्रदेश साहित्य शिक्षा
1991	डा. महेन्द्र कुमार गोयल	उ.प्रदेश औषधि
1991	प्रो. नरेन्द्र कुमार गुप्ता	दिल्ली विज्ञान व इंजीनियरिंग
1991	श्री बिमल प्रसाद जैन	दिल्ली समाज सेवा
1991	श्रीमती शीला झुनझुनवाला	दिल्ली साहित्य शिक्षा
1992	श्री शांति लाल जैन	दिल्ली अन्य
1999	श्री हर्ष वर्धन नेवटिया	प. बंगाल औद्योगिक व्यवसाय
2000	श्री सत्यनारायण गौरीसरिया	यू के जनसेवा
2001	डा. प्रेम शंकर गोयल	प. बंगाल विज्ञान इंजीनियरिंग
2002	श्री अशोक झुनझुनवाला	तमिलनाडू विज्ञान इंजीनियरिंग
2002	श्री ज्ञानचंद जैन	दिल्ली साहित्य शिक्षा
2003	प्रो. रामगोपाल बजाज	आंध्रप्रदेश कला
2003	श्री ओमप्रकाश जैन	दिल्ली कला
2003	डा. जयपाल मित्तल	महाराष्ट्र विज्ञान इंजीनियरिंग
2003	श्री नेमी चंद जैन	दिल्ली कला
2004	प्रो. अनिल कुमार गुप्ता	गुजरात साहित्य व शिक्षा
2004	डा. रमेश चंद्र शाह	मध्यप्रदेश साहित्य व शिक्षा
2005	श्रीमती रेणु अग्रवाल	समाज सेवा
2005	श्रीमती शोभना भरतीया	दिल्ली साहित्य व शिक्षा
2006	श्री हर्ष कुमार गुप्ता	आंध्रप्रदेश विज्ञान
2006	प्रो. नरेन्द्र कुमार गुप्ता (वैज्ञानिक)	कर्नाटक विज्ञान–इंजीनियरिंग
2007	श्री राजेन्द्र गुप्ता	पंजाब उद्योग

2007	डा. शिव भगवान टीबड़ेवाल	यू.के. चिकित्सा
2007	डा. सुशीला गुप्ता	दिल्ली सामाजिक कार्य
2007	डा. नर्मदा प्रसाद गुप्ता	दिल्ली चिकित्सा
2008	डा. बीना अग्रवाल	दिल्ली साहित्य व शिक्षा
2008	श्री कैलाश चंद अग्रवाल मानव	राजस्थान सामाजिक कार्य
2008	डा. रमेश कुमार जैन	उत्तराखंड चिकित्सा
2009	डा. अशोक कुमार गुप्ता	महाराष्ट्र औषधि
2010	डा. के.के. अग्रवाल	दिल्ली औषधि
2010	डा.लक्ष्मी चंद गुप्ता	दिल्ली चिकित्सा
2011	डा. ओम प्रकाश अग्रवाल	उ.प्रदेश पुरातत्व संरक्षण
2011	श्री मामराज अग्रवाल	प.बंगाल समाज सेवा
2012	डा. लोकेश कुमार सिंघल	पंजाब विज्ञान एवं इंजीनियरिंग
2012	स्व.. मंजू भरतराम	दिल्ली समाज सेवा
2012	डा. स्वाति पीरामल	महाराष्ट्र औषधि
2013	डा.महेन्द्र अग्रवाल	उ.प्रदेश विज्ञान एवं इंजीनियरिंग
2013	डा. सुदर्शन के. अग्रवाल	दिल्ली चिकित्सा
2013	डा.विश्व कुमार गुप्ता	दिल्ली चिकित्सा
2013	श्रीमती प्रेमलता अग्रवाल	झारखंड एवरेस्ट विजय
2014	प्रो.डा.पवनराज गोयल	हरियाणा चिकित्सा
2014	प्रो.आमोद गुप्ता	हरियाणा चिकित्सा

कुछ अन्य राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त अग्रबंधु

अरविंद केजड़ीवाल : रमन मैगसेसे पुरस्कार – 2006, एमेजेंट लीडरशिप के लिए (एशिया का नोबेल पुरस्कार)

अंशु गुप्ता (गैर सरकारी संस्था गूंज के संस्थापक) : रमन मैगसेसे पुरस्कार – 2015

पद्मभूषण विष्णु प्रभाकर : ज्ञानपीठ, मूर्तिदेवी, साहित्य अकादमी, राष्ट्रीय एकता, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, श्लाका सम्मान आदि

अरविंद कुमार गोयल : अनमोल रत्न एवार्ड , राजीव गांधी एकता एवार्ड, आइफा अवार्ड

संजीव गोयनका - बंग विभूषण (बंगाल का सर्वोच्च नागरिक सम्मान)

ए के सिंघल - द इंडिया सी एफ ओ एवार्ड

डा. बी एम सिंघल - 27 वां रामेश्वर दास बिड़ला नेशनल एवार्ड

बी के अग्रवाल - विख्यात फोटोग्राफर – लाईफ टाइम एचिवमेंट एवार्ड

डा. राहुल जिंदल - आउटस्टैंडिंग अमेरिकन बाय चॉइस अवार्ड (अमेरिकी स्वास्थ्य क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए)

भारत भूषण अग्रवाल - साहित्य अकादमी पुरस्कार

मृदुला गर्ग(उपन्यासकार) - साहित्य अकादमी पुरस्कार व व्यास सम्मान से सम्मानित।

डा. अजय के. अग्रवाल - ब्लेकमॉन – मूडी आउटस्टैंडिंग प्रोफेसर एवार्ड

डा. के के अग्रवाल - विश्व हिंदी सम्मान (आधुनिक विज्ञान, चिकित्सा लेखन में अतुलनीय योगदान के लिए)

रमेश अग्रवाल (छत्तीसगढ़) हरियाली के सिपाही - गोल्ड मैंन एनवायरमेंट प्राइज (पर्यावरण के लिए विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार) इस पुरस्कार को ग्रीन नोबेल कहा जाता है।

अनिल बंसल - चौधरी चरण सिंह कृषि पुरस्कार

समाज सेवी बुलाकीदास अग्रवाल - महाराणा मेवाड़ सम्मान (मानव सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए)

विपुल गोयल - पर्यावरण रक्षा सम्मान (2 लाख 50 हजार पौधे लगाने के लिए लंदन में सम्मानित किया गया।)

डा. रामकिशोर अग्रवाल : शिक्षा रत्न एवार्ड (शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान हेतु) आपको डा. राधाकृष्णन सम्मान, गौरव श्री सम्मान, मेधा श्री सम्मान, भामाशाह सम्मान आदि अनेक सम्मान विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदान किये जा चुके हैं।

रश्मि मित्तल : मदर टेरेसा सद्भावना एवार्ड (शिक्षा के क्षेत्र में)

प्रोफेसर वीरबाला अग्रवाल : भारत निर्माण पुरस्कार (जनसंचार के क्षेत्र में)

प्रो. रामसिंह : दिल्ली केसरी

प्रोफेसर संजय मित्तल (एरोस्पेस इंजी.) : घनश्यामदास बिड़ला

पुरस्कार–2015 (विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए)

चित्रा गर्ग : राजभाषा गौरव पुरस्कार – 2015, 1999 में बाल साहित्य सम्मान व 2000 में भारतेंदु हरिशचंद्र पुरस्कार

उर्मिला रुंगटा : सिलवर एलीफंट पुरस्कार (स्काउटिंग में उल्लेखनीय उपलब्धि के लिए)

कृष्णा अग्रवाल : नेहरू साक्षरता पुरस्कार

एलिस गर्ग : महाराणा फाउंडेशन पुरस्कार (राष्ट्रीय स्तर पर नारी शिक्षा व शिशु संरक्षण में उल्लेनखनीय कार्य)

केदारनाथ अग्रवाल : सोवियत लैंड पुरस्कार, साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी संस्थान पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार आदि।

पद्मभूषण रामनारायण अग्रवाल : विज्ञान मणि पुरस्कार, मेन ऑफ द ईयर, अंतरिक्ष विज्ञान एवार्ड, चंद्रशेखर सरस्वती राष्ट्रीय गौरव आदि।

पद्मश्री डॉ. प्रेम प्रकाश गोयल : विक्रम साराभाई रिसर्च एवार्ड, एयरोनोटिकल सोसायटी ऑफ इंडिया एवार्ड, कल्पना चावला स्मारक पुरस्कार, विज्ञान गौरव, वीएएचआई रिसर्च एवार्ड, रामानुज एवार्ड, आउटस्टेडिंग अचिवमेंट एवार्ड ऑफ इसरो, महाराजा अग्रसेन राष्ट्रीय एवार्ड, ओमप्रकाश भसीन एवार्ड।

पद्मश्री डा आत्माराम : शांतिस्वरूप भटनागर, अणुव्रत पुरस्कार

पद्मभूषण डॉ. जयकृष्ण : शांतिस्वरूप भटनागर, नेचुरल डिजाइन,

मुदगल पुरस्कार आदि

डॉ. शशि भूषण सिंघल : विद्याभूषण सम्मान

पद्मभूषण हरिशंकर सिंघानिया : 2005 में स्वीडन के राजा ने आपको देश के सर्वोच्च सम्मान रायल ऑर्डर तथा लाइफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

पद्मश्री प्रो. मणीन्द्र अग्रवाल : शांतिस्वररूप भटनागर, इंफोसिस गणित व जी डी विड़ला पुरस्कार

प्रो. रामकुमार बंसल : आत्माराम पुरस्कार

डा. हर्षवर्धन : ह्यूमन केअर अवार्ड ऑफ मिलियंस से सम्मानित ।

डा. आर.के. अग्रवाल : महाराणा मेवाड़ सम्मान, भारतीय विकलांग एवार्ड, अंतरराष्ट्रीय रोटरी एवार्ड।

डा. सुभाष गर्ग : भारत एक्सीलैंसी एवार्ड

डा. विनय अग्रवाल : डा. वी.सी. राय पुरस्कार

डा. ए.के. गुप्ता : होम्योपैथी में अंतरराष्ट्रीय हैनीमेन एवार्ड

डा. एम. एल. अग्रवाल : आर सी हेर एवार्ड ऑफ एक्सीलैंसी (अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विश्व मानसिक संगठन द्वारा)

पद्श्री प्रो. डा. पवनराज गोयल : हिंदी गौरव, हिंदी रत्न, उद्योग रत्न, समाज श्री, राष्ट्र गौरव आदि।

डा. हरीश अग्रवाल (विज्ञान लेखक) : डा. आत्माराम पुरस्कार व विज्ञान भास्कर पुरस्कार।

डा. संतोष मित्तल व डा मीनू अग्रवाल : मेदिनी पुरस्कार

घमंडी लाल अग्रवाल : पं. भूप नारायण बाल साहित्य पुरस्कार (आपके बाल साहित्य पर कुरूक्षेत्र विश्व विद्यालय द्वारा शोध भी किया जा चुका है।)

राज्य सभा सांसद - अग्रबंधु

नाम	पार्टी	राज्य	वर्ष
श्री रामनाथ आनंदीलाल पोद्दार	कांग्रेस	राजस्थान	1952–54
श्री ओंकारनाथ	कांग्रेस	दिल्ली	1952–55
डा. रघुवीर	कांग्रेस	मुंबई	1952–56
बाबू ठाकुर दास (बनारस)	कांग्रेस	उत्तर प्रदेश	1952–58
श्री श्रेयांष प्रसाद जैन	कांग्रेस	महाराष्ट्र	1952–54
			1954–58
श्री अमरनाथ अग्रवाल	कांग्रेस	उत्तर प्रदेश	1952–54
			1954–60
श्री बेनीप्रसाद अग्रवाल	कांग्रेस	प. बंगाल	1952–58
श्री रामगोपाल अग्रवाल	कांग्रेस	बिहार	1952–56
			1956–62
श्री जगन्नाथ प्रसाद अग्रवाल	कांग्रेस	उत्तर प्रदेश	1952–58
			1958–64
श्री आर.सी.गुप्ता	कांग्रेस	उत्तर प्रदेश	1952–54
			1954–60
श्री मास्टर आदित्येन्द्र	कांग्रेस	राजस्थान	1954–60
श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंघका	कांग्रेस	प.बंगाल	1956–62
श्री रामगोपाल गुप्ता	निर्दलीय	उत्तर प्रदेश	1960–66
श्री रामगोपाल अग्रवाल	कांग्रेस	उत्तर प्रदेश	1952–54
			1956–62
श्री पन्नालाल सरावगी	कांग्रेस	प.बंगाल	1962–68
श्री सीताराम जयपुरिया	निर्दलीय	उत्तर प्रदेश	1962–68
			1968–74
श्री आर.के.भूवालका	निर्दलीय	पं.बंगाल	1963–68
श्री पिताम्बर दास	निर्दलीय	उत्तर प्रदेश	1968–74
श्री राजेन्द्र कुमार पोद्दार	निर्दलीय	बिहार	1968–74

			1974–80
श्री रतनलाल	कांग्रेस	पंजाब	1968–74
श्री बालकृष्ण गुप्ता	निर्दलीय	बिहार	1968–74
श्री गुरूदेव गुप्ता	कांग्रेस	मध्य प्रदेश	1960–66
			1976–82
श्री धरमचंद जैन	कांग्रेस	बिहार	1970–76
श्री बाबू बनारसीदास गुप्त	जनतापार्टी	उत्तर प्रदेश	1972–78
श्री श्यामलाल गुप्ता	कांग्रेस	बिहार	1972–78
श्री प्रेम मनोहर	जनसंघ	उत्तर प्रदेश	1968–74
श्री प्रेम मनोहर	जनतापार्टी	उत्तर प्रदेश	1977–80
श्री सतपाल मित्तल	कांग्रेस	पंजाब	1976–82
			1982–88
श्री सतपाल मित्तल	नामांकन	पंजाब	1988–92
श्री विरेन्द शाह	निर्दलीय	गुजरात	1975–81
श्री शांतिभूषण	जनतापार्टी	उत्तर प्रदेश	1977–80
श्री सुरेन्द्र मोहन	जनतापार्टी	उत्तर प्रदेश	1978–84
श्री रामलखन प्रसाद गुप्ता	BJD	बिहार	1978–84
श्री जे. के. जैन	भाजपा	मध्य प्रदेश	1980–86
श्री जे.पी.गोयल	निर्दलीय	उत्तर प्रदेश	1982–88
श्री पवन कुमार बंसल	कांग्रेस	पंजाब	1984–90
(ये 1985 से 87 तक राज्य सभा के वाईस चेयर मैन रहे)			
श्री विश्वबबंधु गुप्ता	कांग्रेस	दिल्ली	1984–90
डा. राजेन्द्र कुमार पोद्दार	CPI (M)	प.बंगाल	1985–87
			1987–93
श्री राधेश्याम मुरारका	जनतापार्टी	राजस्थान	1978–84
श्री संतोष बागड़ोदिया	कांग्रेस	राजस्थान	1986–92
			1998–04
			2004–10
श्री लखीराम अग्रवाल	भाजपा	मध्य प्रदेश	1990–96
			1996–2000

श्री लखीराम अग्रवाल	भाजपा	छत्तीसगढ़	2000–06
श्री रामदास अग्रवाल	भाजपा	राजस्थान	1990–96
			1996–02
			2006–12
डा.जितेन्द्र कुमार जैन	भाजपा	मध्यप्रदेश	1990–94
श्री कमल मुरारका	JD (S)	राजस्थान	1988–94
श्री परमेश्वर कुमार अग्रवाल	भाजपा	बिहार	1992–98
श्री परमेश्वर कुमार अग्रवाल	भाजपा	झारखंड	1998–04
श्री राजेन्द्र प्रसाद मोदी	निर्दलीय	राजस्थान	1992–98
श्री सुरेन्द्र कुमार सिंगला	कांग्रेस	पंजाब	1992–98
डा. ईश्वर चंद गुप्ता	भाजपा	उत्तर प्रदेश	1992–98
श्री नारायण प्रसाद गुप्ता	भाजपा	मध्य प्रदेश	1992–98
श्री सतीश अग्रवाल	भाजपा	राजस्थान	1994–2000
श्री संजय डालमिया	सपा	उत्तर प्रदेश	1994–98
श्री वेदप्रकाश गोयल	भाजपा	महाराष्ट्र	1996–02
			2002–08
डा. अखिलेशदास गुप्ता	कांग्रेस	उत्तर प्रदेश	2008–14
डा. अखिलेशदास गुप्ता	बसपा	उत्तर प्रदेश	1996–02
			2002–08
श्री बनारसी दास गुप्ता	कांग्रेस	हरियाणा	1996–02
श्री प्रेमचंद गुप्ता	JD	बिहार	1996–02
श्री प्रेमचंद गुप्ता	RJD	बिहार	2002–08
			2008–14
श्री प्रेमचंद गुप्ता	RJD	झारखंड	2014–20
श्री वी. पी. सिंघल	भाजपा	उत्तर प्रदेश	1998–04
प्रो. मदन मोहन अग्रवाल	निर्दलीय	उत्तर प्रदेश	2000–06
श्री राम प्रसाद गोयनका	कांग्रेस	राजस्थान	2000–06
श्री मुरली देवड़ा	कांग्रेस	महाराष्ट्र	2002–08
डा. विमल जालान	नामांकन	दिल्ली	2003–09
श्री गिरीश कुमार सांघी	कांग्रेस	आंध्र प्रदेश	2004–10

श्री बनवारी लाल कुच्छल	सपा	उत्तर प्रदेश	2006–12
श्री जय प्रकाश अग्रवाल	कांग्रेस	दिल्ली	2006–12
श्री राहुल बजाज	निर्दलीय	महाराष्ट्र	2006–10
श्री शोभना भरतीया	नामांकन	दिल्ली	2006–12
श्री नरेश अग्रवाल	बसपा	उत्तर प्रदेश	2010–12
श्री नरेश अग्रवाल	सपा	उत्तर प्रदेश	2012–18
श्री विवेक गुप्ता	एआईटीसी	प. बंगाल	2012–18
श्री पीयूष गोयल	भा.ज.पा.	महाराष्ट्र	2010–16
			2016–22
श्री विजय गोयल	भा.ज.पा.	राजस्थान	2014–20
श्री मुरली देवड़ा	कांग्रेस	महाराष्ट्र	2014–19
श्री सुभाष चंद्रा	निर्दलीय	हरियाणा	2016–22
श्री महेश पोद्दार	भा.ज.पा.	झारखंड	2016–22

लोक सभा सांसद - अग्रबंधु

नाम	पार्टी	स्थान	सत्र
श्री होती लाल अग्रवाल	कांग्रेस	झांसी, यू.पी.	01
श्री श्रीमन्ननारायण अग्रवाल	कांग्रेस	वर्धा, म.प्र.	01
श्री मुकुन्द लाल अग्रवाल	कांग्रेस	पीलीभीत बरेली, यू.पी.	01
श्री घमंडी लाल बंसल	कांग्रेस	सच्चर, पंजाब	01
श्री सालिगराम रामचंद्र भारतीय	कांग्रेस	मुंबई	01
श्री राम प्रताप गर्ग	कांग्रेस	पटियाला, पंजाब	01
श्री कृष्ण चंद्र	कांग्रेस	मथुरा, यू.पी.	01
श्री हरीराम नथानी	रामराज परिषद	भीलवाड़ा, राजस्थान	01
श्री रामेश्वनर प्रसाद नेवटिया	कांग्रेस	कुमखेरी, पूर्व शाहजहांपुर,यू.पी	01
श्री श्रीचंद सिंघल	निर्दलीय	अलीगढ़, यू.पी.	01
श्री बनारसी प्रकाश झुंनझुनवाला	कांग्रेस	भागलपुर, बिहार	01
श्री राधारमण	कांग्रेस	चांदनी चौक, दिल्ली	01
श्री मानक भाई अग्रवाल	कांग्रेस	मंदसौर, म.प्र.	01
श्री बादशाह गुप्ता	कांग्रेस	मैनपुरी, यू.पी.	01 03
श्री छेदी लाल गुप्ता	कांग्रेस	हरदोई, यू.पी.	01
श्री मूलचंद जैन	कांग्रेस	कैथल, हरियाणा	01 03
श्री रामेश्वर टाटिया	कांग्रेस	सीकर,राजस्थान	01 03
श्री काशीराम गुप्ता	निर्दलीय	अलवर,राजस्थान	03

श्री श्रीप्रिय गुप्ता	प्रजा सोशलिस्ट पार्टी	कटिहार, बिहार	03
श्री रामकृष्ण गुप्ता	कांग्रेस	हिसार, हरियाणा	01, 02, 04
श्री रामरतन गुप्ता	कांग्रेस	गोंडा, यू.पी,	03
श्री शिवचरण गुप्ता	कांग्रेस	चांदनी चौक दिल्ली	03
श्री कमल नयन बजाज	कांग्रेस	वर्धा, महाराष्ट्र	03 04
श्री एन.के.सांघी	कांग्रेस	जालोर राजस्थान	02 04 05
श्री सामन्थ Shaamnath	कांग्रेस	चांदनी चौक दिल्ली	03
श्री प्रभु दयाल हिम्मतसिंघका	कांग्रेस	गोंडा, बिहार	03 04
डा. राम मनोहर लोहिया	समयुक्ता सोशलिस्ट पार्टी	कन्नौज, यू.पी. यू.पी.	03 04
श्री श्रीचंद गोयल	जनसंघ	चंडीगढ़	04
श्री रामकृष्ण गोयल	कांग्रेस	हिसार, हरियाणा	04
श्री देवकीनंदन पटौदिया	स्वतंत्रता पार्टी	जालोर राजस्थान	04
श्री लखन लाल गुप्ता	कांग्रेस	रायपुर, म.प्र.	04
श्री कंवर लाल गुप्ता	जनता पा.	दिल्ली सदर	04 06
श्री कमला प्रसाद अग्रवाल	कांग्रेस	तेजपुर, असम	05
श्री विरेन्द्र अग्रवाल	जनसंघ	मुरादाबाद, यू.पी.	05
श्री श्रीकृष्ण मोदी	कांग्रेस	सीकर, राजस्थान	05
श्री रामनाथ गोयनका	कांग्रेस	विदिशा,म.प्र.	05
श्री श्रीकृष्ण अग्रवाल	कांग्रेस	महासमुन्द, म.प्र.	05

श्री विश्वनाथ झुंनझुनवाला	जनसंघ	चित्तौड़गढ़ राजस्थान	05
श्री हीरा लाल पटवारी	जनता	मंगलदोई आसाम	06
श्री कैलाश प्रकाश		मेरठ,यू.पी.	06
श्री भारत भूषण	जनता	नैनीताल, यू.पी.	06
श्री श्याम सुंदर गुप्ता	जनता	ठंनी बाउच बिहार	06
श्री कृष्ण कुमार गोयल	भा.ज.पा.	कोटा	06
		राजस्थान	07
श्री सतीश अग्रवाल	भा.ज.पा.	जयपुर	06
		राजस्थान	07
श्री बाबू बनारसी दास गुप्त	कांग्रेस	बुलंद शहर, यू.पी.	06
श्री भीकूराम जैन	कांग्रेस	चांदनी चौक दिल्ली	06
श्री विष्णु मोदी	कांग्रेस	अजमेर, राजस्थान	08
श्रीमती प्रभावती गुप्ता	कांग्रेस	मोतीहारी, बिहार	08
श्री जयप्रकाश अग्रवाल	कांग्रेस	चांदनी चौक	08
		दिल्ली	09
			11, 13
श्री जनकराज गुप्ता	कांग्रेस आई	जम्मू	08 09
श्री संतोष भारतीय	जनता दल	फरूखाबाद,यू.पी.	09
श्री धर्मपाल सिंह गुप्ता	भा.ज.पा.	राजनंद गांव म.प्र.	09
श्री मुरली देवड़ा	कांग्रेस	मुंबई	08
			09, 10, 12
श्री संत राम सिंगला	निर्दलीय	पटियाला, पंजाब	10
श्री ओम प्रकाश जिंदल	निर्दलीय	कुरूक्षेत्र	11
		हरियाणा	12, 13

श्री चमन लाल गुप्ता	भा.ज.पा.	उधमपुर, जम्मू	11 12, 13
श्री धीरेन्द्र अग्रवाल	आर.जे.डी.	छपरा,	11
	भा.ज.पा.	बिहार	12, 14
श्री विजय गोयल	भा.ज.पा.	दिल्ली	11, 12, 13
श्री सत्यपाल जैन	भा.ज.पा.	चंडीगढ़	11, 12
श्री पवन बंसल	कांग्रेस	चंडीगढ़	13
		तीन बार	15
श्री नवीन जिंदल	कांग्रेस	कुरूक्षेत्र	13
		हरियाणा	14, 15
श्री मिलिन्द देवड़ा	कांग्रेस	मुंबई	13
		दो बार	15
श्री प्रवीण सिंह ऐरन	कांग्रेस	बरेली	13, 14, 15
श्री राजेन्द्र अग्रवाल	भा.ज.पा.	मेरठ यू.पी.	13
श्री विजेन्द्र सिंगला	कांग्रेस	संगरूर, पंजाब	13
(इनके पिता श्री संतराम सिंगला, एम.पी.संगरूर, राष्ट्रपति श्री ज्ञानी जैल सिंह के पर्सनल सैकेट्री थे।)			
डा. हर्ष वर्धन	भा.ज.पा.	चांदनी चौक	16
श्री राजेन्द्र अग्रवाल	भा.ज.पा.	मेरठ, यू.पी.	16
श्री सुधीर गुप्ता	भा.ज.पा.	मंदसोर, म.प्र.	16

अग्रसेन - अग्रोहा - अग्रवाल पर प्रकाशित साहित्य

यह अग्रवाल समाज का सौभाग्य है कि साहित्य की दृष्टि से यह समृद्धशाली कौम है।
जितना इस समाज पर लिखा गया और किसी पर नहीं।

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक / संपादक	प्रकाशक
1.	अग्रवालों की उत्पत्ति	बाबू भारतेंदु हरिशचंद्र	
2.	अग्रवाल इतिहास परिचय	बालचंद्र मोदी	वणिक प्रेस, 180 हरिसन रोड, कोलकाता
3	अग्रसेन और अग्रवाल (सप्रमाण)	वैद्य कृपाराम अग्रवाल	
4	अग्रवाल इतिहास भाग – 1	चुन्नी लाल अग्रवाल, कलकत्ता	
5	अग्रवालों की उत्पत्ति	बाल चंद मोदी	
6	अग्रवाल जाति का इतिहास	रामचंद्र गुप्त, पटियाला	
7	अग्रवाल वंशावली (उर्दू)	सुमेर चंद अग्रवाल, भटिंडा	
8	अग्रवाल इतिहास	बिहारी लाल जैन अग्रवाल सी.टी.	बाराबंकी, अवध, उत्तर प्रदेश तथा चैतन्य प्रेस बिजनोर– उ.प्र.
9	अग्रवाल जाति का प्रमाणिक इतिहास	गुलाब चंद ऐरन	हिंदी साहित्य सदन, इंदौर राज्य
10	अग्रवाल जाति का विकास	परमेश्वरी लाल गुप्त	श्री काशी पेपर स्टोर्स, बुलानाला काशी –उ.प्र.
11	अग्रसेन अग्रोहा अग्रवाल	डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल	अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, नई दिल्ली

12	अग्रोत्कान्वय (अग्रवाल वैश्य जाति का इतिहास)	निरंजन लाल गौतम	भगवती प्रसाद खेतान ट्रस्ट , दिल्ली तथा अग्रोहा ज्योति कार्यालय, 7 / 28 ज्वाला नगर, शाहदरा–दिल्ली–32
13	अग्रवाल जगत का इतिहास	अग्रसेन नवयुवक मंडल, जोधपुर	
14	महाराजा अग्रसेन का जीवन चरित्र	श्री गिरीराज प्रसाद मित्तल	द्वारा–श्री गोपाल जनरल स्टोर, डेम्प रोड, हिंडौन सिटी तथा– 38 / 46, अग्रोदक मार्ग, मानसरोवर, जयपुर
15	महाराजा अग्रसेन (अग्रवाल समाज के प्रर्वतक)	सुरेन्द्र प्रताप गर्ग	गुप्ता एंड कंपनी, दिल्ली–6 गुप्ता पॉकेट बुक्स, रामजस रोड, नई दिल्ली–05
16	अग्रवाल जाति का प्राचीन इतिहास	सत्यकेतु विद्यालंकार	सरस्वती सदन, ए–1 / 32, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली–110029
17	अग्रोहा की कहानी अग्रोहा दर्शन (अग्रवाल जाति का संक्षिप्त ऐतिहासिक परिचय)	हरपतराय टाटिया व डा.चंपालाल गुप्त	
18	अग्रवाल इतिहास चिंतनिका	कालीचरण केशान	प्रकाशक – रामप्रसाद सर्राफ, श्री अग्रसेन स्मृति भवन, पी–30–ए, कलाकार स्ट्रीट, कोलकाता
19	महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल समाज	निरंजन लाल गौतम	अग्रोहा ज्योति कार्यालय, 7 / 28, ज्वाला नगर, शाहदरा, दिल्ली–110032
20	अग्रवालों की उत्पत्ति	पं. परमानंद जैन शास्त्री	अग्रवंश शोध संस्थान, 28,

			बाजार लेन, बंगाली मार्केट, नई दिल्ली –01
21	जीवन चरित्र–महाराजा अग्रसेन	सुशील सरावगी,	अग्रवाल सुधार समिति, राजगढ़ पो. सादुलपुर , जिला – चुरू, राजस्थान
22	महामानव श्री अग्रसेन	रामगोपाल बेदिल	अग्रविश्व संस्थान, दिल्ली
23	इतिहास अग्रोहा अग्रवाल वैश्य वंश	चौधरी वृंदावन कानूनगो	अ.भ.महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान,जींद – हरियाणा
24	अग्रवाल इतिहास (शोध ग्रंथ) (180 वैश्य घटकों का सप्रमाण विवरण)	चौधरी वृंदावन कानूनगो	अ.भा.महाराजा अग्रसेन वंश इतिहास शोध संस्थान,जींद – हरियाणा
25	अग्रवंश प्रकाश	चौधरी वृंदावन कानुनगो	गुप्ता बुक सेलर, मैन बाजार, जींद,
26	कथा श्री महाराजा अग्रसेन जी	त्रिलोक गोयल, अजमेर	प्रकाशक – रामलाल अग्रवाल, अग्रजीवन मासिक, गोपालजी का रास्ता, जयपुर
27	महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल समाज	शिव प्रकाश गुप्ता	श्याम प्रेस, डिप्टी गंज, सदर बाजार, दिल्ली–110006
28	अग्रवाल जाति का संक्षिप्त इतिहास	शिवशंकर गर्ग– सीकर, राजस्थान	अग्रवाल सेवा समाज, पी–3, मदन चटर्जी लेन, कलकत्ता–700007
29	भारत के अग्रवाल परिवार	रामेश्वरदास गुप्त 'सुमन'	अग्रवाल निर्देशिका समिति, डी–36, साउथ एक्सटेंशन, भाग एक, नई दिल्ली
30	दिल्ली के अग्रवाल परिवार भाग–1, 2 व 3	रामेश्वरदास गुप्त 'सुमन'	9544, बिहारी पुरा, माता गली, मथुरा–01

31	अग्रचेतना		अग्रचेतना संघ, मोहिनी विला, रेम्बल रोड, अजमेर
32	तीर्थ अग्रोहा	राजकुमार गुप्ता	राजा पाकेट बुक्स, 330/1, बुरादी दिल्ली 110084
33	The Aggarwals (A Socio economic Study)	Badlu Ram Gupta	एस.चांद एंड कं., रामनगर, नई दिल्ली – 110005
34	अग्रोहा एक ऐतिहासिक धरोहर	डा.चंपालाल गुप्त	अग्रोहा विकास ट्रस्ट
35	अग्रोहा धाम के निर्माण की कहानी चित्रों की जबानी	रामेश्वर दास गुप्ता	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
36	अग्रोहा दर्शन	हरपत राय टाटिया	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
37	महाराजा अग्रसेन–जीवन चरित्र	सुरेन्द्र प्रताप गर्ग	गुप्ता एंड कंपनी, लाल कटरे के अंदर, 483 खारी बावली , दिल्ली–6
38	वैश्य अग्रवाल एक परिचय	श्री बृजलाल गुप्ता	श्रीमती सरती देवी अग्रवाल चेरिटेबल ट्रस्ट, 45/5 सी , ईस्ट आजाद नगर, दिल्ली
39	अग्रसेन दर्पण	अर्जुन कुमार	अ.भा.युवा अग्रवाल सम्मेलन
40	अग्रवाल जाति का इतिहास (भाग 1 व 2)	श्री चंद्रराज भंडारी	1–के–एस, जी एम शिक्षा समिति, 307 क्रिएटिव इंडस्ट्रीयल इस्टेट, एन एम जोशी मार्ग, मुंबई –400011
41	अग्रवाल 18 गौत्र व्यवस्था (बीसा, दस्सा विवरण)	सुरेन्द्र प्रताप गर्ग	गुप्ता एंड कंपनी, 483 खारी बावली, दिल्ली–6
42	वैश्य गौरव–महाराजा अग्रसेन	अर्जुन कुमार	राष्ट्रीय वैश्य परिषद, 8233, नई अनाज

			मंडी, दिल्ली–6
43	वृहद अग्र ग्रंथ	ज्वाला प्रसाद अनिल	अखिल भारतीय वैश्य महासभा, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़– उ.प्र.
44	महाराजा अग्रसेन व्यक्तित्व एवं कृतित्व	डा. स्वराज्यमणि अग्रवाल	अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, नई दिल्ली
45	श्री अग्रभागवत	राम गोपाल 'बेदिल'	जनकल्याण पब्लिकेश एंड मीडिया, प्रा.लि. 2/12,मलाड को.ऑ. हाउसिंग सोसायटी, पोद्दार पार्क, पोद्दार रोड, मलाड ईस्ट मुंबई– 400097
46	Children's Book On Agrasen Agroha Agarwal	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली
47	बाल अग्रमंजूषा भाग–।	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली
48	बाल अग्रमंजूषा भाग–।।	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली
49	बाल अग्रमंजूषा भाग–।।।	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली
50	महाराजा अग्रसेन और अग्र भागवत	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली
51	परम प्रतापी पितामह महाराजा अग्रसेन (गौरव गाथा)	पुष्कर केडिया व डा. अरूण प्रकाश अवस्थी	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, क्षेत्रीय समिति, कोलकाता

52	परम प्रतापी पितामह महाराजा अग्रसेन गौरव गाथा	पुष्कर लाल केडिया	अग्रोहा विकास ट्रस्ट,क्षेत्रीय समिति कोलकाता
53	अग्रवंश कर्तार का युग	ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' (बाडमेर–राजस्थान)	बाबाजी स्क्रीन प्रिंटर्स, बाडमेर
54	अग्रवाल समाज एक अध्ययन	ओमप्रकाश अग्रवाल	युवा अग्रवाल ट्रस्ट, 8233 रानी झांसी मार्ग, फिल्मीस्तान, दिल्ली
55	अग्रसेन–अग्रोह–अग्रवाल (नवीन संस्करण–शोध सहित)	डा.स्वराज्यमणि अग्रवाल	अग्रोहा विकास ट्रस्ट बोर्ड, अग्रोहा
56	महाराजा अग्रसेन	श्री समीर	श्री अग्रवाल सभा, 28, आदियप्पा जायकन स्ट्रीट, चैन्नई
57	अग्रोहा की कहानी चित्रों की जुबानी		अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
58	श्री अग्रसेन भागवत	आचार्य विष्णुदास	अग्रसेन भागवत ट्रस्ट,अग्रमहालक्ष्मी मंदिर, बड़ा पार्क, बालकेश्वर, आगरा
59	अग्रवाल समाज का गौरवपूर्ण इतिहास	डा.चंपालाल गुप्त	अग्रवाल साहित्य सदन, गोल बाजार, श्री गंगानगर –राजस्थान
60	महाराजा अग्रसेन–चित्रमय कॉमिक्स के रूप में		
61	अग्रवाल जाति का ऐतिहासिक परिचय	डा.चंपालाल गुप्त	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, श्री गंगानगर – राजस्थान

62	अग्रवंश परिचय – अग्रसेन अग्रोहा अग्रवाल	अर्जुन कुमार	अ.भा. युवा अग्रवाल सम्मेलन नइ दिल्ली
63	अग्रवंश	रामचंद्र गुप्त	
64	राजा अग्रसेन का जीवन चरित्र	लक्ष्मी राम शिवराम	
65	श्री विष्णु अग्रवंश पुराण	गुरू ब्रह्मानंद	दरबार कार्यालय, हिंसार
66	अग्रवाल इतिहास ग्रंथ समुच्चय	मनुदत्त शर्मा	अग्रवाल इतिहास पंचावली का 39 वां अंक ज्ञानोदय कार्यालय, हिंसार – हरियाणा
67	अग्रवाल जाति के इतिहास की खोज	लक्ष्मीशंकर बिंदल	
68	अग्रवाल वैश्योत्कर्ष	पं. हीरालाल शास्त्री	खेमराज श्रीकृष्णदास, वैंकटेश प्रेस, मुंबई
69	महाराजा अग्रसेन गाथा– कॉमिक्स के रूप में		अग्रोहा विकास ट्रस्ट
70	महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल समाज	विशम्भर दयाल गुप्त	
71	महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल	मुरारी लाल अग्रवाल	छत्ता बाजार, मथुरा
72	अग्रवाल जाति	मुरारी लाल अग्रवाल	
73	अग्रवाल अंतर्ज्वाला	ब्रिज भुवन	
74	गिंदोड़िया अग्रवाल	लक्ष्मीशंकर मित्तल	
75	अग्रवाल उत्पत्ति	लाला रामचंद्र	अग्रवाल सभा, अजमेर
76	अग्रवाल वंश कौमुदी	सुखानंद मालवी	

77	जीवनी अग्रसेन महाराज	मुंशी रघुवीर सिंह	
78	वैश्य अग्रवाल इतिहास	अग्रवाल राजवंश सभा, मेरठ	
79	अग्रवाल जाति का संक्षिप्त इतिहास	रामपाल अग्रवाल – नूतन	
80	अग्रवंश इतिहास	सत्यनारायण प्रसाद अग्रवाल – मल्लू बाबू	
81	महाराजा अग्रसेन और अग्रवाल समाज	शिवप्रकाश गुप्त	दिल्ली प्रादेशिक अग्रवाल सम्मेलन
82	अग्रवाल जाति का इतिहास	चंपतराय एडवोकेट एम ए.	स्व. चंद्र मोहन गुप्त, 21/23, शक्ति नगर,दिल्ली
83	अग्रोहा	राजाराम शास्त्री	लोकमंच प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली–110002
84	खंडहर बोल रहे हैं	त्रिलोक गोयल, अजमेर	श्री अग्रबंधु कार्यालय, कोकायता मार्केट, प्रयाग नारायण मार्ग, रावत पाडा, आगरा–3
85	पात्र जाग उठे	त्रिलोक गोयल, अजमेर	श्री अग्रबंधु कार्यालय, कोकायता मार्केट, प्रयागनारायण मार्ग, रावत पाडा, आगरा–3
86	अग्रवाल मीमांसा	लाला मुंशीराम	मार्तण्ड प्रेस, दिल्ली
87	महाराजा अग्रसेन	प्रो.श्याम सुंदर अग्रवाल 'सुमन'	9544, बिहारी पुरा, माता गली, मथुरा – 01
88	महाराजा अग्रसेन	मुख्तिहार हालात	जाफर प्रेस, इलाहबाद
89	महाराजा श्री अग्रसेन	अनूप सिंह	
90	अग्रवाल जाति का इतिहास	तुलसीराम कंसल	
91	अग्रवाल कुल प्रर्वतक	सत्यदेव विद्यालंकार	

	महाराजा अग्रसेन		
92	वैश्य अग्रवाल राजवंशी समाज का इतिहास	निहालचंद राजवंशी	राजवंश सभा – मेरठ
93	अग्रवंश इतिहास	मक्खनलाल वरणवाल	चौक सुल्तार– उ.प्र.
94	अग्रदर्शन व अग्रोहा दर्शन	डा. विष्णुचंद गुप्ता	1592/11, त्रिनगर, नई दिल्ली – 110035
95	बंबई की अग्रवाल विभूतियां	रामशरण अग्रवाल	26–बी, भास्कर लेन, मुंबई – 02
96	छत्तीसगढ़ अग्रवाल जति का इतिहास	डा. चंद्र कुमार अग्रवाल	छत्तीस गढ़ अग्रवाल जाति प्रकाशन समिति, गीता बुक डिपो, बैरन बाजार, रायपुर– छत्तीस गढ़
97	हम अग्रवाल हैं	डा.मनोहर लाल गोयल	बाबू बोहरा, राम टेकरी रोड, जुगसलाई, जमशेदपुर –06
98	अग्रगंथ	देवेन्द्र कुमार गुप्ता	
99	अग्रवाल वैश्योत्कर्ष	हीरालाल शास्त्री	श्री खेमराज श्रीकृष्ण, लक्ष्मी वेंक्टेश्वर प्रेस, मुंबई–04
100	वैश्यों का उद्‌भव और विकास	रमेश नील कमल	
101	महाराजा अग्रसेन और वैश्य अग्रवाल	जगन्नाथ सिंघल, मुरादाबाद	
102	जीवनी महाराजा अग्रसेन	मुंशी सुखवीर सिंह	
103	संक्षेप वृतांत अग्रसेन	मुंशी अनूप सिंह	
104	महाराजा अग्रसेन	सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल	
105	युग पुरूष अग्रसेन	पूरन चंद अग्रवाल	मनोरम प्रकाशन–8, धोलपुर हाउस, महात्मा गांधी मार्ग, आगरा– उ.प्र.

106	अग्र ग्रंथ	कदीमी अग्रवाल सभा, मुजफ्फर नगर–100 वर्ष	देवेन्द्र कुमार गुप्ता, 464/134, दक्षिणी सिविल लाईन, मुजफ्फर नगर – उ.प्र.– 251001
107	पूज्य बाबा श्री अग्रसेन	सलिग राम अग्रवाल	खारियार रोड, उड़ीसा – 766104
108	अग्रवंश कौमुदी	सुखानंद मालवी	
109	अग्रवाल कथा	डा.मनोहर लाल गोयल	गोयल भवन, विष्टुपुर, जमशेदपुर
110	जाति भास्कर	ज्वाला प्रसाद मिश्र	

काव्यरूप में अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल महिमा गान

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक / संपादक	प्रकाशक
1.	अग्रकाव्य	विष्णु गुप्त व शिव प्रकाश गुप्त	श्री अग्रसेन समिति, दिल्ली प्रकाशक–राधाकृष्ण गुप्ता, मॉडल बस्ती, नई दिल्ली
2	अग्रगान	डा. विष्णुचंद्र गुप्त	श्री अग्रसेन समिति,1958,रानी बाग, दिल्ली–34
3	अग्रकुल कलश (खंड काव्य–पद्यात्मक गौरव गाथा श्री श्री 1008 महाराजाधिराज श्री अग्रसेन की)	रामकिशोर अग्रवाल, मनोज	स्टूडेण्टस् बुक स्टोर्स, अंधेर देव, जबलपुर फोन नं– 2311922
4	अग्रोहाधाम कविताओं में	डा.कमलकिशोर गोयनका	अग्रोहा विकास ट्रस्ट
5	फूंको श्शंख समाज में	त्रिलोक गोयल, अजमेर	अग्रसेन साहित्यिकी, बंसत विहार, कचहारी रोड, अजमेर – राजस्थान
6	अग्र काव्य संग्रह	रामलाल अग्रवाल	महाराजा अग्रसेन स्मृति संस्थान,सी 27, सीकर हाउस, चांदपोल बाहर, जयपुर
7	वैश्य जाति की गौरव गाथा	शांति स्वरूप गुप्ता के.220,शास्त्री नगर, मेरठ	अ.भा.वैश्य महासभा, कोठी हरविलास, जेल के सामने , बुलंदशहर –यू.पी.
8	अग्र काव्य	रामलाल अग्रवाल	अग्रणी शोध एवं प्रकाशन केंद्र,सी 27, सीकर हाउस चांदपोल बाहर, जयपुर
9	अग्रसेन वंदना	हाईकू सम्राट–श्री जय भगवान गुप्त ''राकेश''	संपादक – अमर साहनी, प्रकाशक – स्वर्ण जयंती प्रतिबिंब, 1 एफ–40, पी पी, एन आई टी, फरीदाबाद, हरियाणा

10	महाराजा अग्रसेन (महाकाव्य)	डा.रामकृष्ण शर्मा	आदर्श प्रकाशन–भरतपुर
11	अग्रपथी खंडकाव्य	रमेश अधीर, आगरा	बी एस शर्मा ब्रदर्स, पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, 28 मंगलम विहार, सिकंदरा–बोदला रोड, आगरा–07
12	विष्णु अग्रसेन अवतारी (काव्यांजली)	ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप (बाडमेर–राजस्थान)	बाबाजी स्क्रीन प्रिंटर्स बाडमेर
13	अंशावतार आदि अग्र (काव्यांजली)	ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' (बाडमेर–राजस्थान)	बाबाजी स्क्रीन प्रिंटर्स, बाडमेर
14	अग्रायणम्–महाराजा अग्रसेन जी की अश्टादश तरंगीय	बाबू लाल अग्रवाल	प्रकाशक – अगसेन सेवा आरश्र पब्लिक ट्रस्ट, महालक्ष्मी मंदिर, सरानी दवाजा बाहर, छतरपुर म.प्र.
15	अग्र – काव्य धारा	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जीपी–32, मौर्या एनक्लेव, पीतमपुरा ,नई दिल्ली
16	अग्रवाल जाति का इतिहास (काव्य)	तुलसी राम कंसल	
17	अग्र पुराण की कथा	भट्ट घनश्याम और तुलाराम अग्रवाल, इंदौर	भाटों के गीतों व पुराण से संबधित
18	अग्र गीतिका	डा. विष्णुचंद्र गुप्त	श्री अग्रसेन समिति,1958,रानी बाग, दिल्ली–34 तथा 1910 / 145, गणेशपुरा, ए, त्रिनगर, दिल्ली–35
19	श्री अग्रसेन गीतावली	श्री बालकृष्ण गर्ग ''बालक''	अग्रवाल उच्च मा. विद्यालय, अजमेर
20	अग्रकथा (महाकाव्य)	चिरंजी लाल	अग्रवाल परिषद–रजि.,, सेक्टर–8 / 867 आर के पुरम, नई दिल्ली– 110022
21	अग्रसेन गीतावली	बालकृष्ण गर्ग – अजमेर	

नाटक

1	महाराजा अग्रसेन	त्रिलोक गोयल, अजमेर	अग्रगामी मासिक, जयपुर
2	अग्रचेता–अग्रसेन (महान् सामाजिक, ऐतिहासिक एवं पौराणिक नाटक)	रघुवीर शरण, सरल	शिव शिक्षा निकेतन, गंगापुर सिटी
3	एक रूपैया अर एक ईंट	आचार्य महावीर प्रसाद विध्यावाचस्पति	317/7,शहरी सम्पदा, करनाल–हरियाणा

उपन्यास

1	एक ईंट एक रूपया	इंद्रा स्वप्न	पारूल प्रकाशन, 889/58, त्रिनगर दिल्ली
2	पहला उपन्यास–अग्रसेन माधवी	डा. विष्णु पंकज	अग्रचिंतन प्रकाशन, नागपुर
3	राष्ट्रपुरूष–महाराजा अग्रसेन	आर्चाय रामरंग	गिरीश बंसल, 144/3, व्यापार नगर, मेरठ, 250002
4	बोलता अग्रोहा	रमेश अधीर	अजय पुस्तक मंदिर, 21, नालनंदा एन्क्लेव, शास्त्रीपुरम, आगरा

कहानी

1	एक ईंट एक रूपया (कहानी संग्रह)	ओमप्रकाश गर्ग 'मधुप' (बाडमेर–राजस्थान) तथा अग्रोहा विकास ट्रस्ट	
2	कथाएं जो अपने आंगन में उगीं	त्रिलोक गोयल, अजमेर	अग्रवाल विकास परिषद, जोधपुर

3	पौराणिक कथाओं में अग्रसेन अग्रोहा अग्रवाल	त्रिलोक गोयल, अजमेर	अग्रवाल सेवा समाज, कलकत्ता
4	खंडहर बोल रहे हैं – कथा महाराजा अग्रसेन की	त्रिलोक गोयल, अजमेर	
5	अग्रोहा की कहानी	अग्रवाल सभा, बीकानेर	

प्रेरणा स्त्रोत अग्र विभूतियां

1.	प्रेरणा स्त्रोत–अग्रवाल विभूतियां	राजेन्द्र प्रसाद गर्ग	अग्रवाल सेवा समाज, कलकत्ता
2	सैनानी से जननायक – बनारसी दास गुप्त	डा. निरंजन सिंह रोहिला	अग्रसेन सेवानिधि, करोल बाग, नई दिल्ली
3	जनसेवक श्री बनारसी दास गुप्त	ब्रजनारायण अग्रवाल	अ.भा.अग्रवाल सम्मेलन
4	वीरता की विरासत	केप्टन कमल किशोर बंसल	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
5	आप बीती	रामेश्वरदास गुप्त	गुप्ता प्रकाशन, डी 35, साउथ एक्सटेंशन, भाग एक, नई दिल्ली
6	लाला हरदेव सहाय – एक निर्भीक योद्धा	मदन मोहन जुनेजा	लाला हरदेव सहाय स्मारक समिति सर्वोदय भवन, हिसार
7	लाला लाजपतराय	डा. चंपालाल गुप्त	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
8	हनुमान प्रसार पोद्दार	शिव कुमार गोयल	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
9	डा. राम मनोहर लोहिया	सत्यवीर अग्रवाल	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
10	लाला देशबंधु गुप्ता	प्रो. पी. पी. सिंगला	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा
11	भक्त रामशरणदास – सनातन धर्म के पुरोधा	डा सुरेन्द्र शर्मा 'सुशील'	श्री तुलसी मंडल, गाजियाबाद
12	डा.विष्णु चंद्र गुप्त – व्यक्तित्व एवं कृतित्व		प्रकाशक– श्री अग्रसेन समिति दिल्ली, 1958– मुल्तानी मौहल्ला, रानीबाग, दिल्ली
13	सेठ जमना लाल बजाज	डा.स्वराजमणि अग्रवाल	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा

14	भारत के गौरव	हरपत राय टाटिया	अग्रोहा विकास ट्रस्ट इकाई श्री गंगानगर
15	महान् अग्र विभूतियां (अग्रवाल जीवनी वृहद ग्रंथ)	चांद बिहारी लाल गोयल, साहित्य रत्न	अग्रवाल सेवा योजना, राजस्थान, जयपुर
16	अग्र गौरव	हरपत राय टाटिया	अग्रोहा विकास ट्रस्ट इकाई श्री गंगानगर
17	स्वतंत्रता सैनानी रामचरण अग्रवाल	डा.भरत झा	राकेश प्रकाशन, सी – 114, कात्यानी अपार्टमेंट, सेक्टर – 6, द्वारका, नई दिल्ली
18	राष्ट्र की वैश्य विभूतियां	सूवेसिंह गुप्ता एवं चंद्रमोहन गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली –34
19	राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग–1	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली –34
20	राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग–2	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली –34
21	अग्रगौरव संस्थापक – मास्टर लक्ष्मी नारायण	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली –34
22	राष्ट्र के वैश्य रत्न भाग–3	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, जी पी – 32, मौया एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली –34
23	कर्मयोगी बालेश्वर अग्रवाल– व्यक्ति और विचार	नारायण कुमार व गोपाल अरोड़ा	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
24	महापुरूषों के अनमोल प्रसंग	सुबेसिंह गुप्ता	सूर्य भारती प्रकाशन, नई सड़क,दिल्ली– 110006

25	वैश्य शिरोमणि	सुखवीर सिंह दलाल	सूर्य भारती प्रकाशन,नई सड़क, दिल्ली 110006
26	लाला देशबंधु गुप्ता	गोपाल शरण गर्ग	श्री अग्रसेन फाउंडेशन, 83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली – 110005
27	मास्टर लक्ष्मी नारायण अग्रवाल	गोपाल शरण गर्ग	श्री अग्रसेन फाउंडेशन, 83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली – 110005
28	पंजाब केसरी लाला लाजपत राय	गोपाल शरण गर्ग	श्री अग्रसेन फाउंडेशन, 83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली – 110005
29	सेठ जमना लाल बजाज	गोपाल शरण गर्ग	श्री अग्रसेन फाउंडेशन, 83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली – 110005
30	महाराजा अग्रसेन और अग्रोहा	गोपाल शरण गर्ग	श्री अग्रसेन फाउंडेशन, 83, मॉडल बस्ती, करोल बाग, नई दिल्ली – 110005
31	कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी		दैनिक नवज्योति, अजमेर, राजस्थान
32	Rt.Hon'ble Sir Shadi Lal Kt. P.C. K.L.Gauba		Biographical Sketch

विविध ... अन्य विधाओं में लिखी गई पुस्तकें

क्र.	पुस्तक का नाम	लेखक / संपादक	प्रकाशक
1	देश के इतिहास में मारवाड़ी जाति का स्थान	बालचंद मोदी	
2	वैश्य समुदाय का इतिहास	माहौर भूषण प्रो.डा. रामेश्वर दयाल गुप्त सिद्धांत शास्त्री	रामेश्वर कुंज नं–27 / 1, आर्य नगर निकट आय वानप्रस्थाश्रम, पोस्ट ज्वालापुर, जिला –हरिद्वार – 249407
3.	अग्रचेतना		अग्रचेतना संघ, अजमेर
4	अग्रोहा से इतिहास मौन क्यों?	प्रेम नारायण गुप्ता, भोपाल	प्रकाशक – लेखक
5	वैश्य जाति का गौरवमयी इतिहास	शांति स्वरूप गुप्त	के–220,शास्त्री नगर, मेरठ
6	शीला माता का जीवन परिचय	शिव शंकर गर्ग, सीकर	अग्रोहा विकास संस्थान, मुबई
7	अग्रचिंतन धारा भाग– 1	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, नई दिल्ली
8	अग्रोहा धाम अंखिया कहिन (यात्रा वृतांत)	विधि श्री पवन चौधरी (गोयल गौत्री अग्रवाल)	विधि सेवा, नई दिल्ली
9	अग्रचिंतन धारा – भाग– 2	सूवेसिंह गुप्ता	पंचमधाम प्रकाशन ट्रस्ट, नई दिल्ली
10	अग्रसेन चालीसा	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा	
11	अग्रवंश परिचय	अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा	

12	मैं अपने मारवाड़ी समाज को प्यार करता हूँ। 10 खंडों में	जैमिनी कोशिक बरूआ	कमरा नं.121, माधो भवन, 116/1, महात्मा गांधी मार्ग, कोलकाता –7
13	मारवाड़ी समाज	डा. डी के टेकनोत	
14	मारवाड़ी–व्यवसाय से उद्योग में	टामस ए. टिम्बर्ग	राधाकृष्ण प्रकाशन, 2 अंसारी रोड, दरिया गंज – नई दिल्ली
15	दी मारवाड़ीज – ए स्टडी ग्रुप ऑफ ट्रेडिंग कास्टस्	मिलमान हेरिमन–ए	शोध प्रबंध – यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया– अमेरिका
16	मारवाड़ी गौरव	सत्यदेव विद्यालंकार	हनुमान रोड – नई दिल्ली
17	मारवाड़ी बंधुओं का इतिहास	मुरलीधर सारस्वत	इतिहास प्रकाशन समिति, चुरू – राजस्थान
18	मारवाड़ी व्यापारी	डा.गिरिजाशंकर	कृष्ण जनसेवक एंड कं.दाउजी मंदिर भवन, बीकानेर–राजस्थान– 304001
19	बंबई के मारवाड़ी समाज का परिचय	जयदेव सिंघानिया	भारती मंदिर, 124, गायवाड़ी, मुंबई – 02
20	स्वतंत्रता आंदोलन में मारवाड़ी समाज की आहूतियां	राधाकृष्ण कानोडिया	
21	बीकानेर द लैंड ऑफ मारवाड़ीज	सी. विश्वास	
22	उड़ीसा और मारवाड़ी समाज	भैराज नंदवानी – कटक	
23	जाति अन्वेषण	छोटेलाल शर्मा	फुलेरा–राजस्थान, (हिंदु कास्ट्स एंड क्रीडस्)
24	प्रावैदिक वैश्य समाज का इतिहास		महावर इलैक्ट्रिक प्रेस अलवर, राजस्थान
25	वैश्य दर्पण	रमेश नीलकमल	संजय प्रकाशन – पटना, 803305

26	वैश्य इन इंडिया– प्रथम भाग	डा. के.सी.गुप्ता	ऑल इंडिया वैश्य समाज, 4–7–324, इसामिया बाजार, हैदराबाद
27	वैश्य वर्ण की गाथा	हनुमान शर्मा	वैंकटेश्वर प्रेस , मुंबई
28	प्रोग्रेसिव जैन्स ऑफ इंडिया	सतीश कुमार जैन	15, ई – वैयर्ड रोड, नई दिल्ली
29	विभिन्न वैश्य समुदायों का योगदान	विष्णु पंकज	
30	शेखावाटी व्यक्ति वैशिष्टय	ताराचंद निर्विरोध	
33	गुटगुटिया परिवार का इतिहास	हरिराम गुटगुटिया	गुटगुटिया सदन, बोरिंग रोड, पटना – बिहार
34	केडिया जाति का इतिहास	हरसुखराम छावसरिया	केडिया जातिय सहायक सभा, 129, हरिसन रोड, कोलकाता

विशेष जानकारी

महाराजा अग्रसेन तार विभाग की शुभकामना सूची में – अग्रकुल प्रवर्तक, समाजवाद के प्रणेता महाराजा श्री अग्रसेन जी के नाम को केंद्रीय संचार मंत्रालय दिल्ली ने कई वर्ष पहले ही शुभकामना सूची में मान्यता प्रदान कर दी थी। तार विभाग द्वारा स्वीकृत दोनों लाइनें निम्नानुसार हैं –

कोड नं. 43 (क) - छत्रपति महाराजा श्री अग्रसेन जी की जयंती पर हार्दिक शुभकामनाएं ।

कोड नं. 43 (ख) - आयोजित कार्यक्रम की सफलता के लिए महाराजा श्री अग्रसेन के चरणों में प्रार्थना करता हूं ।

महाराजा अग्रसेन पर बनी फिल्म

पहले इसकी बड़ी कैसिट बनी थी जो मार्केट से कैसिट प्लेयर (वीसीआर) किराए पर लाकर दिखाई जाती थी। अखिल भारतीय अग्रवाल सममेलन ने यह बड़ी कैसिट कुछ संस्थाओं को दी थी। विवरण इस प्रकार है –

भारत सरकार – केंद्रीय फिल्म प्रसारण बोर्ड

महाराजा अग्रसेन हिंदी – रंगीन, प्रसारण– दिनांक 28.8.1997, 120 मिनट की है।

राजऋषि फिल्मस् द्वारा प्रस्तुत की गई।

अग्रवाल फिल्मस् इंटरनेशनल – द्वारा बनाई गई।

आशीर्वचन – पं. मनोहर लाल शर्मा, आर एन मंडलोई, मोहन लाल चौहान

कलाकार – अरूण गोविल, अनिता चक्रवर्ती, सुधीर दलवी, दिलीपराज, महेन्द्र शर्मा, आशा सिंह, सोमेश अगवाल, आशा पटेल

मूल कथा आधार ग्रंथ – अग्रसेन – अग्रोहा – अग्रवाल, डा. स्वराज मणि अग्रवाल

गायक – महेन्द्र कपूर, अनुपमा देशपांडे, दिलराज कौर, डा. अनिरूद्ध सिंह, प्रकाश चौहान

संवाद – कुंदन किशोर

पटकथा – के. प्रमोद

ध्वनि – सफदर

संकलन – संजीव कुमार, ललित शर्मा

कला निर्देशन – हीरा भाई पटेल

छायांकन – जयवंत राउत, उन्मेश कब्रे

पार्श्व संगीत – महेश नाईक

गीतकार – योगेश, सतीश तिवारी, रामवती, श्याम लाल अग्रवाल

संगीत – सी. अर्जुन, पी. मोहन

सह निर्माता – प्रकाश चौहान, रंजीत बख्शी

निर्माता – महेश शर्मा

निर्देशन – के. प्रमोद

विशेष आभार – बनारसी दास गुप्ता

इसके अलावा

– श्री ओमप्रकाश अग्रवाल द्वारा महाराजा अग्रसेन पर एक डाक्यूमेंट्री सन् 1991 बनाई गई यह जी टी वी व दूरदर्शन पर प्रसारित भी हुई है।

– एम डी दानिश खान ने भी महाराजा अग्रसेन के जीवन पर आधारित वृत्त चित्र एक ईंट एक रूपया बनाया है।

– महाराजा अग्रसेन दर्शन समिति द्वारा महाराजा अग्रसेन की गौरव गाथा पर एक वृत्त चित्र बनाया है।।

भ्रांति निवारण हेतु महत्वपूर्ण जानकारी - टोडरमल

टोडरमल का अर्थ होता है खजाने अथवा टकसाल की देखभाल करने वाला खजांची। राजा लोग खजांची रखते थे तथा उनको टोडरमल कहते थे। ये वीर होते थे तथा युद्धों में भी भाग लिया करते थे। बादशाह इन्हें अनेक उपाधियां देता था जिसमें राजा की उपाधि भी होती थी। इतिहास में कई टोडरमल हुए हैं और इनका उल्लेख कुछ जातियों में मिलता है। जैसे–

टोडरमल जो अकबर के नौ रत्नों में से एक थे, अग्रवाल नहीं थे। हरिशचंद्र जी की पुस्तक में इन्हें खत्री बताया है। शिवपुर द्रौपदी कुंड के लेख में छपा था कि टोडरमल खत्री थे। यह लेख हरिशचंद्रकला – खंगविलास प्रेस बांकीपुर में छपा है।

श्री काशी अग्रवाल शतवार्षिकी-1995 के अनुसार -

'' अकबर के मंत्री टोडरमल अग्रवाल प्रमाणित नहीं हो सके। तथापि एक जैन ग्रंथ में एक साहु टोडर का वर्णन वंशानुक्रमपूर्वक दिया है। यह टोडर अग्रवाल थे तथा अकबर के समकालीन थे। कवि ने इन्हें भी नाना टकसारदक्षक बताया है। अर्थात् वह टकसाल संबंधी कार्यों में प्रवीण थे। यह अलीगढ़ के आसपास (कोलभटानिया) के निवासी थे और इनका गौत्र गर्ग था।

रायभरत कुमार (ऐरन–गौत्र) ने दिल्ली के अग्रवाल नामक पुस्तक(पेज487) में बताया कि इनके पूर्वज अकबर के समय राजा टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे, अकबर ने आपके खानदान को दक्षिण को छोड़कर भारत के करीब–करीब हर प्रदेश में जमींदारी माफी इलाके दिए और रायसाहब की उपाधि दी।

राजा टोडरमल पोरवाल - पोरवाल समाज के महापुरुष (सन् 1601 से 1666 ई.) -

जन्म 18 मार्च 1601, बूँदी के एक पोरवाल वैश्य परिवार में। प्रतिभाशाली पुत्र को पिता ने बूँदी राज्य की सेवा में लगा दिया । उस समय मुगल सम्राट जहाँगीर शासन कर रहा था। टोडरमल की योग्यता और प्रतिभा को देखकर मुगल शासन में उन्हें पटवारी के पद पर नियुक्त कर दिया। सम्राट जहाँगीर की मृत्यु के बाद उसका पुत्र शाहजहाँ मुगल साम्राज्य का स्वामी बना। 1639 ई. में शाहजहाँ टोडरमल के श्रेष्ठ गुणों और उसकी स्वामी भक्ति से प्रभावित हुआ। राय टोडरमल बादशाह शाहजहाँ का योग्य अधिकारी तथा अतिविश्वस्त मनसबदार बन चुका था । हाड़ौती (कोटा–बूँदी क्षेत्र) तथा मालवा क्षेत्र में जहाँ भी पोरवाल रहते हैं, वहाँ टोडरमल की कीर्ति के गीत गाये जाते हैं।

राव भोजराज जी के यशस्वी पुत्र टोडरमल - ने उदयपुरवाटी की बागडोर संभाली। टोडरमल भोजराज जादव की ठकुरानी के पुत्र थे। वि.स. 1684 के करीब अपने पिता के जीवनकाल में ही वे उदयपुर में रहने लगे थे। वि. स.1680 से पूर्व वे महाराजा जय सिंह आमेर की सेवा में जा चुके थे। बादशाह जहाँगीर के समय उनका पुत्र खुर्रम बागी हो गया था। 29 मार्च 1623 को बिलोचपुर में बादशाही सेना से उसकी भिडंत हुई। टोडरमल जी ने खुर्रम का मुकाबला किया,और आमेर से भगा दिया।

महात्मा गांधी (मोढ़ से गांधी तक)

मूलरूप से गांधी कुल मोढ़ वणिक जाति का है। उत्तर गुजरात में मेहसाणा से 12 किमी दूर मोढेरा गांव है। इस गांव से ही अलग मोढ़ गौत्र (अल्ल) बना होगा। हेमचंद्र सूरी (विख्यात जैन आचार्य) मोढ़ वणिक पुत्र थे। 350 वर्ष पूर्व मोढ़ वैश्य घोघा छोड़कर पोरबंदर और

जूनागढ़ के आस पास बस गए। इन्हीं में गांधी परिवार भी था। गांधी परिवार के वयोवृद्ध व्यक्ति जूनागढ़ के कुतियाणा (पोरबंदर के पास है) में ठेकेदार बनाए गए व वहीं पर बस गए। गुजराती में गांधी का अर्थ होता है ''परचून का दुकानदार'', आज भी गुजरात में मिर्च मसाले और देशी जड़ी बूटियों की दुकान को गांधी की दुकान कहा जाता है। गांधी परिवार के आदि पुरूष लालजी थे। राज्य की खटपट से रूठकर आपने परचून की दुकान चलाई। तब से लालजी गांधी उपनाम से पहचाने लगे जो आज तक चला आ रहा है। (सुमित्रा गांधी – महात्मा गांधी की पौत्री द्वारा लिखित पुस्तक – महात्मा गांधी मेरे पितामह, से साभार लिया यह लेख युवा अग्रवाल 16.9.2010 में विस्तार से छपा है।)

भामाशाह - पिताजी - भारमल कावड़या जी । इस प्रकार भामाशाह कावड़या वैश्य (ओसवाल–जैन) हैं न कि अग्रवाल। भामाशाह के पिताजी को महाराणा उदयसिंह अलवर से ससम्मान बुलाकर मेवाड़ ले गए। ये अलवर के रावण देवरा क्षेत्र जिसे अब प्रताप गंज कहते हैं, रहने वाले थे यहां आज भी भामाशाह के महलों के खंडहर हैं। इनका मेवाड़ में बसने का समय 1553 ईस्वी है। उदयपुर में भामाशाह के वंशजों को पंच–पंचायत और अन्यव विशेष उत्सवों पर सर्वप्रथम गौरव दिया जाता है।
(आज हर दानवीर को भामाशाह कहा जाता है।)

S.BEE LIFE SCIENCES

'गौरवशाली अग्रवाल समाज - ऐतिहासिक परिदृश्य'
पुस्तक के प्रकाशन पर
हार्दिक बधाई
व
शुभकामनाएं।

S.BEE LIFE SCIENCES
PANCHKULA

Rajesh Bansal
94141-96910

Rakesh Bansal
94133-10884

New
Asha
Tent House

Theme Parties	Catering Services
Revolving Stage-Palki	Balloon Decoration
Sound & Light	Lotus Concept
Cartoon & Cutouts	Foreign Artist

LIMOUSINE CAR FOR BRIDE & GROOM

K-215, Gali No. 9, Near Devi Road, Kamla Nehru Nagar
Jodhpur, Ph. : 0291-2750223, Email : hmnshgupta09@gmail.com

व्यक्तिगत परिचय

अशोक कुमार गुप्ता पुत्र स्व. श्री राम कुमार गुप्ता

जन्मतिथि : 08 जनवरी 1955

व्यवसाय : सेवा निवृत्त, रेलवे, जोधपुर (20 वर्ष तक अध्यापक के रूप में)

शैक्षणिक योग्यता : एम.कॉम., एम. ए. (हिंदी)

प्रशैक्षणिक योग्यता : एस.टी.सी., बी.एड., आई.जी.डी. (पेंटिंग), कंप्यूटर प्रशिक्षण कोर्स, (मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा), अनुवाद प्रशिक्षण कोर्स (गृहमंत्रालय द्वारा), ट्रेकिंग कोर्स (गुजरात राज्य पर्वतारोहण संस्थान, माउण्ट आबू), स्काउट मास्टर प्रशिक्षण (शिमला से), प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण (रेलवे), एन.सी.सी. (एयर विंग – 3 साल, आर्मी – 1 साल) विद्यालय व विश्वविद्यालय में।

सामाजिक दायित्व :

वर्तमान :

वरिष्ठ उपाध्यक्ष - पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन व जोधपुर जिला अग्रवाल सम्मेलन

संस्थापक एवं अध्यक्ष - अग्रवाल समाज, प्रताप नगर, जोधपुर

संस्थापक सदस्य - पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन

प्रधान संपादक - अग्रसेन मैरिज ब्यूरो, जोधपुर

पूर्व :

1. प्रचार मंत्री (दो बार), कार्यालय मंत्री, तथा प्रधान संपादक , अग्रसेन जन चेतना – पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन
2. जिला कोषाध्यक्ष तथा जिला मंत्री – जोधपुर जिला अग्रवाल सम्मेलन
3. सचिव, अग्रवाल विकास परिषद, जोधपुर
4. कार्यकारिणी सदस्य, अग्रसेन प्याऊ समिति, जोधपुर

सामाजिक कार्य

सन् 1985 से सामाजिक कार्यों में निस्वार्थ भावना, लगन व निष्ठा से कार्यरत। 1992–1997 में जोधपुर संभाग के कई गांवों, कस्बों तथा शहरों में जाकर साहित्य व अग्रसेन जी के चित्रों का प्रचार–प्रसार

कार्य व साहित्य की स्टालें लगाईं। फलस्वरूप संपूर्ण क्षेत्र में संगठनात्मक दृष्टि से जागृति आई, अग्रोहा के प्रति अग्रबंधुओं में जागरूकता आई और साहित्य का प्रचार प्रसार संभव हुआ।

सन् 1988 में अग्रवाल समाज प्रताप नगर की स्थापना की। महाराजा अग्रसेन मैरिज ब्यूरो की स्थापना में सहयोग कर लगातार परिचय सम्मेलन करवाने में अहम भूमिका निभाई।1991 से 2009 तक जयंती तथा अन्य आयोजनों पर अनेक पत्र–पत्रिकाओं में महाराजा अग्रसेन–अग्रोहा–अग्रवाल संबंधी लेख लिखे।

अग्रसेन ज्ञान प्रश्नोत्तरी : इस पुस्तक के तीन संस्करण लिखे व प्रकाशित कर जोधपुर की स्कूलों में अग्रसेन ज्ञान प्रश्नोत्तरी का तीन साल तक आयोजन किया जिससे अन्य समाजों के बच्चों को भी अग्रसेन जी के बारे में जानकारी मिली।

स्वयं के प्रयासों से अग्र साहित्यकार श्री त्रिलोक गोयल द्वारा लिखी पुस्तक कथाएं जो हमारे आंगन में उगीं का प्रकाशन तथा उनके द्वारा लिखित गीतों की कैसिट बनवाकर वितरित की।

श्रेष्ठ सेवाओं के लिए सम्मान -

1. जोधपुर से पहला सामाजिक कार्यकर्ता जिसे अग्रोहा में अग्रोहा विकास ट्रस्ट द्वारा 1993 में साहित्य प्रचार–प्रसार के लिए सम्मानित किया गया।
2. वर्ष 1994 में सामाजिक कार्य हेतु अग्रवाल पंचायत, जोधपुर द्वारा सम्मान।
3. वर्ष 1995 व 2006 में अग्रवाल समाज, प्रताप नगर, जोधपुर द्वारा सम्मान।
4. वर्ष 1999, 2000 व 2006 में महाराजा अग्रसेन मैरिज ब्यूरो, जोधपुर द्वारा सम्मान।
5. वर्ष 1995 में अग्रसेन प्याऊ समिति, जोधपुर द्वारा सम्मानित।
6. श्रेष्ठ अध्यापक के रूप में प्रबंध समिति आदर्श विद्या मंदिर,जोधपुर, सरपंच सालावास गांव तथा मंडल रेल प्रबंधक द्वारा सम्मान।
7. अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा वर्ष 2006 में आयोजित 20वें राष्ट्रीय सम्मेलन, रायपुर में अग्र–भूषण की उपाधि से सम्मानित।

8. वर्ष 2006 में अग्रसेन रिलीफ सोसायटी,जोधपुर द्वारा सम्मान।
9. समाज कार्य में उत्कर्ष कार्य व सराहनीय योगदान के लिए अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन द्वारा पंचम प्रांतीय सम्मेलन में सम्मान।
10. वर्ष 2008 में पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन द्वारा अग्रसेन जनचेतना, त्रैमासिक सामाजिक पत्र के सफल संपादन के लिए सम्मान।
11. वर्ष 2000 में वैश्य समाज विकास मंच, राजस्थान–जोधपुर द्वारा सम्मान।
12. वर्ष 2011 में पश्चिमी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन द्वारा 17 वर्षों की उल्लेखनीय समाज सेवा व संस्थापक सदस्य के रूप में सम्मान।
13. सराहनीय सेवाओं व राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए महाप्रबंधक, उत्तर रेलवे, मुख्य कार्मिक अधिकारी, मंडल रेल प्रबंधक, मुख्य कारखाना प्रबंधक द्वारा समय–समय पर सम्मानित।

अन्य कार्य व उपलब्धियां

1. रेलवे द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के संपादन में सहयोग व लेख प्रकाशित ।
2. अग्रसेन साहित्य , पत्र–पत्रिकाओं का दुर्लभ संग्रह।

आगामी प्रकाशन : अग्रवाल समाज की लगभग 150 स्वतंत्रता सैनानी विभूतियों की अमर गाथा

निवास : 2 – ब – 15, प्रताप नगर, जोधपुर (राजस्थान) 342 003
मोबाइल : 094606 49764

डाक टिकटों में अग्रवाल समाज